हिन्दी दैनिक

तीसरा विकल्प न्यूज़

(लखनऊ से प्रकाशित)

वर्षः- 02, अंकः-239, पृष्ठः-08, मूल्यः- 2 रु.

लखनऊ, बुधवार 12 फरवरी 2025

बुजुर्ग किसान की डंडे से पीट कर हत्या करने वाला...02

नौकरी का झांसा देकर युवती से किया दुष्कर्म, आरोपी...06

ट्रम्प की टैरिफ बढ़ोतरी से सेंसेक्स 1०18 अंक गिरा

IRCTC का मुनाफा 14 % बढ़कर 341 करोड़

ऑल-टाइम हाई बनाकर गिरा सोना

संक्षिप्त समाचार

ईवीएम से डेटा डिलीट न करें

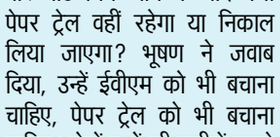

नयी दिल्ली, एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग से उस याचिका पर 15 दिनों के भीतर अपना जवाब दाखिल करने को कहा है, जिसमें पोल पैनल को ईवीएम की जली हुई मेमोरी की जांच और सत्यापन को उनकी मानक संचालन प्रक्रियाओं में शामिल करने का निर्देश देने की मांग की गई है। कृपया डेटा मिटाएं नहीं और डेटा पुनः लोड करें। सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग से कहा कि किसी को जांच करने दीजिए। आवेदन एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) द्वारा दायर किया गया था। मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता की पीठ ने बुधवार को मामले की सुनवाई की। सुनवाई के दौरान, एडीआर की ओर से पेश वकील प्रशांत भूषण ने कहा कि हम मांग कर रहे हैं कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले के अनुसार ईसीआई को जो प्रक्रिया अपनाने की जरूरत है वह उनके मानक ऑपरेटिंग प्रोटोकॉल के अनुरूप हो। हम जो चाहते हैं वह यह है कि किसी को ईवीएम के सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर की जांच करनी चाहिए ताकि यह देखा जा सके कि सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर में हेरफेर का कोई तत्व है या नहीं। मुख्य न्यायाधीश खन्ना ने पूछा कि एक बार वोट गिने जाने के बाद क्या पेपर ट्रेल वहीं रहेगा या निकाल लिया जाएगा? भूषण ने जवाब दिया, उन्हें ईवीएम को भी बचाना चाहिए, पेपर ट्रेल को भी बचाना चाहिए। दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद, अदालत ने अपने पहले के आदेश को स्पष्ट करते हुए कहा कि हम नहीं चाहते थे कि गिनती तक कोई गड़बड़ी हो (पहले के आदेश के माध्यम से) साथ ही, हम चाहते थे (देखें) कि क्या किसी को कोई संदेह है।

जीवन भर वीवीआईपी ट्रीटमेंट लेने वाले महाकुंभ को लेकर कर रहे हैं दुष्प्रचार : मुख्यमंत्री योगी

तीसरा विकल्प न्यूज़ संवाददाता
लखनऊ

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विपक्ष की ओर से महाकुंभ को लेकर लगाए जा रहे आरोपों पर मंगलवार को कहा कि कुछ लोग इसे 'वीआईपीश् स्नान से जोड़कर भ्रम फैलाने का प्रयास कर रहे हैं, लेकिन सच यह है कि महाकुंभ समरसता और आस्था का संगम है, जहां जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र के भेदभाव को खत्म करके सभी श्रद्धालु एक साथ जुड़ते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस प्रकार की नकारात्मकता फैलाने वाले वही लोग हैं जिन्होंने जीवन भर अति विशिष्ट व्यक्तियों को मिलने वाली सुविधाएं भोगीं (वीवीआईपी ट्रीटमेंट) हैं और अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए एक रास्ता खोलने का प्रयास किया था। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विपक्ष द्वारा महाकुंभ को लेकर किए जा रहे दुष्प्रचार पर भी जवाब दिया। उन्होंने कहा'' प्रयागराज में 29 दिन में

45 करोड़ श्रद्धालुओं ने संगम में डुबकी लगाई है, जो ऐतिहासिक है। उन्होंने कहा कि भारत और चीन के बाद दुनिया के किसी देश की आबादी 45 करोड़ नहीं है, एक अस्थाई शहर में 45 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं का आकर डुबकी लगाना बड़ी बात है। उन्होंने कहा, ''कुछ लोग इसे 'वीआईपी स्नान से जोड़कर भ्रम फैलाने का प्रयास कर रहे हैं, लेकिन सच यह है कि महाकुंभ समरसता और आस्था का संगम है, जहां जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र के भेदभाव को खत्म करके सभी श्रद्धालु एक साथ जुड़ते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा, ''ये नकारात्मकता फैलाने वाले कौन लोग हैं, ये वही लोग हैं जिन्होंने जीवन भर अति विशिष्ट व्यक्तियों को मिलने वाली सुविधाएं भोगीं और अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए एक रास्ता खोलने का प्रयास किया था। ये वही लोग हैं जो नकारात्मकता पैदा करके भारत और सनातन के विरोध में सदैव खड़े रहते हैं और दुष्प्रचार करने में मशगूल रहते हैं। आदित्यनाथ ने कहा कि पिछली सरकारों ने गरीबी हटाने के बड़े-बड़े नारे दिए, लेकिन गरीबों की संख्या लगातार बढ़ती रही, वहीं, मोदी सरकार ने बीते 11 वर्षों में गरीबों को सशक्त बनाने का कार्य किया। इस दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्ज्वला योजना, शौचालय निर्माण, जल जीवन मिशन और आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं का जिक्र किया। योगी ने विकास कार्यों में कमियां निकालने वालों पर भी तंज कसते हुए कहा कि जब भी कोई नई योजना शुरू होती है, तो कुछ लोगों को केवल कमियां निकालने की आदत होती है।

पं. दीनदयाल की पुण्यतिथि पर योगी ने दी श्रद्धांजलि

लखनऊ। पंडित दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि के अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके विचारों की प्रासंगिकता को रेखांकित किया। इस मौके पर सीएम योगी ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की अंत्योदय की सोच आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में साकार हो रही है।

उन्होंने विपक्षी दलों पर निशाना साधते हुए कहा कि जब हम चार करोड़ लोगों को आवास देते हैं तो वे कहते हैं कि अभी बहुत लोग बाकी हैं तो उनको बताना चाहता हूं कि तीन करोड़ आवास और स्वीकृत किए जा चुके हैं। जो लोग पहले केवल वीआईपी सुविधाएं भोगते थे, वही आज आम जनता को मिल रही सुविधाओं पर सवाल खड़ा कर रहे हैं।

फ्रांस में मोदी बोले, एआई मानवता के कोड लिख रहा

इतिहास गवाह है कि तकनीक नौकरियां नहीं लेती, एआई से नई नौकरियां पैदा होंगी

पेरिस, एजेंसी। पीएम मोदी के फ्रांस दौरे का मंगलवार को दूसरा दिन है। वे आज पेरिस में एआई समिट में शामिल हुए। उन्होंने कहा, एआई इस सदी के लिए मानवता के कोड लिख रहा है। इसमें दुनिया बदलने की ताकत है। यह समाज-सुरक्षा के लिए जरूरी है। यह दिखाता है कि एआई का पॉजिटिव पोटेंशियल असाधारण है। मोदी ने कहा कि भारत ने सफलतापूर्वक कम लागत में डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार किया है। डेटा एम्पावरमेंट के जरिए डेटा की ताकत को अनलॉक किया है। ये विजन भारत के राष्ट्रीय एआई मिशन की नींव है।

एआई लाखों लोगों की जिंदगियां बदल रहा है। वक्त के साथ-साथ रोजगार का स्वरूप भी बदल रहा है। एआई से रोजगार के संकट पर ध्यान देना होगा। इतिहास गवाह है कि तकनीक नौकरियां नहीं लेती। एआई से नई नौकरियों के अवसर पैदा होंगे।

भारत अपने एक्सपीरियंस और एक्सपर्टीज को साझा करने के लिए तैयार है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि भविष्य अच्छा और सभी के लिए हो। पीएम बोले- समाज को नया आकार दे रहा एआई मोदी ने समिट की शुरुआत एआई को लेकर एक उदाहरण देकर की। उन्होंने कहा- मैं एक सरल उदाहरण देना चाहता हूं। यदि आप अपनी मेडिकल रिपोर्ट किसी एआई ऐप पर अपलोड करते हैं, तो यह सरल भाषा में, आपके स्वास्थ्य के लिए इसका क्या मतलब है, समझा जा सकता है। उन्होंने कहा, यदि आप उसी ऐप से किसी व्यक्ति का बाएं हाथ से लिखते हुए चित्र बनाने को कहते हैं, तो ऐप सबसे अधिक संभावना किसी व्यक्ति को उसके दाएं हाथ से लिखते हुए दिखाएगा। पीएम ने कहा कि एआई पहले से ही हमारी अर्थव्यवस्था, सुरक्षा और यहां तक कि हमारे समाज को नया आकार दे रहा है। एआई इस सदी में मानवता के लिए कोड लिख रहा है। मोदी सोमवार रात फ्रांस की राजधानी पेरिस पहुंचे थे, जहां हवाईअड्डे पर भारतीय समुदाय के लोगों ने उनका स्वागत किया। इसके बाद उनका एलिसी पैलेस में रेड कार्पेट वेलकम हुआ। फ्रांसीसी राष्ट्रपति मैक्रों ने मोदी के स्वागत में डिनर का भी आयोजन किया। आज पेरिस समिट में शामिल होने के बाद वे ष्इंडिया फोरम बैठक में शामिल होंगे। इसके बाद वे मासे के लिए रवाना होंगे, यहां पर भारत का वाणिज्य दूतावास खोला जाएगा। आज रात वे मैक्रों के साथ द्विपक्षीय बातचीत करेंगे। पश्चिमी देशों के उलट जाकर फ्रांस ने भारत को न्यूक्लियर प्लांट सेटअप करने में मदद की।

फ्रांस ने इंटरनेशनल फोरम पर हमेशा भारत को सपोर्ट किया

सितंबर 2023 में हुई जी20 समिट के दौरान मोदी ने अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन को 2024 के गणतंत्र दिवस समारोह में शामिल होने का न्योता दिया था, लेकिन दिसंबर में उन्होंने भारत आने से इनकार कर दिया। ऐसे वक्त में भारत ने फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों को गणतंत्र दिवस में शामिल होने का न्योता भेजा। उन्होंने इसे तुरंत स्वीकार भी कर लिया।

संविधान की मूल प्रति में वर्णित 22 कृतियों वाली प्रति ही असली संविधान: धनखड़

नयी दिल्ली, एजेंसी। राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने मंगलवार को सरकार को निर्देश दिया कि 22 कृतियों वाला संविधान ही असली संविधान है और ऐसी प्रतियों की बिक्री या प्रचार प्रसार नहीं किया जाना चाहिए, जिनमें ये कृतियां नहीं हो। श्री धनखड़ ने सदन में शून्यकाल के दौरान भारतीय जनता पार्टी के राधा मोहन अग्रवाल की ओर से इस मुद्दे को उठाये जाने पर कांग्रेस सदस्यों के हंगामे के बीच कहा कि संसद द्वारा संशोधन के बगैर संविधान में किसी भी तरह का बदलाव नहीं किया जा सकता है और इस तरह के बदलाव करने वालों के विरूद्ध कठोर कार्रवाई की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि ये कृतियां पांच हजार वर्ष की हमारी गौरवशाली संस्कृति के प्रतीक हैं। बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर सहित सभी संविधान निर्माताओं ने संविधान पर हस्ताक्षर कर इन कृतियों को स्वीकृत किया था।

एलओसी के पास आईईडी ब्लास्ट, 2 जवान शहीद, एक घायल

सेना की गश्त के दौरान धमाका, इलाके की घेराबंदी, सर्च ऑपरेशन जारी

जम्मू, एजेंसी। जम्मू जिले के अखनूर सेक्टर में एलओसी के पास लालोली इलाके में आईईडी ब्लास्ट हुआ। इसमें सेना के दो सैनिक शहीद हो गए। एक अन्य घायल जवान की हालत स्थिर बताई जा रही है। उसकी जान को कोई खतरा नहीं है। यह धमाका मंगलवार को करीब 3:5० बजे भट्टल इलाके में हुआ, जब सेना के जवान गश्त पर थे। सेना के प्रवक्ता ने बताया- फौजी गश्त कर रहे थे, तभी ब्लास्ट हुआ। इलाके को घेरकर सर्च ऑपरेशन शुरू कर दिया गया है। व्हाइट नाइट कोर ने शहीद जवानों को श्रद्धांजलि दी है। सेना से जुड़े सूत्रों ने दावा किया कि शहीद हुए फौजियों के नाम कैप्टन केएस बख्शी और मुकेश हैं। हालांकि इसकी पुष्टि नहीं हुई है। इससे पहले 14 जनवरी को जम्मू-कश्मीर के राजौरी में एलओसी के पास लैंडमाइन ब्लास्ट में गोरखा राइफल्स के 6 जवान घायल हो गए। ब्लास्ट भवानी

सेक्टर के मकरी इलाके में हुआ था। 9 दिसंबर 2०24 को जम्मू के पुंछ में विस्फोट हुआ था, जिसमें एक जवान शहीद हो गया था। सेना ने कहा था कि हवलदार वी. सुब्बैया वरिकुंटा की पुंछ के थानेदार टेकरी में गश्त के दौरान एक बारूदी सुरंग विस्फोट के बाद मौत हो गई। अक्टूबर 2०24 में भी कुपवाड़ा में एक खदान में धमाका हुआ था, जिसमें सेना के 2 जवान घायल हो गए थे। अधिकारियों ने बताया कि धमाका एलओसी पर तड़के करीब तीन बजे हुआ, जब सैनिक इलाके में गश्त कर रहे थे। जम्मू-कश्मीर के बांदीपोरा जिले में 4 जनवरी की दोपहर सेना का ट्रक खाई में गिर गया। हादसे में 4 जवानों की मौत हो गई। 2 जवान गंभीर रूप से घायल हैं। उन्हें नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। ट्रक में 6 जवान ही सवार थे। अधिकारियों ने बताया कि हादसा जिले के एसके पायीन इलाके में हुआ। यहां ट्रक सड़क से फिसलकर खाई में जा गिरा। 24 दिसंबर को पुंछ जिले में आर्मी वैन 35० फीट गहरी खाई में गिरी थी। वैन में 18 जवान सवार थे। इनमें से 5 की मौत हो गई थी। हादसे में शामिल सभी जवान 11 मराठा रेजिमेंट के थे। सेना ने बताया कि वाहन के ड्राइवर के संतुलन खोने की वजह से वैन खाई में गिर गई। लद्दाख में 19 अगस्त को सेना की एक गाड़ी 6० फीट गहरी खाई में गिर गई थी, जिसमें 9 जवानों की मौत हो गई थी। सेना के काफिले में पांच गाड़ियां शामिल थीं। जिसमें 34 जवान सवार थे। इस हादसे में एक जवान घायल भी हुआ। लेह के स्स्क पीडी नित्या ने बताया कि वाहन के ड्राइवर ने गाड़ी पर कंट्रोल खो दिया, जिससे ट्रक खाई में जा गिरा। 29 अप्रैल 2०23 को जम्मू-कश्मीर के राजौरी में सेना की एम्बुलेंस सड़क से फिसलकर 2०० फीट गहरी खाई में गिर गई थी। इस हादसे में दो जवानों की मौत हो गई थी।

बड़े उद्योगपतियों के लक्ष्य को साध कर बना है बजट

नयी दिल्ली, एजेंसी। लोकसभा में विपक्षी सदस्यों ने बजट को बड़े उद्योगपतियों के हित साधने के लक्ष्य वाला बजट करार देते हुए कहा है कि इसमें आम जनता की समस्याओं के निदान के लिए कोई कदम नहीं उठाया गया है। लोकसभा में समाजवादी पार्टी के अखिलेश यादव ने बजट पर तीसरे दिन की चर्चा की शुरुआत करते हुए कहा कि बजट 2०25-26 को लक्ष्य बनाकर तैयार किया गया और कहा कि यह बजट बड़े लोगों, बड़े उद्योगपतियों के हित में है। इसमें विकास का लक्ष्य नहीं है। सरकार ने 2०47 तक देश को विकसित करने का लक्ष्य रखा है, लेकिन इस बजट में इस लक्ष्य को हासिल करने के कोई प्रयास नहीं हुए हैं। सफल बजट कुछ ही लोगों को फायदा देने के लिए नहीं बनाया जाना चाहिए बल्कि इसमें सबका हित निहित होना चाहिए। श्री यादव ने कहा कि बजट में किसान की आय दोगुनी करने का कोई रोड मैप नहीं रखा गया है। किसान को न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की गारंटी नहीं मिल रही है, जबकि इस लड़ाई को लड़ते हुए कई किसान अपनी जान गंवा चुके हैं। स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों को लागू करने को लेकर सरकार सिर्फ दावे करती हे लेकिन इसे क्रियान्वित नहीं करती है। फल और सब्जी के लिए इस बजट में कुछ नहीं है। कृषि क्षेत्र में शोध के लिए व्यवस्था नहीं की गई है। फसल बीमा योजना को लेकर सरकार ने खूब प्रचार किया, लेकिन जब दावों को पूरा करने की बात आती है तो किसान को कुछ नहीं दिया जाता है। सरकार बड़े उद्योगपतियों का कर्ज माफ करती है, लेकिन किसानों का कर्ज माफ नहीं किया जाता है। उनका कहना था कि किसानों के उपयोग की वस्तुओं पर जीएसटी नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि महाकुंभ में लोगों को दिक्कत हो रही है वहां हर आदमी जाम में फंसा है जबकि पूरा प्रशासन जाम खोलने में लगा हुआ है। सरकार चांद पर पहुंचने की बात करती है, लेकिन चांद पर पहुंचने का क्या फायदा जब जमीन की बात नहीं दिखती हो। डिजिटल कुंभ की बात की जा रही है, लेकिन वहां भगदड़ में मारे गये लोगों की संख्या अब तक सामने नहीं आई है।

बीमा धारकों की सुरक्षा के लिए सरकार प्रतिबद्ध

नयी दिल्ली, एजेंसी। सरकार ने मंगलवार को राज्यसभा में कहा कि वह बीमा धारकों की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है और इसके लिए कई स्तर पर नियामक और नियंत्रक तैनात किये गये हैं। वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने सदन में प्रश्नकाल के दौरान कहा कि सरकार ने बीमाधारकों की सुरक्षा के लिए नियम - प्रावधान तय किये, जो इरडा की निगरानी में लागू किये जाते हैं। उन्होंने कहा कि अगर कोई बीमा कंपनी किन्ही कारणों से संकट में आती है तो बीमाधारकों को अन्य बीमा कंपनी के साथ जोड़ दिया जाता है। इसलिए देश में किसी भी बीमाधारक को कंपनी बंद होने के कारण संकट का सामना नहीं करना पड़ा है। उन्होंने कहा कि बीमाधारकों की शिकायतों के समाधान के लिए इरडा और बीमा कंपनियों में तंत्र बनाया गया है। किसी की भुगतान के बारे में इरडा का फैसला आने के बाद बीमा कंपनी को 3० दिन के भीतर भुगतान करना होगा।

भारत के साथ मिलकर उन्नत रक्षा प्रणालियों का विकास करें वैश्विक समुदाय: राजनाथ

बेंगलुरु, एजेंसी। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बदलते वैश्विक सुरक्षा परिदृश्य में भागीदारी और सहयोग के महत्व पर बल देते हुए वैश्विक समुदाय से उन्नत प्रणालियों के सह-विकास और सह-उत्पादन में भारत के साथ जुड़ने का आह्वान किया है। श्री सिंह मंगलवार को यहां 15वें एयरो इंडिया के हिस्से के रूप में आयोजित रक्षा मंत्रियों के सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। इस कार्यक्रम में 81 देशों के 162 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिनमें 15 रक्षा मंत्री, 11 उप रक्षा मंत्री, 15 स्थायी सचिव और 17 सेवा प्रमुख शामिल थे। रक्षा मंत्री ने कहा,संघर्षों की बढ़ती संख्या, नई शक्ति के खेल, नए हथियार और सरकार से इतर तत्वों की बढ़ती भूमिका और विघटनकारी प्रौद्योगिकियों के उद्भव ने विश्व व्यवस्था को और अधिक नाजुक बना दिया है। रक्षा मंत्री ने कहा कि ये साइबरस्पेस और बाह्य अंतरिक्ष संप्रभुता की स्थापित परिभाषा को चुनौती दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि एआई, क्वांटम टेक्नोलॉजी, हाइपरसोनिक और निर्देशित ऊर्जा जैसी विध्वंसकारी प्रौद्योगिकियां युद्ध के चरित्र को बदल रही हैं और नई कमजोरियां पैदा कर रही हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि इन परिवर्तनों का भविष्य के युद्ध पर गहरा प्रभाव पड़ेगा, जिससे चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक क्षमताओं का पुनर्मूल्यांकन करने पर मजबूर होना पड़ेगा। रक्षा मंत्री ने बताया कि कमजोर स्थिति से अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था और शांति सुनिश्चित नहीं की जा सकती है और प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत सरकार रक्षा क्षमताओं को बदलने में कोई कसर नहीं छोड़ रही है। उन्होंने कहा,हमने एक अनुकूल नीति व्यवस्था लागू की है जो आधुनिक भूमि, समुद्री और वायु प्रणालियों की एक पूरी श्रृंखला के निवेश और उत्पादन को प्रोत्साहित करती है।

जीएसटी में बदलाव के लिए अपने राज्य से बात करें सांसद: निर्मला सीतारमण

नयी दिल्ली, एजेंसी। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगलवार को राज्यसभा में कहा कि वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) में बदलाव के लिए सांसदों को अपने राज्य से बात करनी चाहिए। श्रीमती सीतारमण ने सदन में एक पूरक प्रश्न के उत्तर में बताया कि जीएसटी के संबंध में सभी निर्णय जीएसटी परिषद लेती है। इसमें केंद्र तथा सभी राज्य सरकारों के प्रतिनिधि शामिल होते हैं। सभी फैसले सर्वसम्मति से लिए जाते हैं। उन्होंने कहा कि यदि किसी राज्य को कोई फैसला लेना है, तो अपने प्रतिनिधि के माध्यम से जीएसटी परिषद में आना चाहिए। कोई भी मुद्दा उठाने का किसी भी राज्य को पूरा अधिकार है। जीएसटी परिषद में सभी राज्यों के वित्त मंत्री शामिल होते हैं।

भीड़ | **मुकेश अंबानी ने परिवार के साथ महाकुंभ में डुबकी लगाई**

1.23 करोड़ लोगों ने संगम में स्नान किया

प्रयागराज, संवाददाता। रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी अपने बेटे अनंत, बहू राधिका मर्चेंट और मां कोकिलाबेन अंबानी के साथ महाकुंभ पहुंचे। अंबानी फैमिली ने संगम में डुबकी लगाई। महाकुंभ में विदेशी श्रद्धालु भी भक्ति में लीन हैं। सेक्टर-17 स्थित शक्ति धाम शिविर में 68 विदेशी श्रद्धालुओं ने विधि-विधान के साथ सनातन धर्म को अपना लिया। संगम में आज भी जबरदस्त भीड़ है। हर जगह लोग ही लोग नजर आ रहे हैं। शहर में जाम जैसे हालात हैं। भीड़ को कंट्रोल करने के लिए कमिश्नर प्रयागराज विजय विश्वास

पंत और डीआईजी अजय पाल शर्मा सड़क पर उतर गए हैं। आज महाकुंभ का 3०वां दिन है। शाम 6 बजे तक 1.23 करोड़ श्रद्धालुओं संगम में स्नान किया। 13 जनवरी से अब तक 45.85 करोड़ श्रद्धालु स्नान कर चुके हैं। वहीं, कल (12 फरवरी) माघी पूर्णिमा का स्नान है। संगम पर सुबह 8 बजे श्रद्धालुओं पर हेलिकॉप्टर से फूल बरसाए जाएंगे। माघ पूर्णिमा स्नान को लेकर प्रयागराज में नई ट्रैफिक व्यवस्था लागू की गई है। 11 फरवरी की शाम 5 बजे से 12 फरवरी तक मेले में कोई भी वाहन नहीं चलेगा। रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी अपने बेटे अनंत, बहू राधिका मर्चेंट और मां कोकिलाबेन अंबानी के साथ महाकुंभ पहुंचे। अंबानी फैमिली ने संगम में डुबकी लगाई। प्लेन से महाकुंभ का भव्य नजारा भी देखा। इससे पहले अंबानी फैमिली परमार्थ निकेतन शिविर पहुंची।

पंजाब को एक मॉडल राज्य बनायेंगे: मान

नयी दिल्ली, एजेंसी। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने कहा है कि पंजाब का चहुंओर विकास करके देश के सामने इसे एक मॉडल राज्य बनायेंगे। श्री भगवंत मान ने मंगलवार को यहां पंजाब से आए आम आदमी पार्टी (आप) के विधायकों की पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल के साथ बैठक के बाद कहा कि पंजाब को ऐसा मॉडल बनाएंगे कि पूरा देश देखेगा। हमें उम्मीद है कि हमारे जो वॉलेंटियर्स हैं, वह बिना किसी लालच के मेहनत से काम करते हैं। उन्होंने कहा कि पंजाब में हमने स्कूल और अस्पतालों का कायाकल्प किया। दिल्ली में जिन लोगों ने काम किया है, उनके अनुभव का इस्तेमाल पंजाब में करेंगे।

बुजुर्ग किसान की डंडे से पीट कर हत्या करने वाला आरोपित गिरफ्तार

तीसरा विकल्प न्यूज़ संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। बंथरा में सोमवार शाम शराब के नशे में बुजुर्ग किसान की डंडे से पीट-पीट कर हत्या करने वाले को पुलिस ने मंगलवार दोपहर इलाके से ही पकड़ लिया। वह कहीं भागने की फिराक में था। पुलिस उससे पूछताछ कर रही है। वहीं इस मामले में पुलिस ने मृतक की पत्नी कलावती की तहरीर पर आरोपी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की है। मंगलवार दोपहर बाद करीब 3 बजे मृतक किसान होरीलाल का पोस्टमार्टम होने के बाद शव गांव पहुंचा। शव पहुंचते ही वहां परिजनों में चीख पुकार मच गई। नाराज परिजनों और ग्रामीणों ने हंगामा करने की कोशिश की। उनका आरोप था कि पुलिस आरोपी को गिरफ्तार करने में लापरवाही कर रही है और करीब 22 घंटे बीतने के बाद भी अब तक आरोपी क्यों नहीं पकड़ा गया। परिजनों और ग्रामीणों को काफी नाराज देख पुलिस ने अपनी गिरफ्त में आरोपी का फोटो खींचकर परिजनों को भेजा। तब सभी शांत हुए और पुलिस की मौजूदगी में गांव के बाहर शव का अंतिम संस्कार कर दिया गया। इस दौरान गांव में काफी तादाद में बंथरा पुलिस मौजूद रही। बता दें कि बंथरा के हसन खेड़ा गांव निवासी किसान होरीलाल रावत (60) सोमवार शाम करीब 5:15 बजे जब गांव में ही अपने 2 साल के नाती मान रावत को लेकर खिला रहा था। तभी शराब के नशे में पहुंचे मोहल्ले के ही चंद्रशेखर ने उससे गाली गलौज शुरू कर दी थी। विरोध करने पर उसने बाँस के डंडे से होरीलाल के सिर पर कई वार कर मौत के घाट उतार दिया था। इसके बाद चंद्रशेखर वहां से फरार हो गया। चंद्रशेखर को गिरफ्तार करने के लिए पुलिस की चार टीमें बनाई गई थी। बंथरा थाने के कार्यवाहक प्रभारी निरीक्षक एसएसआई प्रमोद कुमार यादव के मुताबिक चंद्रशेखर मंगलवार दोपहर करीब 11:30 बजे कहीं जाने की फिराक में था। तभी गांव से करीब 5 किलोमीटर दूर नरेरा स्थित नगवा नाले के पास पकड़ लिया गया। पूछताछ में चंद्रशेखर ने बताया कि नशे में होने के कारण गाली गलौज का विरोध करने पर गुस्से में आकर उसने होरीलाल के सिर पर डंडे से वार कर दिया था। लेकिन उसे यह अंदाजा नहीं था कि होरीलाल की मौत हो जाएगी। बाद में जब पता चला कि होरी लाल की मौत हो गई है। तब वह वहां से भाग निकला और गांव के बाहर ही खेतों और बागों में पूरी रात गुजारी। मंगलवार को वह भागने की फिराक में था। फिलहाल पुलिस आरोपी को गिरफ्तार करने के साथ ही उसे हिरासत में लेकर उसे पूछताछ कर रही है। पुलिस ने उसके पास से घटना में इस्तेमाल किया गया बाँस का भारी डंडा भी बरामद कर लिया है।

लविवि के 13 शिक्षक बने क्षय रोगियों के निक्षय मित्र

तीसरा विकल्प न्यूज़ संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग में पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ द्वारा उनकी पुण्य तिथि को समर्पण दिवस के रूप मनाया। इस मौके पर प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान -2025 एवं 100- दिवसीय सघन टीबी अभियान के अंतर्गत कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय के नेतृत्व में विश्वविद्यालय के 13 शिक्षकों ने निक्षय मित्र के रूप में क्षय रोग से पीड़ित बच्चों को गोद लेकर उन्हें पोषण पोटली वितरित की। इस दौरान कुलपति ने समाज कार्य में नव निर्मित प्रोफेसर सुरेन्द्र सिंह सभागार का लोकार्पण भी किया। कार्यक्रम में जिला टीबी अधिकारी डॉ. ए के सिंघल ने कहा कि इस बीमारी के खिलाफ लड़ाई में सरकार, चिकित्सा संस्थान और समाज के हर नागरिक को मिलकर काम करना होगा। उन्होंने बताया कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय की माता की मृत्यु भी टीबी से हुई थी। विभागाध्यक्ष प्रो. राकेश द्विवेदी ने विभाग द्वारा टीबी उन्मूलन के लिए किए गए प्रयासों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान 2025 का उद्देश्य क्षय रोग को समाप्त करना है और इसमें आम नागरिकों की भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

रास्ता निर्माण रोके जाने के खिलाफ उतरे लोग

तीसरा विकल्प न्यूज़ ब्यूरो

गोरखपुर के हरसेवकपुर नंबर 2 टोला लच्छीपुर के लोगों ने नगर निगम द्वारा निर्माण कराया जा रहे सड़क और नाली को एक व्यक्ति द्वारा रोके जाने से आक्रोशित लोगों ने आज नगर आयुक्त से मुलाकात कर ज्ञापन हरसेवकपुर वार्ड के लोगों ने स्थानीय एक व्यक्ति के खिलाफ मोर्चा खोलकर नगर निगम पहुंचे आपको बता दे हरसेवाकपुर वार्ड के लोगों ने एक दबंग व्यक्ति से परेशान होकर नगर निगम पहुंचे और सड़क निर्माण कराये जाने की मांग नगर आयुक्त से किया स्थानीय लोगों का कहना है कि विगत कई वर्षों से प्रस्तावित रोड बनाने के लिए नगर निगम द्वारा टेंडर निकाला गया ठेकेदार द्वारा रोग निर्माण कराए जाने पर दबंग व्यक्ति द्वारा ठेकेदार को धमकी दी गई सड़क नहीं बनने देरहा हैं आज स्थानीय लोगों ने नगर आयुक्त से मिलकर इसकी शिकायत किया लोगों ने बताया कि व्यक्ति इतना दबंग है कि इसके खिलाफ कई गंभीर मुकदमे थाने में दर्ज हैं उक्त व्यक्ति द्वारा रास्ते की जमीन को कुट रचित तरीके से रजिस्ट्री करा ली गई है और किसी तरह का निर्माण कार्य होने नहीं देरहा हैं ज जिससे हम लोगों को आने-जाने में दिक्कतों का सामना करना पड़ा है हमारा नगर आयुक्त से निवेदन है कि उक्त दोषी व्यक्ति के ऊपर कठोर कार्रवाई करते हुए सड़क निर्माण कार्य जल्द कराया जाए जिससे स्थानीय नागरिकों को आने जाने की सुविधा प्रदान हो सके

संत रविदास जी ने सामाजिक एकता का संदेश दिया - अंकिता सिंह

तीसरा विकल्प न्यूज़ ब्यूरो

सरस्वती शिशु मन्दिर (10+2) एक्कीबाग गोरखपुर में संत रविदास जी की जयन्ती के पूर्व संध्या पर कार्यक्रम को संबोधित करती हुई मुख्य वक्ता आचार्या सुश्री अंकिता सिंह ने कहा कि संत शिरोमणि रविदास जी एक महान संत, कवि और समाज सुधारक भी थे। बचपन से ही रविदास जी को धर्म और आध्यात्मिक विषयों में रुचि थी। रविदास जी अपनी जीवनगाथा को अपने लेखों के माध्यम से व्यक्त करते थे। उन्होंने सदैव कर्म को प्रधानता दी, अपने लेखों में समाज के विभिन्न वर्गों के बीच धर्म के महत्व को बताया और लोगों को धर्म के उच्च मानकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया। संत रविदास ने अपने दोहों व पदों के माध्यम से समाज में जातिगत भेदभाव को दूर कर सामाजिक एकता पर बल दिया और मानवतावादी मूल्यों की नींव रखी। प्रधानाचार्य डॉ राजेश सिंह जी ने कहा कि प्राचीन काल में भारत के पुनरुत्थान में एवं आधुनिक भारत के निर्माण में भी संतो की बहुत बड़ी भूमिका रही है। छत्रपति शिवा जी, सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य आदि को आज इतिहास में नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है यह उनके महान गुरुओं की ही देन हैं। संत की कोई जाति नहीं होती है। संत समाज से ऊपर होते हैं। संत रविदास ने समाज में समानता, सामंजस्य स्थापित करने में सेतु की भूमिका का निर्वाह किया। कार्यक्रम का संचालन आचार्य निर्मल यादव जी ने किया। इस अवसर पर विद्यालय की प्रथम सहायक श्रीमती रुक्मिणी उपाध्याय सहित समस्त विद्यालय परिवार उपस्थित रहा।

मुख्य सचिव अमृत लाल मीणा ने की विभागीय कार्यो की समीक्षा

तीसरा विकल्प न्यूज़ कन्हैया सिंह

जमुई पटना। बिहार में विकासात्मक कार्यों को और तेज करने के मद्देनजर मुख्य सचिव अमृत लाल मीणा ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से समीक्षात्मक बैठक की। इस दौरान मुख्य सचिव ने विभिन्न विभागों के कार्यों की समीक्षा के साथ-साथ कई आवश्यक दिशा- निर्देश भी दिए। डीएम अभिलाषा शर्मा के नेतृत्व में सभी संबंधित विभागों के पदाधिकारियों ने उनके कार्यालय कक्ष से समीक्षा बैठक में भाग लिया और निर्देशों को आत्मसात किया। मुख्य सचिव ने आपदा प्रबंधन विभाग , स्वास्थ्य विभाग , शिक्षा विभाग , समाज कल्याण विभाग , पिछड़ा एवं अति पिछड़ा कल्याण विभाग , श्रम विभाग तथा अल्पसंख्यक कल्याण विभाग आदि विभागों के आंकड़ों से रूबरू हुए और कार्यों में तीव्र गति लाने हेतु संबंधित विभागीय पदाधिकारी को आवश्यक निदेश दिया। उन्होंने मौजूद विभागीय अधिकारियों को समय-सीमा के भीतर देय दायित्वों का निर्वहन किए जाने का निदेश दिया । उन्होंने सभी विभागीय पदाधिकारियों को विभागीय समन्वय बनाकर कार्य करने का निर्देश देते हुए कहा कि आपसी समन्वय बनाकर निर्धारित समय सीमा के अंदर पूरी निष्ठा के साथ कार्य करें और प्रदेश के बदलाव में अहम भूमिका निभाएं। डीएम ने मौके पर सरकार के कार्यों को सर्वोच्च प्राथमिकता के आधार पर गति दिए जाने का निर्देश सभी सम्बन्धित पदाधिकारी को देते हुए कहा कि किसी भी सूरत मे अनियमितता बर्दाश्त नहीं की जाएगी। वीडियो कांफ्रेंसिंग में उप विकास आयुक्त वीरेंद्र कुमार , एडीएम सुभाष चंद्र मंडल , जिला उप निर्वाचन पदाधिकारी मो. नजरूल हक डीपीएम पवन कुमार समेत सभी सम्बंधित पदाधिकारी उपस्थित थे।

जमुई में लगा रोजगार मेला

500 से ज्यादा युवाओं को मिला रोजगार खिल उठे चेहरे

तीसरा विकल्प न्यूज़ कन्हैया सिंह

जमुई पटना। बिहार सरकार,श्रम विभाग की प्रशासनिक इकाई जिला नियोजन कार्यालय ने श्रीकृष्ण सिंह स्टेडियम के मैदान पर एक दिवसीय जिला स्तरीय नियोजन सह मार्गदर्शन मेला का आयोजन किया। आयोजित रोजगार मेला में 23 कंपनियों ने भाग लेकर 1100 से ज्यादा सुपात्रों का बायोडाटा प्राप्त किया। इस मेले में 500 से ज्यादा युवा और युवतियों को रोजगार मिला वहीं सरकारी विभागों के सात स्टॉल ने 400 से अधिक जरूरतमंदों का यथोचित मार्गदर्शन किया। मेला में बेरोजगारों का हुजूम देखा गया। इस मेले का मुख्य उद्देश्य जिले के बेरोजगार युवक-युवतियों को रोजगार का बेहतर अवसर उपलब्ध कराना था। सरकार के सात स्टॉल की भी मेला में खास भूमिका रही। भागलपुर प्रमंडल के विभागीय उप निदेशक शंभूनाथ सुधाकर ने रोजगार मेला का अविन ज्योति प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए कहा कि रोजगार से विकास को गति मिलती है। इसके लिए उद्यमशीलता जरूरी है। सरकारी नौकरी, निजी कंपनियों में सेवा देने के साथ बेरोजगारी का दंश मिटाने के

लिए जरूरतमंदों को स्वरोजगार से जुड़ना होगा। मेला का मुख्य उद्देश्य जिले के बेरोज़गार युवक-युवतियों को रोज़गार का बेहतर अवसर उपलब्ध कराने के साथ उनका यथोचित मार्गदर्शन करना है। उन्होंने मेला में रोजगार और पंजीकरण बिल्कुल निःशुल्क उपलब्ध रहने की जानकारी देते हुए कहा कि ज्यादा से ज्यादा युवक-युवती इसका लाभ लें और अपना भविष्य रौशन करें। सुधाकर ने मेला के सफल आयोजन के लिए जिला नियोजन कार्यालय की तारीफ की। डीआरसीसी के प्रधान विनय कुमार ने नियोजन सह मार्गदर्शन मेला को जरूरतमंदों के लिए वरदान बताते हुए कहा कि इसके जरिए युवा-युवती बेरोजगारी के दंश से निजात पा सकते हैं। उन्होंने सरकार की कल्याणकारी योजनाओं की विस्तार से चर्चा की। जिला नियोजन पदाधिकारी शिखा राय ने मेला में आगत अभ्यागतों को पौधा , स्मृति चिन्ह और अंग वस्त्र देकर उनका गर्मजोशी से अभिनंदन करते हुए कहा कि सरकार प्रदेश से बेरोजगारी मिटाने के लिए कटिबद्ध है। इसी सोच को धरा पर अमलीजामा पहनाने के लिए जिला स्तर पर रोजगार मेला का आयोजन किया जा रहा है। शिखा राय ने कहा कि इस मेला में 23 कंपनी हिस्सा लेकर 500 से ज्यादा युवाओं को रोजगार देने का काम किया है जो एक कीर्तिमान है। उन्होंने 400 से ज्यादा बेरोजगारों का मार्गदर्शन किए जाने की भी जानकारी दी। जिला कौशल प्रबंधक अंकुर कुमार सिंह , रजनीश कुमार सिंह , रोहित रंजन , गौतम , मंतोष , आंचल रंजन आदि ने भी रोजगार मेला को को लेकर आयोजित समारोह को संबोधित किया और इसके उद्देश्य पर प्रकाश डाला। राज्य उद्घोषक डॉ. निरंजन कुमार ने रोजगार मेला को लेकर आयोजित समारोह का किताबी अंदाज में मंच संचालन किया और खूब वाहवाही लूटी। इस दरम्यान मेहमानों ने कुशल युवा कार्यक्रम के अंतर्गत प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले युवा और युवतियों को प्रमाण पत्र देकर उन्हें सम्मानित किया। विभागीय कर्मी सुनील गौतम , धीरज कुमार , गौतम कुमार आदि ने रोजगार मेला को सफल बनाने में खास भूमिका निभाई। मेला उत्साह के वातावरण में संपन्न हो गया।

जिलाधिकारी ने की चौरासी कोसी परिक्रमा की तैयारियों की समीक्षा

तीसरा विकल्प न्यूज़ संवाददाता हरदोई

हरदोई। विवेकानंद सभागार में जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में आगामी चौरासी कोसी परिक्रमा की तैयारियों के सम्बन्ध में बैठक हुई। उन्होंने कहा कि हरैया, नगवा, गिरधर पुर व साखिन पड़ावों पर सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाएं। पेयजल की उचित व्यवस्था करायी जाये। सफाई व शौचालय आदि की व्यवस्थाएं ससमय सुनिश्चित की जाएं। शयन स्थल पर झाड़ियों की कटाई व भूमि का समतलीकरण कराया जाये। मार्ग की टूटी नालियों को ठीक कराया जाये। मार्ग की टूटी पुलिया आदि की मरम्मत करा ली जाये। परिक्रमा मार्ग को अतिक्रमण मुक्त कराया जाये। मार्ग में प्रकाश की उचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाये। सचल मेडिकल टीमों की व्यवस्था की जाये, चिकित्सा शिविर भी बनवाया जाये। पड़ावों पर जेनरेटर की व्यवस्था की जाये। मोबाईल शौचालय स्थापित कराये जाएं। पशु चिकित्सकों की तैनाती की जाये। तीर्थ के सरोवरों को अमृत सरोवर के रूप में विकसित किया जाये। किसी भी श्रद्धालु को नदी को पानी से होकर पार करने से रोका जाये। सड़कों की मरम्मत का कार्य ससमय पूर्ण कर लिया जाये। आवश्यकतानुसार स्पीड ब्रेकर बनवाये जाएं। पड़ाव स्थल पर बिजली के तारों को खुला न छोड़ा जाये। जिले के प्रवेश स्थल पर तोरण द्वार बनवाया जाये। हर पड़ाव पर दो बड़ी होर्डिंग जिस पर तारीख लिखी हो तथा जिम्मेदारों के मोबाइल नम्बर लिखें हों। इस पर कंट्रोल रूम का नम्बर अंकित कराया जाये। पुलिस अधीक्षक नीरज कुमार जादौन ने कहा कि सुरक्षा की पूरी व्यवस्था की जाये। पड़ाव स्थलों पर चोरी रोकने के लिए पुलिस टीमें लगातार तैनात रहें। पड़ाव में तैनात कर्मचारियों का सत्यापन करा लिया जाये। सभी कर्मचारियों के पहचान पत्र बनवाये जाएं। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक नीरज कुमार जादौन, अपर जिलाधिकारी प्रियंका सिंह, सभी सम्बंधित अधिकारी व धर्म गुरु आदि उपस्थित रहे।

सुरक्षित इंटरनेट दिवस पर कार्यशाला का हुआ आयोजन

तीसरा विकल्प न्यूज़ संवाददाता हरदोई

हरदोई। विवेकानंद सभागार में जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में सुरक्षित इंटरनेट दिवस की कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिलाधिकारी ने कहा कि आज इंटरनेट का विस्तार प्रत्येक क्षेत्र में हो चुका है। हमें इसका प्रयोग सकारात्मक उद्देश्यों के लिए किया जाना चाहिए। वायरस, हैकिंग, मनी फ्रॉड से बचने के लिए सुरक्षा के सभी उपाय करने चाहिए। इंटरनेट से सामाजिक विलगन बढ़ा है। साइबर क्राइम जैसे इंटरनेट फिशिंग से सभी को सतर्क रहना चाहिए। हमें

किसी अनजान व्यक्ति के साथ इंटरनेट पर सूचनाएं साझा नहीं करनी चाहिए। इस जानकारी का दुरूपयोग हो सकता है। ई मेल के माध्यम से मिले ऑफर पर प्रत्युत्तर नहीं देना चाहिए। अपना वित्तीय विवरण साझा न करें। किसी को फोन या इंटरनेट पर ओटीपी न दें। साइबर क्राइम के किसी प्रकरण में www.cybercrime.in या टोल फ्री नम्बर 1930 पर संपर्क कर सकते हैं। विशिंग से भी सतर्क रहें। लुभावने ऑफर पर ध्यान न दें। आइडेंटिटी थेफ्ट से बचने के लिए अपनी प्रोफाइल को सुरक्षित बनायें। ऑनलाइन लॉटरी प्रलोभनो से दूर रहें। साइबर क्राइम के बारे में खुद जागरूक हों और अन्य लोगों को जागरूक करें। वित्तीय धोखे से बचें। डीएससी को सुरक्षित रखें। साइबर हाईजीन के उपाय अपनाएं। एंटीवायरस को अपडेट रखें, इससे डाटा अधिक सुरक्षित रहेगा। सभी जगह अलग अलग पासवर्ड रखें, मजबूत पासवर्ड बनायें किसी के साथ पासवर्ड साझा न करें। पासवर्ड बदलते रहें। सिस्टम को अनलॉक न छोड़ें। अनधिकृत सॉफ्टवेयर को डाऊनलोड न करें। पासवर्ड में अपर व लोवर केस का प्रयोग करें। इसको डायरी में न लिखें। यूपीआई लेनदेन में विश्वसनीय स्रोत का प्रयोग करें। अपने खातों की नियमित निगरानी रखें। डिजिटल अरेस्ट के मामले में तत्काल साइबर थाने को सूचित करें। कोई भी एजेंसी फोन से कोई जाँच व गिरफ्तार नहीं कर सकती।वाट्सऐप को द्विकारक सत्यापित बनायें। जिला सूचना विज्ञान अधिकारी अमित मिश्रा ने विस्तार से साइबर क्राइम के बारे में बताया। उन्होंने sanchar.sathi.gov.in वेबसाईट की उपयोगिता के बारे में भी बताया। कार्यशाला में साइबर क्राइम से सम्बंधित कई वीडियो दिखाए गए। इस अवसर पर सभी जनपद स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

आईआईटी आईएसएम के पूर्व छात्र अजीत रंजन बर्धन पश्चिम बंगाल राज्य सतर्कता आयुक्त नियुक्त

तीसरा विकल्प न्यूज़ ब्यूरो

धनबाद। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (इंडियन स्कूल ऑफ माइन्स) आईआईटी आईएसएम को गर्व है कि इसके प्रतिष्ठित पूर्व छात्र अजीत रंजन बर्धन को पश्चिम बंगाल के सतर्कता आयुक्त के रूप में नियुक्त किया गया है। बर्धन जो आईआईटी आईएसएम के पूर्व छात्र हैं, ने 1986 में अप्लाइड जियोलॉजी में अपनी डिग्री पूरी की और 1987 में मिनरल एक्सप्लोरेशन में एम.टेक किया। भारतीय प्रशासनिक सेवा के 1989 बैच के एक प्रतिष्ठित अधिकारी, उन्हें हाल ही में पश्चिम बंगाल कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार विभाग द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार इस उच्च पद पर नियुक्त किया गया है। इस पद पर उनका कार्यकाल पांच वर्षों तक रहेगा। बर्धन का शानदार करियर 1988 में शुरू हुआ जब उन्होंने पहले ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन में काम किया, उसके बाद 1989 में आई ए एस कैडर में शामिल हुए। वर्षों में उन्होंने कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया, जिनमें शामिल हैं जिलाधिकारी, मालदा सचिव, पश्चिम बंगाल राज्य विद्युत बो,सचिव, लोक निर्माण विभाग। प्रधान सचिव (कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार। प्रधान सचिव (पर्यटन)। प्रधान सचिव (खेल एवं युवा सेवा)।प्रधान सचिव (श्रम)।प्रधान सचिव (सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी)। प्रधान सचिव (पंचायत एवं ग्रामीण विकास)।अतिरिक्त मुख्य सचिव, उत्तर बंगाल विकास विभाग।आयुक्त, जलपाईगुड़ी डिवीजन बर्धन मई 2023 में अतिरिक्त मुख्य सचिव के रूप में सेवानिवृत्त हुए, जिससे उनकी उत्कृष्ट और निष्कलंक प्रशासनिक सेवा का एक शानदार समापन हुआ। ओडिशा के जगतसिंहपुर जिले के मूल निवासी बर्धन ने प्रशासन और सुशासन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।अपने प्रशासनिक कौशल के अलावा, बर्धन एक प्रतिभाशाली खिलाड़ी भी हैं, जो टेनिस और गोल्फ दोनों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं। उनकी सार्वजनिक सेवा और खेल के प्रति निष्ठा उनकी बहुमुखी प्रतिभा और उत्कृष्टता की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।आईआईटी आईएसएम अजीत रंजन बर्धन को इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर हार्दिक बधाई देता है और पश्चिम बंगाल राज्य सतर्कता आयुक्त के रूप में उनकी नई भूमिका में निरंतर सफलता की कामना करता है।

परियोजना विस्तारीकरण को लेकर गेट मिटिंग

तीसरा विकल्प न्यूज़ ब्यूरो

धनबाद। तिसरा,मंगलवार को बस्ताकोला क्षेत्र अंतर्गत

केओसिपी में संयुक्त मोर्चा के संयोजक तुलसी रवानी के नेतृत्व में परियोजना विस्तारीकरण के सवाल पर ठोस पहल सही ढंग से होने के कारण लटकता और सिथिल पडता जा रहा हैं। इस अवसर पर मजदूरों ने चट्टानी एकता का परिचय देते हुए इसके लिए बिसिसिएल के उच्च अधिकारियों को जिम्मेवार ठहरा रहें हैं। इस अवसर पर उमेश सिंह जगदीश मंडल बीरेंद्र सिंह अशोक ग्वाला अशोक राय प्रभाष सिंह भगवान नोनिया हराधन मोदक प्रेम सागर राम तुलसी रवानी कंचन सिंह लोकेश सिंह हिरालाल गोराई आदि उपस्थित थें।

हर्ल सिंदरी ने 100 दिन यक्ष्मा कैंपेनिंग के तहत लगाया शिविर

तीसरा विकल्प न्यूज़ ब्यूरो

धनबाद। हर्ल सिंदरी के द्वारा 100 दिन यक्ष्मा कैम्पेनिंग के तहत शिविर लगाया गया। जिसमें हर्ल के पदाधिकारी ,कर्मचारी एवं मजदूर उपस्थित हुए जिसमें 50 मजदूर का टीवी स्क्रीनिंग किया गया। साथ में शपथ लिया गया कि अपने जीवन काल में क्षय रोग समाप्त करने, टीवी को स्वयं एवं अपने परिवार अपने सहकर्मी और पड़ोसी को बचाने लोगों को खांसने के तरीका का पालन करने के लिए प्रेरित करने तथा अपने गांव, प्रखंड, अपने जिला अपने राज्य एवं अपने देश को टीवी मुक्त बनाने की शपथ दिलाया गया जिसमें डब्ल्यूएचओ डाक्टर बी. सुदर्शन, डाउट प्लस सुपरवाइजर सह चेयरमैन भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी कौशलेंद्र कुमार सिंह, एस टी एल एस नौशाद आलम, टी वी एच वी तनवीर आलम तथा हर्ल के प्लांट मैनेजर सुरेश प्रमाणिक, चिकित्सक डॉक्टर जयेश प्रसाद समेत अन्य पदाधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित हुए। शिविर का उद्घाटन हर्ल के परियोजना प्रमुख सुरेश प्रमाणिक, डॉक्टर बी सुदर्शन एवं भारतीय रेड क्रॉस समिति के चेयरमैन कौशलेंद्र कुमार सिंह के द्वारा किया गया।

21 को मनाया जाएगा जिला स्थापना दिवस समारोह

तीसरा विकल्प न्यूज़ कन्हैया सिंह

जमुई पटना। जमुई जिला का स्थापना दिवस समारोह आगामी 21 फरवरी को उल्लास के माहौल में मनेगा। डीएम अभिलाषा शर्मा के निर्देश पर अपर समाहर्ता सुभाष चंद्र मंडल की अध्यक्षता में समाहरणालय के संवाद कक्ष में अंकित विषय की तैयारी को लेकर महत्वपूर्ण बैठक की गई। अपर समाहर्ता ने कहा कि गत वर्ष की तर्ज पर इस साल भी यह महोत्सव हर्षोल्लास के वातावरण में मनाया जाएगा। मुख्य समारोह 21 फरवरी को श्री कृष्ण सिंह स्टेडियम में आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर नगर परिषद को निर्देश दिया कि शहर की बेहतर ढंग से साफ-सफाई कराएं। विशेष रूप से समाहरणालय परिसर को स्वच्छ एवं आकर्षक बनाने का निर्देश दिया गया। स्थापना दिवस समारोह के तहत विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। इनमें रंगोली प्रतियोगिता , खेलकूद प्रतियोगिता और अन्य मनोरंजक गतिविधियां शामिल होंगी। इन कार्यक्रमों में स्थानीय कलाकारों और विद्यालयों के छात्रों को भी भाग लेने का अवसर मिलेगा। समारोह के दौरान विभिन्न विभागों द्वारा स्टॉल लगाए जाएंगे , जहां लोगों को सरकारी योजनाओं और सेवाओं की जानकारी दी जाएगी। बैठक में उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिया गया कि सभी व्यवस्थाएं सुचारू रूप से की जाएं ताकि यह कार्यक्रम जिलेवासियों के लिए यादगार बन सके। जिला स्थापना दिवस समारोह जिले के गौरवशाली इतिहास को दर्शाने के साथ-साथ विकास की दिशा में नए कदम उठाने का अवसर प्रदान करेगा। जिला प्रशासन ने सभी नागरिकों से अपील की कि वे इस महोत्सव में बढ़-चढ़कर हिस्सा लें और इसे सफल बनाएं। एसडीएम अभय कुमार तिवारी , नजारत उप समाहर्ता अमु आमला , डीईओ राजेश कुमार , उत्पाद अधीक्षक सुभाष कुमार , नगर परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी प्रियंका गुप्ता आदि पदाधिकारी बैठक में उपस्थित थे।

मायुम धनबाद कोयलांचल शाखा की तीन दिवसीय नि:शुल्क दिव्यांग शिविर का समापन

कुल 177 दिव्यांगों को सेवा दी गयी

तीसरा विकल्प न्यूज़ ब्यूरो

धनबाद। मायुम धनबाद कोयलांचल शाखा, धनबाद ने अपने दो दिवसीय द्वितीय नि:शुल्क दिव्यांग शिविर श्री श्री श्री भगवती जागरण कमिटी शक्तिमंदिर धनबाद के संयुक्त तत्वाधान में श्री भगवान् महावीर विकलांग सहायता समिति के सहयोग से पंजीकरण के हिसाब से दिव्यांगों की भीड़ एवं जरुरत को देखते हुए शाखा ने शिविर को लगातार तीसरे दिन भी जारी रखने का निर्णय लिया जिसके तहत 9, 10 एवं 11 फ़रवरी 2025 को शक्ति मंदिर जोड़ाफाटक, धनबाद में शिविर लगाया गया। जिसमे दूर-दूर से आये दिव्यंगों को हाँथ, पैर, कैलीपर्स, कान की मशीन, बैशाखी, व्हीलचेयर, इत्यादि पुर्णत: नि:शुल्क बाँटा गया। इस शिविर का उद्घाटन 9 फ़रवरी 2025 को मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्र अध्यक्ष सुरेन्द्र भट्टर,अरुण गुप्ता, अजय तायल,विकाश पटवारी,धनबाद कोयलांचल शाखा अध्यक्ष नीरज अग्रवाल, शक्ति मंदिर कमिटी अध्यक्ष एस पी सौंधी व अन्य सभी अतिथियों द्वारा कर लाभार्थियों को सुरेन्द्र भट्टर व अन्य अतिथियों के हांथो व्हीलचेयर, वैशाखी, कान की मशीने बंटवाई गयी और साथ ही हाँथ-पैर के दिव्यांगों को उनके हाँथ-पैर की नापी लेकर उन्हें 10 एवं 11 फ़रवरी को लगवाया गया। शिविर में कुल 177 दिव्यांगों (जिसमे से 9 फ़रवरी को 67, 10 फ़रवरी को 102 एवं 11 फ़रवरी को 8 दिव्यांगों) को सेवा दी गयी।इस शिविर को सफल बनाने हेतु मायुम राष्ट्र अध्यक्ष सुरेन्द्र भट्टर, झारखण्ड प्रान्त अध्यक्ष अरुण गुप्ता, महामंत्री सार्थक अग्रवाल, उपाध्यक्ष अजय तायल, सहायक मंत्री विकास पटवारी, प्रांतीय संयोजक सुभाष लिखमानिया, पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष प्रवीन गोयल, पूर्व प्रांतीय उपाध्यक्ष ललित अग्रवाल, विवेक लिल्हा, धनबाद कोयलांचल शाखा अध्यक्ष नीरज अग्रवाल, कार्यक्रम संयोजक शुभम मित्तल, अंकित कथूरिया, उपाध्यक्ष शिव शंकर चौधरी अधिवक्ता, संजय अग्रवाल,सचिव सुनीता अग्रवाल, कोषाध्यक्ष राधा कथूरिया व अन्य मंच सदस्य, शक्ति मंदिर कमिटी अध्यक्ष एस पी सौंधी, अरुण कुमार भंडारी, सुरेन्द्र पाल अरोड़ा व अन्य सदस्य, श्री भगवान् महावीर विकलांग सहायता समिति के सदस्य प्रभाष कुमार अग्रवाल, रितेश पटवारी व अन्य सभी सहयोगीगण एवं समाजबंधूगण उपस्थित थे ।

वन्यजीव पर्यावरण योद्धा अभियान के तहत इंटर-स्कूल क्विज प्रतियोगिता एवं वन्य विभाग कर्मियों के सतत कार्यों के सम्मान कार्यक्रम का आयोजन 16 फरवरी को

तीसरा विकल्प न्यूज़ संवाददाता लखनऊ

बहराइच / लखनऊ । पर्यावरण संरक्षण और वन्यजीव जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वन्यजीव पर्यावरण योद्धा अभियान के तहत इंटर-स्कूल क्विज प्रतियोगिता का आयोजन 16 फरवरी 2025 को मोतीपुर गेस्ट हाउस, बहराइच में किया जाएगा। इस कार्यक्रम का आयोजन एनवायार्न्मेंट वारियर्स संस्था द्वारा किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता में 12 विद्यालयों के कक्षा 9वीं से 11वीं तक के छात्र-छात्राएं भाग लेंगे। क्विज के प्रमुख विषयों में वनों का महत्व, पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, भूमि संरक्षण, तराई के रिज़र्व फॉरेस्ट की विशेषताएँ और वहां पाए जाने वाले वन्यजीव एवं वनस्पतियों की विशेषताएँ शामिल होंगी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सरोजनीनगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह और अम्बालिका समूह संस्थान, लखनऊ के अध्यक्ष अम्बिका मिश्रा रहेंगे, जो पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अपने विचार साझा करेंगे। साथ ही, पर्यावरणविदों और संरक्षणविदों द्वारा विशेष मार्गदर्शन दिया जाएगा। इससे पूर्व, 12 जनवरी 2025 को राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर वाइल्डलाइफ कंजर्वेशन कर्टन रेजर इवेंट के तहत इस अभियान की शुरुआत की गई। एनवायार्न्मेंट वारियर्स अभियान की शुरुआत पलिया कलां (खीरी) स्थित श्री गुरु गोबिंद सिंह राजकीय महाविद्यालय में की गई थी। इस कार्यक्रम में कैबिनेट मंत्री सुरेश कुमार खन्ना, विधायक रोमी साहनी, जिलाधिकारी दुर्गा शक्ति नागपाल, आईएफएस अधिकारी ललित वर्मा सहित कई वरिष्ठ अधिकारी एवं पर्यावरणविदों ने भाग लिया था। इस दौरान वन्यजीव संरक्षण एवं पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देने हेतु डिजिटल लाइब्रेरी का लोकार्पण, 10 मेधावी छात्रों को टैबलेट वितरण, पर्यावरण कैलेंडर एवं वेबसाइट लॉन्च, 5 फ्रंटलाइन वनकर्मियों और 30 वॉचर्स को सम्मानित करने जैसे कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम संपन्न हुए थे। 16 फरवरी को आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में भी वन एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता को प्रोत्साहित किया जाएगा। इस अवसर पर 30 वन्यजीव वाचर्स को साइकिल प्रदान की जाएगी और बहराइच वन प्रभाग के 5 कर्मियों को उत्कृष्ट सेवा के लिए सम्मानित किया जाएगा। इस कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं, पर्यावरणविदों और प्रशासनिक अधिकारियों के बीच पर्यावरण संरक्षण की महत्ता को बढ़ावा देना और समुदाय को अपनी जिम्मेदारी समझाने के लिए प्रेरित करना है। एनवायार्न्मेंट वारियर्स संस्था अगला कार्यक्रम मार्च महीने में पीलीभीत में आयोजित करेगी जहाँ विद्यार्थियों के बीच डिबेट प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा।

पतंग दूर तक संदेश देने में सहायकः डॉ. अंशू केडिया

तीसरा विकल्प न्यूज़ संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। पतंग उन्मुक्तता का प्रतीक होने के साथ ही दूर तक संदेश देने में सहायक होती है। पतंग जिसपर पुरुष का एकाधिकार माना जाता है, छात्राओं ने उस परम्परा को तोड़ते हुए उसे उड़ाने का प्रयास किया। यह बात मंगलवार को खुनखुनजी गर्ल्स डिग्री कॉलेज में आयोजित पतंग प्रतियोगिता के दौरान प्राचार्य अंशू केडिया ने कही। कॉलेज में राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत चल रहे सात दिवसीय शिविर के अंतिम दिन डिजिटल लिटरेसी तथा आस्था तथा संस्कृति का महाकुंभ विषय पर रंगारंग पतंग प्रतियोगिता हुई। जिसमें छात्राओं ने बढ़-चढ़कर प्रतिभाग किया तथा महाविद्यालय परिसर में पतंग को उड़ाया। किसी ने डिजिटल लिटरेसी और महाकुंभ का संदेश देते हुए बहुत ऊंची उड़ाई, तो कोई छात्रा केवल दौड़ कर ही उड़ाती रही। पतंग प्रतियोगिता में छात्राओं ने विभिन्न श्रेणियों में पतंगे बनाई और सृजनात्मकता का परिचय दिया।

दो दिवस का पारंपरिक लोक कला सांस्कृतिक उत्सव कार्यक्रम का शुभारम्भ

तीसरा विकल्प न्यूज़ संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। सेन्ट्रल नोडल एजेंसी, उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र प्रयागराज संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के सहयोग से संस्कृति सेवा समिति द्वारा दो दिवस का पारंपरिक लोक कला सांस्कृतिक उत्सव (गंगा जमुनी संस्कृति पर आधारित) कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 11 फरवरी 2025, दिन मंगलवार को किया गया। मुख्य अतिथि अंजू प्रजापति सदस्य, राज्य महिला आयोग, विशिष्ट अतिथि शैलेन्द्र सिंह दिल्ली प्रेस प्रकाशन समूह, विशिष्ट अतिथि डॉ. श्रेया फाउण्डर, संगीत संस्थान, लखनऊ द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ तथा मंच संचालन हरीतिमा पंत द्वारा किया गया। संस्था के सचिव हैप्पी घिल्डियाल द्वारा बताया गया कि यह संस्कृति संस्था के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु समर्पित संस्था है। जो विगत कई वर्षो से उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों में सांस्कृति कार्यक्रमों, सांस्कृतिक संगोष्ठी, परिचर्चा, लोक संस्कृति के संरक्षण हेतु कार्य कर रही है। आज के कार्यक्रम का नृत्य निर्देशन लवली घिल्डियाल द्वारा किया गया है एवं सह निर्देशन में मनीषा यादव, पल्लवी मिश्रा एवं अंकित बाजपेयी द्वारा किया गया। पारंपरिक लोक कला सांस्कृतिक उत्सव कार्यक्रम की श्रंखला में अंकिता ग्रुप द्वारा मंच से राम भजन जिसके कलाकार साक्षी यादव, आराध्या वर्मा, आयत थे। पल्लवी ग्रुप द्वारा श्री राम चन्द्र कृपालु भजमन जिसके कलाकार सृष्टि, भव्या थे। पल्लवी ग्रुप द्वारा आगिकम एवं महिषासुर मर्दिनी जिसके कलाकार कौशिक, अक्षरा, अनिका, अव्या, वान्या एवं पिंगा सांग तृप्ती व मैया यशोदा वान्या ने प्रस्तुत किया।मनीषा ग्रुप द्वारा घूमर एंव डांडिया जिसके कलाकार ऋषिता, अदिति आनंद थे। अंकिता ग्रुप द्वारा गंगा गीत जिसके कलाकार साक्षी यादव, आराध्या वर्मा, आयत थी। पहाड़ी नृत्य जिसके कलाकार रीमा, कंचन पाण्डेय, रुचिका सिंह, हिमानी पाण्डेय, प्रज्जवल, पीयूष थे। क्लासिक नृत्य भाव्या एंव अंकिता ग्रुप द्वारा शिव स्तुति जिसके कलाकार साक्षी यादव, आराध्या वर्मा, आयत थे तथा मनीषा ग्रुप द्वारा रघुपति राघव राजा राम जिसके कलाकार ऋषिता, अदिति आनंद ने थे।

डिप्टी डायरेक्टर ने फायर स्टेशन सरोजनी नगर का किया निरीक्षण ,परखी व्यवस्थाएं

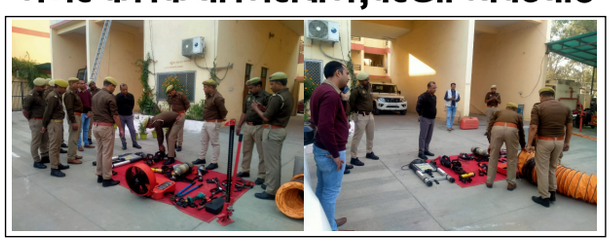

तीसरा विकल्प न्यूज़ संवाददाता लखनऊ

सरोजनीनगर। फायर विभाग के डिप्टी डायरेक्टर / सीएफओ मंगेश कुमार ने मंगलवार को सरोजनीनगर फायर स्टेशन का निरीक्षण किया। शाम करीब 4:15 बजे पहुंचे मंगेश कुमार ने पहले आग की घटनाओं से संबंधित रजिस्टर चेक किए। इसके बाद उन्होंने फायर स्टेशन पर मौजूद सभी उपकरणों को एक-एक करके चेक किया। करीब आधे घंटे तक रुके सीएफओ मंगेश ने यहां दमकल कर्मियों से कई उपकरण चलवा कर देखे। इस दौरान उन्होंने बैटरी ऑपरेटेड स्प्रेडर, बैटरी ऑपरेटेड ग्रैण्डर, बैटरी चलित बोल्ट कटर, ब्रीदिंग ऑपरेट्स, हाइड्रोलिक बोल्ट कटर, हाइड्रोलिक जैक और बैटरी ऑपरेटेड स्मोक एग्जास्ट सहित कई अन्य उपकरणों को चलवा कर देखा। इस दौरान उन्होंने दमकल कर्मियों की दो मंजिला मकान पर आग लगने जैसी स्थिति से निपटने के लिए उनकी फुर्ती भी परखी। इस दौरान दमकल कर्मियों की सीढ़ी पर तेजी से चढ़ने की फुर्ती देखी। उन्होंने डिजास्टर रिस्पांस व्हीकल से आग बुझाने को लेकर दमकल कर्मियों का अभ्यास देखा। बाद में सीएफओ ने कहा कि निरीक्षण में उन्हें सब कुछ ठीक-ठाक मिला। अंत में उन्होंने सरोजनीनगर फायर स्टेशन के लिए विश्व स्तरीय अत्याधुनिक उपकरणों से लैस मल्टी डिजास्टर रिस्पांस व्हीकल उपलब्ध कराने का आश्वासन भी दिया। इस मौके पर सरोजनीनगर फायर स्टेशन के एफएसओ सुमित प्रताप सिंह सहित सभी दमकल कर्मी मौजूद रहे। एफएसओ सुमित प्रताप सिंह ने बताया कि दमकल गाड़ियों को छोड़कर सरोजनीनगर फायर स्टेशन में 23 प्रकार के कुल 69 रेस्क्यू उपकरण उपलब्ध हैं।

धूमधाम से मनाया गया अमाइकस एकेडमी विद्यालय का वार्षिकोत्सव

तीसरा विकल्प न्यूज़ संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। स्थानीय गोमती नगर स्थित संत गाडगेजी महाराज प्रेक्षाग्रह, संगीत नाटक अकादमी में अमॉइकस एकेडमी विद्यालय का वार्षिक उत्सव बढी धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि न्यायमूर्ती मो. फैज़ आलम खान, जज (से.नि.), ने दीप प्रज्जवलित कर के किया। कार्यक्रम की शुरूआत में सर्वधर्म प्रार्थना के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता क भी संदेश दिया गया। इसके पश्चात विद्यालय के बच्चों द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत कर सबका स्वागत किया गया। इसके पश्चात नर्सरी व के.जी. कक्षा के नन्हे मुन्ने बच्चों ने भारत देश के विभिन्न त्योहारों पर मनमोहक डॉस प्रस्तुत किया। इसके पश्चात तेलुगू गीत तम तम पर कक्षा 8 की छात्राओं द्वारा नृत्य प्रस्तुत किया गया। केजी कक्षा के बच्चों ने हुक्कुस फुक्कुस गीत पर सुन्दर प्रस्तुति दी तथा इसके बाद पुष्पा पुष्पाए नेपाली नृत्य, कव्वाली, कोरियन नृत्य, हास्य नृत्य करेले की हो गयी सगाई, राजस्थानी नृत्य, मोबाइल एडिक्शन पर आधारित डांस ड्रामा, स्वदेशी खेलों योग व देशभक्ति गीत पर शानदार प्रस्तुती दिया। इस अवसर पर बच्चों द्वारा साइबर अपराध पर आधारित नुक्कड नाटक की शानदार प्रस्तुति दी गई एवं बच्चें द्वारा भाषण, कविताएं व मनमोहक कहानियों भी प्रस्तुत की गई। इस मौके पर आयुष विभाग की डा. स्वाती द्वारा सी.पी.आर. के विषय में विस्तृत जानकारी देते हुए सी.पी.आर. देने के तरीके का प्रर्दशन भी किया। तथा 1०9० के डिप्टी एस.पी. विनोद कुमार यादव द्वारा महिला एवं बाल अपराध से संबंधित विषय पर ज्ञानर्वधक बाते बताई गयी। इस मौके पर मुख्य अतिथि महोदय ने बच्चों द्वारा दी गयी प्रस्तुति की सरहना करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। विद्यालय के प्रबंधक अनवर हुसैन ने बच्चों की तारीफ करते हुए कहा कि ये जो नन्हे मुन्ने बच्चे हैं ये ही हमारे समाज, हमारे देश का भविष्य हैं जिस तरह से बच्चों ने इतने कम वक्त में कार्यकम तैयार कर सुन्दर एवं मनमोहक प्रस्तुति दी इससे ये पता चलता है कि इन बच्चों में हुनर की कमी नहीं यदि इन्हें बेहतर शिक्षा एवं प्रशिक्षण मिले तो इनके लिए कुछ भी असंभव नहीं, और इसी प्रकार का प्रशिक्षण एवं शिक्षा देने का काम अमाइकस एकेडमी विद्यालय के शिक्षक बखूबी निभा रहे हैं जिसकी जितनी भी सराहना की जाए कम हैं। विद्यालय के उप प्रबंधक एवं अधिवक्ता रजा हुसैन ने बच्चों की जम के हौंसला अफजाई की और कहा कि ये बच्चे अमाइकस एकेडमी की शान है और आगे चलकर यही बच्चे देश की शान बनेंगे। साथ ही उन्होने अभिभवकों से भी अपील की कि वे अपने बच्चों पे ज्यादा समय दें ताकि बच्चों का और अच्छा विकास हो सके। इस मौके पर अति विशिष्ट अतिथि के रूप में अजय दीप सिंह, आई.ए.एस. (से.नि.), विशिष्ट अतिथि के रूप में कुलदीप कुमार रस्तोगी, विशेष सचिव, विधान सभा, दिनेश चन्द्र, पूर्व विशेष सचिव विधान सभा, जावेद खान, सुश्री हिना हबीब कुमारी, डी.पी. सिंह प्रभरी निरीक्षक 1०9०, ऑकिटेक्ट सी.एम. पाण्डेय, प्रधानाचार्य याकूब खान, सभी शिक्षक-शिक्षकॉए तथा काफी संख्या में अभिभवक व दर्शक उपस्थित थे।

समाचार

पार्षद गीता देवी ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के पुण्यतिथि पर दी विनम्र श्रद्धांजलि

तीसरा विकल्प न्यूज़ संवाददाता लखनऊ

सरोजनीनगर। राजधानी लखनऊ में मंगलवार को पार्षद कैंप कार्यालय पर प्रतिरोध अंत्योदय एवं एकात्म मानववाद के प्रेरणास्रोत, हमारे प्रेरणा स्रोत श्रद्धेय पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की पुण्यतिथि के अवसर पर उन्हें विनम्र अभिवादन अर्पित किया गया। इस मौके पर क्षेत्रीय मंत्री संजय गुप्ता मनोज कुमार धर्मेंद्र रवि कुमार गुप्ता नीतीश विजय अमित विजेता मंजू ममता सिंह कमला देवी शोभा मौर्य अनीता अनूप नीरज गुप्ता वीर सिंह दीनदयाल सुमित नीलम एन डी मिश्रा प्रिया मोर्य सम्मानित क्षेत्रवासी भी उपस्थित थे। पार्षद गीता देवी गुप्ता ने बताया कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के आदर्शों और उनके द्वारा समाज में किए गए योगदान को याद करते हुए उनके विचारों और मार्गदर्शन से समाज में एकात्मता और अंत्योदय की भावना जागृत हुई। उन्होंने बताया कि पंडित के विचारों पर चलकर हम अपने समाज में समरसता और समानता को बढ़ावा दे सकते हैं। इस पुण्यतिथि पर गीता देवी गुप्ता ने क्षेत्रवासियों से अपील की कि हम सब मिलकर पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के विचारों को आत्मसात करें और अपने समाज को और अधिक सशक्त एवं समृद्ध बनाएं।

मारपीट में डंडे से मारने से हुई मौत, पुलिस ने हत्यारोपी गिरफ्तार

तीसरा विकल्प न्यूज़ संवाददाता लखनऊ

सरोजिनीनगर । राजधानी लखनऊ के थाना बंथरा के अंतर्गत बीते दिनों में पीड़िता कलावती पत्नी होरीलाल ग्राम हसनखेड़ा पोस्ट भटगांव थाने पर प्राप्त तहरीरी सूचना के मुताबिक शाम करीब 17.00 बजे पीड़िता के पति होरीलाल अपने पौत्र उम्र 01 वर्ष को घर के बाहर खिला रहे थे , तभी उनके पडोस में रहने वाला व्यक्ति चन्द्रशेखर उर्फ बउवा पुत्र राजकिशोर रावत शराब पीकर पीड़िता के घर पर आया और पीड़िता के पति होरीलाल के साथ गाली गलौज करने लगा जिसे गाली देने से मना किया गया तो आती चन्द्रशेखर ने होरीलाल के सिर पर बांस के मोटे डण्डे से हमला कर दिया, जिससे उनका सिर फट गया और मौके पर ही गिर गए। परिजनों द्वारा होरीलाल को 108 एम्बूलेंस से सीएचसी सरोजनीनगर ले जाया गया जहाँ उनकी मृत्यु हो गयी। बंथरा थाने में पंजीकृत मुकदमे अनुसार स्थानीय थाने पर टीम गठित कर अभियुक्त की गिरफ्तारी हेतु सर्च अभियान चलाया गया। मुखबिर खास की सूचना पर मंगलवार को प्र.नि. राम सिंह मय टीम द्वारा मुकदमे से सम्बन्धित अभियुक्त चन्द्रशेखर उर्फ बउवा पुत्र राजकिशोर रावत निवासी हसनखेड़ा भटगाँव थाना बंथरा लखनऊ उम्र करीब 45 वर्ष को स्थान नगवा नाले के पास हरौनी रोड से गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार किए गए चन्द्रशेखर उर्फ बउवा उपरोक्त के खिलाफ नियमानुसार कार्यवाही कर जेल भेज दिया गया।

महाकुंभ के लिए श्रद्धालुओं की उमड़ी भारी भीड़

तीसरा विकल्प न्यूज़ संवाददाता लखनऊ

लखनऊ । मंगलवार को चारबाग रेलवे स्टेशन पर महाकुंभ के लिए श्रद्धालुओं की भारी भीड़ देखी जा रही है। माघ पूर्णिमा से पहले, बड़ी संख्या में श्रद्धालु प्रयागराज जाने के लिए चारबाग स्टेशन पर पहुंच रहे हैं। इस दौरान जीआरपी और आरपीएफ के जवानों को सुरक्षा व्यवस्था के तहत तैनात किया गया है। ट्रेन आने से पहले प्लेटफार्म पर भी सुरक्षा के लिहाज से जीआरपी और आरपीएफ के जवानों की मौजूदगी रही। जीआरपी थाना प्रभारी धर्मवीर सिंह, अपने पूरे दल के साथ, स्टेशन पर सुरक्षा व्यवस्था संभालते हुए महाकुंभ जाने वाली ट्रेनों पर भीड़ को कंट्रोल कर रहे हैं। धर्मवीर सिंह ने आज महाकुंभ जाने वाले श्रद्धालुओं के लिए पुख्ता सुरक्षा इंतजाम किए हैं ताकि कोई अप्रिय घटना न हो और श्रद्धालु शांति से अपने गंतव्य तक पहुंच सकें।

लविवि में दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार 14 से

तीसरा विकल्प न्यूज़ संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में 14 और 15 फरवरी को राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन होगा। सेमिनार में केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री पंकज चौधरी शामिल होंगे। राष्ट्रीय सेमिनार विजन विकसित भारत-2047 को लेकर कुलपति की अध्यक्षता में आयोजन समिति की बैठक हुई। इस राष्ट्रीय सेमीनार में कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करते हुए देश को 2047 तक विकसित भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए सुझाव -विचार विमर्श किये जायेंगे। यह आयोजन निति निर्माताओं, उद्योग जगत और शोधकर्ताओं के बीच संवाद का एक मंच प्रदान करेगा। सेमीनार की संयोजिका डॉ शची राय ने बताया कि देश भर से तीन सौ से ज्यादा शोध पत्र इस सेमीनार के लिए प्राप्त हुए है जिनमें से 258 शोध पत्र सेमिनार की स्मारिका के लिए चयनित किये गए है। सेमीनार में देश के विभिन्न भागों से शिक्षाविद, नीति निर्माता, सरकारी-गैरसरकारी संगठनो के प्रतिनिधि एवं शोध छात्र - छात्राएं हाइब्रिड मोड में सम्मिलत होकर अपने विचार विकसित भारत के लिए प्रदान करेंगें। सेमीनार के आयोजन सचिव डॉ हरनाम सिंह ने बताया कि सेमीनार से सम्बन्धित सभी व्यवस्थाएं पूर्ण कर ली गई है। सेमीनार में विकसित भारत 2047 का दृष्टिकोण प्रस्तुत कर भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में सभी अपनी भूमिका निर्वहन का संकल्प लेंगे।

अग्रेय इन्फोसोल्यूशन्स प्राइवेट लिमिटेड ने लखनऊ में अपने नए कॉर्पोरेट कार्यालय का भव्य उद्घाटन किया

लखनऊ। अवगत कराना है कि अग्रेय सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक अग्रणी कम्पनी है और अपने नए अत्याधुनिक कॉर्पोरेट कार्यालय लखनऊ में भव्य उ?द्घाटन दिनांक 11 फरवरी 2025 को करते हुए उत्साहित है। इस महत्वपूर्ण अवसर पर अग्रेय इन्फोसोल्यूशन्स ने एक आंतरिक उत्सव का आयोजन किया, जिसमें अग्रेय टीम के साथ प्रदेश के कई सरकारी और गैर सरकारी गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया और अपनी शुभकामनाएं दी। यह कार्य वर्षों की व्यापक योजना और तैयारी के बाद सम्भव हो सका। अब कम्पनी पूरी तरह से अपने नये कार्यालय से कार्यो का संचालन करेगी जो उसकी विकास की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि है। विगत 12 वर्षों से अग्रेय टीम अपने 15० से अधिक सरकारी और गैर सरकारी कस्टमर्स को नवीनतम और किफायती तकनीकि समाधान तथा पेशेवर सेवाएं प्रदान कर रही हैं। कम्पनी अपने कस्टमर्स की आवश्यकताओं को भली-भांति समझते हुए उन्हें अत्याधुनिक विश्वसनीय ड्रञ्ज समाधान उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध हैं। अग्रेय के प्रबन्ध निदेशक और सीईओ श्री प्रमोद मिश्र ने कहा, हम अपने नये कॉर्पोरेट कार्यालय से काम शुरू करके बेहद उत्साहित हैं। यह स्थानांतरण हमारे विकास यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है और हमारे कर्मचारियों के लिए एक अधिक सहयोगात्मक और उन्नत कार्य वातावरण प्रदान करने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता हैं। साथ ही, यह हमारे कस्टमर्स और बिजनेस एसोसिएट्स को दी जाने वाली सेवाओं को और बेहतर बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम हैं। भविष्य में नवीनतम सेवाओं का विस्तार और अन्य शहरों में भी सेवाएं देने के बारे में बताया, जिससे नए रोजगार का सृजन सम्भव होगा, तथा सुगम और सुनिश्चित तकनीकि आम आदमी तक कम कीमत पर पहुंचाने का वादा किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री अपरिमेय स्वामी (इस्कॉन मन्दिर लखनऊ) जी के द्वारा कार्यालय का उ?द्घाटन किया गया। इस मौके पर मृदुला मिश्रा (डायरेक्टर), आशीष मिश्रा (डायरेक्टर), डा. उमा सिंह, (हेड ऑफ ऑपरेशन), अभिनेन्द्र सिंह, राजेन्द्र शुक्ला अग्रेय इन्फोसोल्यूशन्स की पूरी टीम व अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। अग्रेय आने वाले दिनो में नवीनतम तकनीकि को अपनाने और अपने कस्टमर्स को बेहतरीन सेवाएं प्रदान करने के प्रति प्रतिबद्ध हैं। कम्पनी अपने कस्टमर्स और सभी सहयोगियों के निरन्तर समर्थन के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करती हैं।

शब-ए-बारात को लेकर डीसीपी ने मेहदी घाट का किया निरीक्षण

तीसरा विकल्प न्यूज़ संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। आने वाली शब-ए-बारात को लेकर मंगलवार को डीसीपी पश्चिम, विश्वजीत श्रीवास्तव ने ठाकुरगंज स्थित मेहदी घाट का निरीक्षण किया। उन्होंने 13 फरवरी को सजने वाले बाजरे (नाउ) और सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। इस दौरान मेहदी घाट पर सुरक्षा के दृष्टिकोण से विशेष प्रबंध किए गए हैं, ताकि कोई अप्रिय घटना न हो। गोमती नदी में बोर्ड के साथ कई पुलिसकर्मी तैनात रहेंगे। यह कार्यक्रम इस्लामिक कैलेंडर के अनुसार 14 और 15 शाबान को शिया समुदाय द्वारा मनाया जाता है, जो शिया समुदाय के आखिरी इमाम, इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम का जन्म दिवस होता है। मेहदी घाट पर इस आयोजन की तैयारियाँ जोरों पर चल रही हैं। शब-ए-बारात, जिसे लैलात अल-बराह भी कहा जाता है, इस्लामी परंपराओं में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इस रात मुसलमान अपने पिछले गुनाहों के लिए माफी माँगते हैं और अल्लाह से दुआ करते हैं। यह रात विशेष रूप से रातभर इबादत, कुरान पढ़ने और दुआ करने का महत्व रखती है। लोग इस रात में मृतकों के लिए भी दुआ करते हैं और अपने परिवार के लिए अल्लाह से माफी की दुआ करते हैं। कमेटी अंजुमन जहूर इमामत के अध्यक्ष जॉन बहादुर ने बताया कि इस बाजरे की परंपरा 100 साल पुरानी है। हालांकि, इस साल गोमती नदी में कार्य चलने के कारण यह बाजरा मेहदी घाट से अब्बास घाट तक नहीं जा पाएगा।

बलरामपूर हास्पिटल मे अधुनिक सुविधाओं से युक्त माड्यूलर आई आपरेशन थियेटर एव वार्ड का उदघाटन उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक के कर कमलो द्वारा संपन्न

तीसरा विकल्प न्यूज़ संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। एक रुपये के पर्चे पर सभी प्रकार की चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने वाले बलरामपुर चिकित्सालय में आधुनिक सुविधाओं से युक्त मॉड्यूलर आई ऑपरेशन थियेटर एवं वार्ड का भव्य उद्घाटन माननीय उप मुख्यमंत्री, चिकित्सा स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा मंत्री श्री बृजेश पाठक तथा माननीय राज्य मंत्री (स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा, संसदीय कार्य एवं शिशु कल्याण) श्री मयंकेश्वर शरण सिंह के कर-कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर महानिदेशक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य डॉ. रतन पाल सिंह सुमन, महानिदेशक परिवार कल्याण डॉ. सुषमा सिंह, महानिदेशक प्रशिक्षण डॉ. पवन कुमार अरुण, निदेशक बलरामपुर चिकित्सालय डॉ. सुशील प्रकाश, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. एन. बी. सिंह एवं चिकित्सा अधीक्षक डॉ. हिमांशु चतुर्वेदी सहित अनेक गणमान्य अधिकारी एवं चिकित्सकगण, कर्मचारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर माननीय उप मुख्यमंत्री, चिकित्सा स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा मंत्री श्री बृजेश पाठक जी ने कहा कि सरकार प्रदेश में चिकित्सा सेवाओं को सुदृढ़ करने हेतु निरंतर प्रयासरत है। बलरामपुर चिकित्सालय में मॉड्यूलर आई ऑपरेशन थियेटर की स्थापना से नेत्र रोगियों को आधुनिक एवं उच्च स्तरीय उपचार सुविधाएं मिलेंगी। सरकार का उद्देश्य प्रदेश के प्रत्येक नागरिक को उत्तम चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना है, और इस दिशा में निरंतर सुधार किए जा रहे हैं। माननीय राज्य मंत्री (स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा, संसदीय कार्य एवं शिशु कल्याण) मयंकेश्वर शरण सिंह ने बलरामपुर चिकित्सालय में नई सुविधाओं के शुभारंभ पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह अस्पताल पहले से ही मरीजों की सेवा में उत्कृष्ट कार्य कर रहा है, और नए ऑपरेशन थियेटर एवं वार्ड की सुविधा से नेत्र रोगियों को और अधिक लाभ मिलेगा। उन्होंने चिकित्सकों एवं चिकित्सा कर्मियों से मरीजों की सेवा को प्राथमिकता देने की अपील की। महानिदेशक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य डॉ. रतन पाल सिंह सुमन ने कहा कि यह नई सुविधा सरकार की समर्पित स्वास्थ्य नीति का हिस्सा है, जिसके तहत प्रदेश के अस्पतालों को उच्चस्तरीय सुविधाओं से लैस किया जा रहा है। उन्होंने अस्पताल प्रशासन को बधाई देते हुए मरीजों की देखभाल में सर्वोत्तम सेवा प्रदान करने का आह्वान किया। निदेशक एवं प्रमुख अधीक्षक बलरामपुर चिकित्सालय डॉ. सुशील प्रकाश ने कहा कि बलरामपुर चिकित्सालय को लगातार आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित किया जा रहा है, जिससे मरीजों को बेहतर उपचार मिल सके। मॉड्यूलर आई ऑपरेशन थियेटर और नए वार्ड की सुविधा से नेत्र रोगियों के इलाज में बड़ी मदद मिलेगी। इस अवसर पर उपस्थित चिकित्सकों, चिकित्सा कर्मियों एवं गणमान्य अतिथियों ने भी अस्पताल के इस नए आयाम की सराहना की और प्रदेश के नागरिकों को उत्तम स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने की प्रतिबद्धता दोहराई।

हाउस टैक्स जमा करने को लेकर जागरूकता रैली

तीसरा विकल्प न्यूज़ संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। हाउस टैक्स जमा करने को लेकर एक जागरूकता रैली निकाली गई, जिसका आयोजन लखनऊ नगर निगम ज़ोन 6 के अधिकारियों द्वारा किया गया। इस रैली में अधिकारी मोहल्ले-मोहल्ले जाकर लोगों को लाउडस्पीकर के माध्यम से समय पर हाउस टैक्स जमा करने की महत्ता के बारे में समझा रहे हैं। इस रैली का मुख्य उद्देश्य जनता को हाउस टैक्स जमा करने के महत्व से अवगत कराना है, ताकि नगर निगम को होने वाली आय में बढ़ोतरी हो और शहर की सफाई व अन्य सुविधाओं में सुधार किया जा सके। अधिकारियों ने लोगों से अपील की है कि वे अपनी नागरिक जिम्मेदारियों को समझते हुए समय पर टैक्स जमा करें।

संपादकीय

देर से हुआ बीरेन सिंह का इस्तीफा

पिछले पौने दो सालों से हिंसाग्रस्त राज्य मणिपुर की भाजपा सरकार के मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह ने रविवार को राज्यपाल अजय कुमार भल्ला को अपना इस्तीफा सौंप दिया। इसके पहले उन्होंने दिल्ली में केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात की थी। राजभवन में बीरेन सिंह के साथ भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष ए. शारदा, पूर्वोत्तर राज्यों के प्रभारी सांसद संबित पात्रा तथा 14 पार्टी विधायक भी उपस्थित थे। कभी मणिपुर से निकलकर राष्ट्रीय स्तर पर फुटबॉल खिलाड़ी के रूप में मशहूर हुए बीरेन सिंह 2017 में पहली बार तथा 2022 में दूसरी बार भाजपा सरकार में मुख्यमंत्री बने थे। मार्च 2023 से राज्य में कुकी और मैतेई समुदायों के बीच जारी हिंसक संघर्ष में वे स्थिति को सम्हालने में नाकाम रहे हैं। उनकी असफलता की आंच केन्द्र सरकार और समग्र भाजपा तक पहुंची। खासकर इसे लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की बहुत आलोचना हुई थी, जिन्होंने पिछले पौने दो सालों में एक बार भी मणिपुर का दौरा नहीं किया, न ही इस बीच मुख्यमंत्री को हटाने की कोई पहल की। बल्कि कुकी और मैतेई के संघर्ष की आड़ में भाजपा हिन्दू वोटों का ध्रुवीकरण करने की कोशिश में लगी रही, वह भी पार्टी की राज्य व केन्द्रीय इकाइयों के मौन रखने का कारण बना। यह त्यागपत्र इतनी देर से हुआ है कि उसके बारे में यह कहना व्यर्थ होगा कि राज्य में जारी हिंसक झड़पों से व्यथित होकर या नैतिकता के आधार पर दिया गया है। यदि हिंसा से दुखी होकर बीरेन सिंह को पद छोड़ना होता तो वे 2023 के मध्य में ही छोड़ देते जब मार्च में कुकियों के साथ हुए दुर्व्यवहार एवं उत्पीड़न के वीडियो सामने आये थे। इनमें दो कुकी युवतियों को निर्वस्त्र कर उनकी परेड कराई गई थी। इसे लेकर मणिपुर सरकार ही नहीं वरन केन्द्र सरकार ने जो चुप्पी साधी थी उसके कारण मोदी व भाजपा सरकार की जबर्दस्त आलोचना होती रही। मोदी के बारे में तो कहा ही जाता रहा कि वे मणिपुर का म भी नहीं बोलते। इसे लेकर दुनिया भर में भारत की निंदा हुई थी। यहां तक कि मोदी जब अमेरिका के दौरे पर गये थे तो उनसे इस बाबत सवाल किया गया था। संसद में भी कभी सरकार ने इस विषय पर कोई चर्चा नहीं होने दी। जब पुराने से नये संसद भवन में कामकाज प्रारम्भ हुआ था तब कहीं मोदीजी ने सदन के बाहर इस पर बामुश्किल डेढ़-दो मिनटों का बयान देकर अपनी पीड़ा व्यक्त की थी लेकिन इस पर अधिकृत बयान कभी संसद के भीतर एक जिम्मेदार लहजे में नहीं दिया था और न ही किसी भी सदन में गम्भीर बहस होने दी थी। मोदी को इस पर थोड़े लफ्ज्ज इसलिये जाया करने पड़े थे क्योंकि सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले पर स्वतरू संज्ञान लेकर कहा था कि श्इस हिंसा को रोकने के लिये यदि सरकारों (राज्य व केन्द्र) द्वारा कुछ नहीं किया जाता तो उसे ही कुछ करना पड़ेगा।श् वैसे इसे लेकर जब मणिपुर में जन प्रदर्शन (कुकी व मैतेई दोनों पक्षों के) जारी थे, तब जरूर एक बार बीरेन सिंह ने अपना इस्तीफा जनता को सौंप दिया था जिसे रोती हुई एक महिला ने फाड़ दिया था। साफ था कि वह एक सुनियोजित प्रदर्शन था जिसके जरिये वे यह संदेश देना चाहते थे कि मुख्यमंत्री का पद तो वे छोड़ना चाहते हैं लेकिन जनता का उन पर ऐसा भरोसा है कि वह उन्हें नहीं छोड़ना चाहती। मणिपुर की स्थिति को लेकर वे किस कदर संजीदा व जिम्मेदाराना थे उसका उदाहरण इसी से लगाया जा सकता है कि एक बार जब उनसे एक हिंसक वारदात को लेकर सवाल हुआ तो उन्होंने कहा था कि ऐसी अनेक घटनाएं होती रहती हैं। सभी पर कार्रवाई नहीं की जा सकती। हालांकि पिछले साल के अंत में उन्होंने राज्य की जनता से इस हिंसा व जान-माल के नुकसान के लिये माफी मांगते हुए उम्मीद जताई थी कि साल 2025 शांतिपूर्ण रहेगा। विपक्ष ने तो इस दौरान अनेक बार पूछा कि मोदीजी मणिपुर कब जा रहे हैं लेकिन प्रधानमंत्री कभी भी नहीं गये। यहां तक कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने तक यह टिप्पणी की थी कि पूरी केन्द्र सरकार को मणिपुर जाकर बैठ जाना चाहिये तथा वहां की स्थिति को सुधारना चाहिये। केन्द्र सरकार व भाजपा के लिये इससे बड़ा निर्देश नहीं हो सकता था पर इस दौरान केवल अमित शाह कुछ दिनों के लिये वहां गये थे। दूसरी तरफ कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने 14 जनवरी, 2024 को अपनी भारत जोड़ो न्याय यात्रा की शुरुआत मणिपुर से ही की थी। इसका असर वहां हुआ था लेकिन केन्द्र सरकार पर इसका कोई फर्क नहीं पड़ा तथा वह पहली की तरह मणिपुर को लेकर उदासीन रही। सवाल यह उठ सकता है कि इतने लम्बे समय से चली आ रही हिंसा के बाद ऐसा क्या हुआ कि मुख्यमंत्री से इस्तीफा ले लिया गया अथवा उन्होंने दे दिया। इसका कारण यह बताया जाता है कि सोमवार से निर्धारित मणिपुर विधानसभा के सत्र में, जो रद्द कर दिया गया, कांग्रेस द्वारा बीरेन सिंह के प्रति अविश्वास व्यक्त करने के लिये प्रस्ताव लाया जाना था। आशंका थी कि प्रस्ताव को कुछ भाजपा विधायक समर्थन दे सकते हैं, तो खुद को फजीहत से एवं पार्टी को टूटने से बचाने के लिये ऐसा किया गया है। अभी प्रधानमंत्री मोदी फ्रांस और अमेरिका के दौरे पर निकल गए हैं। अमेरिका में उनसे मणिपुर के मसले पर मानवाधिकार को लेकर पहले भी सवाल हो चुके हैं, फिर से वैसी ही नौबत न आए, संभवतः इस वजह से भी अभी बीरेन सिंह का इस्तीफा लिया गया है। इसके पहले 19 विधायकों ने बीरेन के इस्तीफे की मांग की थी। इसके अलावा सुप्रीम कोर्ट ने उस ऑडियो की फोरेंसिक जांच के भी आदेश दिए हैं जिसमें बीरेन सिंह द्वारा हिंसा भड़काने की पुष्टि होती है। बहरहाल, मणिपुर में इस इस्तीफे का क्या राजनैतिक असर होता है, यह देखना होगा, लेकिन भाजपा ने फैसला लेने में बहुत देर कर दी, इसमें कोई दो राय नहीं है।

दिल्ली का जनादेश

देश को वैकल्पिक राजनीति व साफ-सुथरे प्रशासन देने के वायदे के साथ सत्ता में आई आम आदमी पार्टी का हालिया विधानसभा चुनावों में हुआ हश्र अप्रत्याशित नहीं है। निश्चित रूप से भाजपा के साधन-संपन्न बड़े संगठन और उसके केंद्र की सत्ता में होने का मुकाबला कर पाना किसी भी दल के लिये आसान नहीं था। भ्रष्टाचार के विरुद्ध चले अन्ना आंदोलन से उपजी आप के मुखिया अरविंद केजरीवाल पार्टी के पोस्टर ब्वाय के रूप में तो उभरे लेकिन जब उन पर तथा उनके सहयोगियों पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे, तो वे जनता की अदालत में खुद को पाक-साफ साबित नहीं कर पाये। दरअसल, पिछले एक दशक से केंद्र सरकार से लगातार टकराव, कोर्ट-कचहरी और आरोप-प्रत्यारोपों से दिल्ली की जनता भी तंग आ चुकी थी। निस्संदेह, शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्र में आप ने रचनात्मक पहल जरूर की, लेकिन केंद्र सरकार व उसके प्रतिनिधि एलजी से लगातार जारी टकराव से दिल्ली का विकास अवरुद्ध होता नजर आया। लेकिन भाजपा ने जिस व्यापक स्तर पर और प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर दिल्ली का चुनाव लड़ा, उसके अप्रत्याशित परिणाम आने स्वाभाविक थे। इस तरह भाजपा ने ढाई दशक से अधिक के वनवास को खत्म करके सत्ता का वरण कर लिया। लेकिन 43 फीसदी मत व 22 विधायकों के साथ उभरी आप एक मजबूत विपक्ष की भूमिका में जरूर रहेगी। लेकिन यह जरूर है पार्टी के मुखिया अरविंद केजरीवाल व पार्टी के नंबर दो मनीष सिसोदिया, सौरभ भारद्वाज, सत्येंद्र जैन आदि अन्य धुरंधरों की हार से विधानसभा में आप की आवाज कमजोर जरूर हो जाएगी। वहीं कयास लगाए जा रहे हैं कि इन चुनावों के परिणाम से आप का अन्य राज्यों में विस्तार प्रभावित होगा। बहुत संभव है कि आप की पंजाब सरकार पर कुछ आंच आए। लेकिन एक बात तय है कि 2024 के लोकसभा चुनाव में जिस भाजपा के प्रदर्शन को कमजोर आंका जा रहा था, वह एक बार फिर जीत की लय में दिखायी दे रही है। उसने हरियाणा के बाद महाराष्ट्र में यह करिश्मा दिखाया। इस चुनाव में कांग्रेस का खाता न खुलना पार्टी के लिये निराशाजनक ही है। वहीं इंडिया गठबंधन के लिये भी यह स्थिति बेहद निराशाजनक है क्योंकि दिल्ली विधानसभा चुनाव में उसके दो दल आप व कांग्रेस ताल ठोककर उतरे थे।

दिल्ली : दो नावों की सवारी में आप हुई धड़ाम!

राजेंद्र शर्मा

> “लेकिन, स्पष्ट्ड जनादेश के ये दावे इस मायने में संदेहास्पद हैं कि न सिर्फभाजपा को आम आदमी पार्टी के मुकाबले केवल 2 फीसदी वोट की बढ़त हासिल हुई है और भाजपा और उसकी सहयोगी पार्टियां मिलकर भी”

आखिरकार, दिल्ली में वह हो गया, जिसकी बहुतों द्वारा आशंकाएं जताई जा रही थीं। भाजपा सत्तर में से 48 सीटें जीतकर, आई ईस साल के बाद दिल्ली में सत्ता निर्णायक तरीके से वापसी करने का मौका मिल गया। और बारह वर्ष बाद, दिल्ली के चुनाव में जनता का फैसला आम आदमी पार्टी नाम की उस नयी राजनीतिक पार्टी के खिलाफ आया है, जो राजधानी दिल्ली से ही धूमकेतु की तरह उठी थी, जिसका दिल्ली से ही अस्त होने की भविष्यवाणियां सुनाई देने लगी हैं। यह दूसरी बात है कि हालांकि आम आदमी को सिर्फ 22 सीटें मिली हैं और वह भाजपा से पूरे 26 सीटों से पिछड़ गयी है, फिर भी दोनों पार्टियों के वोट में सिर्फ 2 फीसदी का अंतर रहा है। इस चुनाव में भाजपा को जहां 45.56 फीसदी वोट मिले हैं, आम आदमी पार्टी को 43.57 फीसद वोट पर ही संतोष करना पड़ा है। बेशक, यह हमारी श्जो पहले आए, सब ले जाएण्य पर आधारित चुनाव प्रणाली की विचित्रता का हिस्सा है कि सिर्फ 2 फीसदी वोट के अंतर से भाजपा, आप से दोगुनी से ज्यादा सीटें पाने में कामयाब रही है हैरानी की बात नहीं है कि संघ-भाजपा, इस जीत को लेकर न सिर्फ बड़े-बड़े दावे कर रहे हैं बल्कि इस चुनावी जीत को भाजपा और मोदी राज के पक्ष में दिल्ली की जनता का जोरदार जनादेश साबित करने की भी कोशिश कर रहे हैं। इसके बल पर यह साबित करने की भी कोशिश की जा रही है कि 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को जो धक्का लगा था, देश की जनता अब अपनी उस भूल का श्सुधार्य कर रही है, लोकसभा चुनाव के बाद से हरियाणा, महाराष्ट्ड्र और अब दिल्ली में भाजपा जीते, इसका जीता-जागता सबूत हैं। लेकिन, स्पष्ट्ड जनादेश के ये दावे इस मायने में संदेहास्पद हैं कि न सिर्फ भाजपा को आम आदमी पार्टी के मुकाबले केवल 2 फीसदी वोट की बढ़त हासिल हुई है और भाजपा और उसकी सहयोगी पार्टियां मिलकर भी, 47 फीसदी का आंकड़ा नहीं छू पाई हैं, भाजपा और उसके सहयोगियों के घोषित विरोध के मंच के आधार पर चुनाव लड़ रही कांग्रेस को भी इस चुनाव में 6.34 फीसद वोट मिला है और उसका तथा आम आदमी पार्टी का वोट मिलकर ही पचास फीसदी के करीब हो जाता है। भाजपा के विरोध के आधार पर सीमित संख्या में सीटों पर चुनाव लड़ी वामपंथी पार्टियों का वोट भी जोड़ लिया जाए तो, भाजपा के विरुद्ध जनादेश का बल 50 फीसदी से ज्यादा वोट का हो जाता है। बेशक, तिकोने मुकाबले में भाजपा के खिलाफ लड़ते हुए भी, एक-दूसरे के खिलाफ लड़ रही आम आदमी पार्टी और कांग्रेस का वोट आपस में जोड़े जाने का चुनाव नतीजों के हिसाब से कोई व्यावहारिक अर्थ नहीं है। फिर भी, इस वोट का जोड़कर देखा जाना इसलिए प्रासंगिक है कि जैसा कि करीब दस महीने पहले ही हुए संसदीय चुनाव ने दिखाया था, इन पार्टियों का चुनाव के लिए साथ आना सिर्फ कोरी कल्पना का ही मामला नहीं था, बल्कि एक व्यावहारिक संभावना का मामला था। और जैसा कि देश में जनतंत्र तथा धर्मनिरपेक्षता के मूल्यों की परवाह करने वाली अनेक ताकतों तथा लोगों ने चुनाव से पहले ही आगाह भी किया था, संघ-भाजपा को सत्ता से दूर बनाए रखने के लिए, आम तौर पर तमाम संघ-भाजपा विरोधी ताकतों का और खासतौर पर आप तथा कांग्रेस का साथ आना, जरूरी था। इस आगाही का वजन लोकसभा चुनाव में भाजपा के दिल्ली में सभी सात सीटें एक बार फिर जीतने और पहले हरियाणा तथा उसके बाद महाराष्ट्ड्र में उसका विजयरथ फिर से दौड़ पड़ने के प्रभावों को देखते हुए, और भी ज्यादा बढ़ गया था।इस सब को देखते हुए, यह बात भी दर्ज करने वाली जरूर है कि आप को 22 सीटों पर जीत मिलने के अलावा कम से कम 13-14 सीटों पर आप और कांग्रेस का संयुक्त वोट, जीत के लिए काफी होता। यानी दोनों पार्टियां मिलकर चुनाव लड़ी होतीं तो, इसी गणित में भी चुनाव का नतीजा बदल सकता था। जाहिर है कि साथ मिलकर चुनाव लड़ने से जो राजनीतिक-चुनावी प्रभाव पड़ा होता, इस गणित को संघ-भाजपा के खिलाफ ही झुका सकता था। वास्तव में पिछले लोकसभा चुनाव में ही इसका भी सबूत मिल गया था, जब सभी सात सीटें जीतने के बावजूद, भाजपा के मत फीसदी में, 2019 के चुनाव के मुकाबले करीब 3 फीसदी वोट की कमी दर्ज हुई थी। भाजपा के वोट में इस कमी के पीछे एक बड़ा कारक, आप और कांग्रेस का मिलकर चुनाव लड़ना था। इसे देखते हुए, कम से कम इतना तो कहा ही जा सकता है कि दिल्ली में भाजपा की अत्र्ठ्ठाईस साल बाद सत्ता में वापसी को संभव बनाने में, एक कारण आप और कांग्रेस का, संघ-भाजपा को समान रूप से विरोधी मानते हुए भी, उसके खिलाफ एकजुट नहीं हो पाना था। इंडिया के मंच की इस विफलता की जनतांत्रिक तथा धर्मनिरपेक्ष ताकतों को आने वाले समय में बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। याद रहे कि जनतांत्रिक विपक्षी मंच ने ऐसी ही विफलता का प्रदर्शन इससे पहले मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ व राजस्थान तथा बाद में हरियाणा जैसे राज्यों में भी किया था। इन सबसे पहले गुजरात, गोवा आदि राज्यों में भी जनतांत्रिक विपक्ष का ऐसा ही बिखराव देखने को मिला था। कम से कम इतना तो कहा ही जा सकता है कि आम चुनाव के बाद से इंडिया ब्लाक, राज्यों के स्तर पर इस बिखराव को दूर करने में कोई सुधार नहीं कर पाया है। यहां तक कि इसे देखते हुए मीडिया में अब इंडिया ब्लाक के ही अंत की भविष्यवाणियां भी की जाने लगी हैं। फिर भी दिल्ली के चुनाव के नतीजों को सिर्फ या मुख्यतरू आप और कांग्रेस के गठबंधन न कर पाने का नतीजा नहीं कहा जा सकता है।

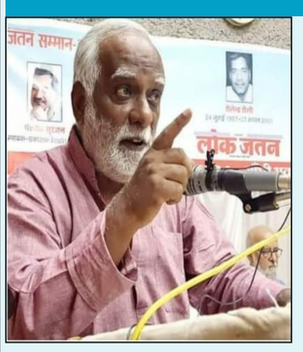

संवेदना की मौत का महाकुम्भ : मदद में उठ खड़ा हुआ इलाहाबाद

आलेख - बादल सरोज

दुर्भाग्य से बुरी आशंकाएं सच निकली और इस बार का कुम्भ, जिसे 144 वर्ष बाद पड़ने वाला महाकुम्भ बताया जा रहा है, इतिहास में कुप्रबंधन के महामंडलेश्वरों की जकड़न, अव्यवस्था के महा-अमात्यों की निगरानी और भ्रष्टाचार के पीठाचार्यों की रहनुमाई में संवेदनाओं की मौत के मेले के रूप में दर्ज होकर रह गया। मौनी अमावस्या के दिन तड़के सुबह बताये गए ब्रह्ममुहूर्त में गंगा तट पर लेटे, सोये, अधलेटों की तरफ लगे बैरीकेड को तोड़ती हुई लाखों की भीड़ संगम में डुबकी लगाने लपकी और उन्हें कुचलते हुए आगे बढ़ गयी। यह भगदड़ की वह जगह है, जहां हुए हादसे का होना सरकार और उसके ढिंढोरचियों ने, देर से ही सही, मगर आखिरकार कुबूल किया है। कुंभ गए लोगों और उनके द्वारा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर दिखाए वीडियोज, बताये वृतांतों के हिसाब से इसी - 29 जनवरी - के दिन एक नहीं, तीन जगह भगदड़ मची थी । इनमे कितने लोग हताहत हुए, इसकी कोई पुष्ट, आधिकारिक जानकारी देने को डबल इंजिन सरकार तैयार नहीं है। मृतकों की संख्या को लेकर अलग-अलग तरह के दावे और अनुमान हैं, जो कई सैकड़ा से लेकर हजार तक जाते हैं। योगी 17 से शुरू हुए थे, 30 से आगे मानने को तैयार नहीं हैं। डिजिटल कुंभ बताये जाने वाले इस समावेश में वसंत पंचमी के आख़िरी अमृत स्नान के दिन 3 फरवरी तक आने वालों की एकदम सटीक संख्या 34 करोड़ 97 लाख का दावा करने वाली गणन मापन तकनीक तो उनके पास है, मगर मरने वालों की वास्तविक संख्या बताने के लिए जोड़ के जिस सामान्य गणित ज्ञान की आवश्यकता है, वह उनके पास नहीं है। बिकने के लिए राजी न होने वाले, सही कवरेज की जिद्द करने वाले पत्रकारों को रोका जा रहा है, उन्हें जेल भेजने की धमकियां दी जा रही हैं। तंत्र की सारी की सारी ताकत हताहतों की तादाद छुपाने के लिए झोंकी जा रही है। कथित मुख्यधारा प्रेस जितनी मुस्तैद हाथरस की भगदड़ मौतों को लेकर थी, उससे भी ज्यादा तत्परता से कुंभ हादसे को छुपाने, उसकी खबरें दबाने में लगी है। निर्मम निर्लज्जता की हद यह है कि एक तरफ योगी और उनकी सरकार की ओर से मृतकों को मुआवजे देने के एलान किये जा रहे हैं, वहीँ दूसरी ओर मृतकों के परिजनों का कहना है कि मृत देहों को सौंपने से पहले उनसे लिखवाया जा रहा है कि मृत्यु किसी दुर्घटना या हादसे में नहीं, सामान्य तरीके से हुई है। हाल के दिनों में धार्मिक मेलों, मंदिरों, बाब्बे-बाबियों के प्रवचनों और समागमों में, दर्शनों और प्रसादों में जितनी भीड़ बढ़ना शुरू हुई है, उतनी ही अफरातफरी और उनमें होने वाली मौतों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है। मगर ऐसा डबल इंजिन काल में ही हुआ है, जब मरने वालों को सम्मानजनक अंत्येष्टि और संवेदना के दो शब्द देने और अपनी घोर असफलता के लिए जिम्मेदारियां तय करने की बजाय इसे साजिश और देशद्रोहियों का किया-धरा बताया जा रहा है, उनके गिरोह का अफवाह फैलाने वाला तंत्र इसमें भी हिंदू-मुसलमान और अगड़ा-पिछड़ा का तड़का लगाने में जुटा हुआ है। इसी गिरोह के दुर्भाषा धंधक धोरी जले पर नमक छिड़क रहे है और दम घुटने, कुचलने से हुई मौतों को सीधे मोक्ष प्राप्ति का सुखद सुअवसर करार देने की धृष्टता तक करने से नहीं हिचक रहे हैं। कुंभ का मेला पहली बार नहीं भरा है, सदियों से भरता रहा है और बिना किसी योगी या मोदी के बुलाये ही हजारों, लाखों लोग जुटते रहे हैं। उनके लिए समुचित प्रबंध और इंतजाम होते रहे है। यदा-कदा हुई दुर्घटनाओं से सबक लेकर व्यवस्थाओं में सुधार किये जाते रहे हैं। इस बार की मौनी अमावस्या का दुखद हादसा भीड़ प्रबंधन के मामले में हद दर्जे की अकुशलता और अक्षमता और उच्चतम स्तर की अव्यवस्था और अयोग्यता का नमूना भी है, परिणाम भी है। जो ज़िंदा बचकर लौटे भी हैं, उनकी भी पीड़ाएं कम नहीं हैं ; मीलों तक पाँव-पाँव चलकर नदी की धार तक पहुंचना, विकट शीत में नम और ठंडी रेत में बिना छाँव, अलाव के सोना और पीने के पानी से लेकर चिवड़ा, पोहा और मूड़ी तक के लिए तरसना मेले में जाने वाले लगभग हर आम आदमी, औरत की भुक्तभोगी त्रासद व्यथा है। मेले की चाक-चौबंद व्यवस्थाओं को लेकर साल भर से भी ज्यादा पहले से योगी-मोदी सरकारों के प्रचारतंत्र के गालबजाऊ ऐलानों तथा %जो इस महाकुंभ में नहीं आयेगा, वह देश का गद्दार होगा% के आव्हान के भरम में आकर पहुंचे लाखों भारतीयों की यातना कथा है। कुंभ हादसा इस बात का एक और उदाहरण है कि हर आयोजन को खुद के प्रचार के लिए इस्तेमाल करने और हर काम को एक इवेंट में, एक तामझामी समारोह में बदल देने की जो प्रवृत्ति पैदा हुई है, वह किस तरह अब जानलेवा विकृति

बनती जा रही है। जो मोदी कुनबा नोटबंदी की विनाशलीला, यहाँ तक कि कोरोना की महामारी तक को समारोही इवेंट बनाकर ताली, थाली, लोटा, बाल्टी बजाने के उत्सवों में बदलने से बाज नहीं आया, वह धर्म से जुड़े किसी आयोजन को भुनाने से कैसे चूक सकता था। दुनिया के इस अनोखे मेले में भी यही किया गया ; कण-कण में भगवान् थे कि नहीं, यह जब तय होगा तब होगा या नहीं भी होगा, मगर कुंभ में पग-पग पर मोदी और योगी जरूर थे। दोनों की अलग-अलग मुद्राओं, भिन्न-भिन्न धजाओं की तस्वीरों वाले विशाल और विराट होर्डिंग्स गंगा-जमुना के तटों से लेकर %जित देखो तित% छाए हुए थे। बाकी बची जगहों पर परम्परागत अखाड़ों से अधिक धर्म के नए सत्ता प्रिय व्यापारी अपने पांच सितारा शामियाना मुकामों में पधराये हुए थे। बैठने भर की जगह बस उनके लिए नहीं थी, जो जीवन की बढती असुरक्षा, रोजी-रोटी की अनिश्चितता के चलते निकल रही अपनी आह और कराह के आस्था और श्रद्धा में रूपांतरित होने के चलते पहले की तुलना में कुछ ज्यादा ही बढ़ी-चढ़ी तादाद में कुंभ में डुबकी लगाने पहुंचे थे। कुप्रबंधन के कंधे पर सवार यह आत्मश्लाघा का प्रेत था, जो 29 जनवरी की भोर में संगम के मुहाने पर नाच रहा था। मौत के इस नाच के कोरियोग्राफर वे वी आई पी थे, जिनके लिए पहले से ही संकरी जगह के काफी बड़े हिस्से को आरक्षित कर दिया गया था। इधर लाखों लोग एक-दूसरे के ऊपर चढ़े जा रहे थे, आपस में दबे और कुचले जा रहे थे, उधर अनेक अस्थायी पीपा पुल और लाल हरी कालीन से सजे पंडाल इन अतिविशिष्टों का इन्तजार करते हुए खाली पड़े थे। अतीत में हुई कुंभ भगदड़ों से सबक लेते हुए भीड़ वाले दिनों में वीआईपी लोगों के आने पर रोक लगाने के साफ़-साफ़ निर्देशों के बावजूद कभी खुद योगी आदित्यनाथ अपने पूरे मंत्रीमंडल सहित एक दूजे पर पानी उलीच कर जलक्रीड़ा और किलोल कर रहे थे, तो कभी देश के गृहमंत्री अमित शाह अपनी पत्नी और संघी साथियों समेत वी आई पी डुबकी लेते हुए उन्नत उदर स्नान कर रहे थे। यहाँ नहाते वक़्त भी वस्त्र धारे परिधान मंत्री के अर्ध डुबकी प्रहसन का उल्लेख जरूरी नहीं है। यह तब हो रहा था, जब 8 साल पहले वी आई पी कल्चर के खात्मे और उसकी जगह ई पी आई - हर व्यक्ति महत्वपूर्ण - कल्चर लाने का फरमान मन की बात में स्वयं इनके ब्रह्मा जी द्वारा जारी किया जा चुका था। इस वी आई पी तामझाम से ऊबी-अघाई अयोध्या द्वारा लोकसभा चुनाव में भाजपा को पराजित किये जाने से डरे मुख्यमंत्री योगी एक बार फिर इसी जून में इसे दोबारा ख़त्म करने का एलान कर चुके थे। कथनी के ठीक उलट करनी का पाखंड इस कदर था कि सिर्फ मंत्री-संतरियों के लिए ही नहीं, धन पिशाचों के लिए भी एकदम अलग और सुविधाओं की अति में पगे आरामदेह इंतजाम किये गए थे। जैसा कि नियम है, धर्म के नाम पर राजनीति करने का नुकसान सबसे पहले उसी धर्म को भुगतना पड़ता है, जिसके नाम पर वह की जाती है। वही हो रहा था, भाजपा और उसके कुनबे ने हिन्दू - जिसे अब वे हिन्दू धर्म भी कहने को तैयार नहीं है, सनातन कहते हैं - पर्वों, मेलों और तीर्थों के साथ यही किया है। साम्प्रदायिक हिंदुत्व ने बड़ी पूँजी के साथ गलबहियां करके पैसे की ताकत पर सिर्फ सत्ता के गलियारों में ही नहीं, धार्मिक परिसरों में भी उनकी बेरोकटोक आवाजाही सुनिश्चित कर दी है। महाकाल सहित ज्यादातर सभी बड़े मंदिरों में वी आई पी दर्शन की बढ़ी-चढ़ी रेट लिस्ट बाकायदा टांग दी गयी हैं। इस कुनबे ने %एक ऊँट का सुई के छेद से निकल जाना, एक धनवान व्यक्ति के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से कहीं अधिक आसान है% की उक्ति को ही उलट कर रख दिया और सिर्फ देसी धन पिशाचों के लिए नहीं, एलन मस्क जैसे सात समंदर फांद कर आने वालों यक्ष और यक्षिणीयों के लिए भी पलक पांवड़े बिछा दिए गए। कुंभ जैसे मेले वर्ण और जाति की ऊंच-नीच से अभिशप्त हिन्दू धर्म के उन गिने-चुने सीमित अवसरों में से एक रहे हैं, जहां अल्लामा इकबाल की कही में कहा जाए न कोई बन्दा रहा और न कोई बंदानवाज/ एक ही सफ़ में खड़े हो गए महमूदो अयाज जैसी संभावनाएं शेष बची हुयी थीं। जहां पसीने में लथपथ लुटियाधारी और चंदन लिपटे चुटियाधारी एक ही जगह डुबकी लगा सकते थे। भाजपा राज में पहले से चले आ रहे श्रेणीक्रम में अब धनवानों की नई श्रेणी जोड़कर कुंभ के सांस्कृतिक समावेशी रूप को ही विद्रूप कर दिया गया और इस तरह दुर्घटनाओं की आशंकाओं को बाकायदा न्यौता देकर बुला लिया ; भगदड़ में हुई मौतें धनिकों के प्रति इसी आसक्ति का नतीजा भी है। इस महाकुंभ ने सिर्फ इनके नहीं, बहुतों के कपडे उतार कर उनके असली रूप स्वरुप को उजागर कर दिया है। न्याय प्रणाली भी इनमें से एक है। केरल के जंगलों में घटे एक हादसे की शिकार एक हथिनी के मामले में बिलबिला जाने वाली न्याय पालिका के सर्वोच्च पर बैठी खंडपीठ को संगम के मुहाने पर बिछी लाशें हस्तक्षेप के लायक नहीं लगी । इसकी जांच करने का आदेश देना, जिम्मेदारियां तय करना उसे आवश्यक नहीं लगा। थका प्रयाग, तो खड़ा हुआ इलाहाबाद इस कोलाहल और हाहाकार के बीच जब राज के द्वारा ठगा गया प्रयाग हत, आहत, स्तब्ध और हतप्रभ था, तब उसका हाथ थामने के लिए, उसके आंसू पोंछने के लिए इलाहाबाद उठ खड़ा हुआ। जिस इलाहाबाद का कुंभ में आना तक प्रतिबंधित कर दिया गया, जिन मुसलमानों को कुंभ के दौरान संगम से दूर रहने और दुकाने भी न लगाने की सख्त हिदायतें दी गयी थीं, उन्होंने तीर्थ स्नान करने आये और आपदा में फँस गए हिन्दुओं के लिए अपनी बाँहें फैला दीं। उन्होंने कहा कि भक्त हमारे और इलाहाबाद के मेहमान हैं, उन्हें पस्त और खस्ताहाल छोड़ना हमारी इंसानियत का अपमान है। जैनसनगंज रोड और चौक की जामा मस्जिद सहित दसियों जगह की मस्जिदें, दरगाहें खोल दी गयीं, इसके बाद भी जगह कम पड़ी, तो पहले नखासकोहना, हिम्मत गंज, खुल्दाबाद के इबादतगाह, इमामबाड़े और मकबरों और उसके बाद घर-आँगनों को खोल दिया गया। फूलों से स्वागत करते हुए रामनामी अंगवस्त्र और अंगौछे भी भेंट किये गए। भंडारे शुरू करके खाना, बिस्तर, कम्बल, चाय, पानी की जरूरतें ही पूरी नहीं की गयीं, दवा, इलाज और वैद्य, हकीम, डॉक्टरों को भी उपलब्ध कराया। अचानक दिल का दौरा पड़ने से गश खाकर गिरे रामशंकर को सीपीआर देकर ज़िंदा करने और तुरंत अस्पताल पहुंचाने वाला फरहान एक व्यक्ति भर नहीं था, वह इलाहाबाद था ; वह इलाहाबाद, जहां सिर्फ नदियों की त्रिवेणी का ही संगम नहीं है, कई हजार सालों की साझी संस्कृति का भी संगम भी है। वह इलाहाबाद, जिसने सिर्फ आर्यों को ही नहीं, ग्रीक, स्काईथियन, पर्शियन और हूणों, यवनों और शकों आदि-इत्यादि समय-समय पर आये सभी मेहमानों को अपना बनाया है, उन्हें नहाना, अनाज उगाना, घर बनाना और नगर बसाना सिखाया है। वह इलाहाबाद एक बार फिर जाग उठा। उसने बता दिया कि कुछ जहरखुरानों के विषवमन से मनुष्यता अपनी तासीर नही छोड़ती।

बस और कार की टक्कर में एक युवक की मौत

दुद्धी, सोनभद्र। दुद्धी फुलवार गांव में विंढमगंज की ओर जा रही कार को विपरीत दिशा से आ रही बस ने जोरदार टक्कर मार दी। घटना के बाद मौके पर अफरा तफरी मच गई। घायलों को अस्पताल ले जाया गया जहां चिकित्सकों ने एक को मृत घोषित कर दिया। रींवा-रांची मार्ग पर सोमवार को विंढमगंज थाना क्षेत्र के फुलवार गांव में विंढमगंज की ओर जा रही कार को विपरीत दिशा से आ रही बस ने जोरदार टक्कर मार दी। जिसमें एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई। अन्य घायलों को ग्राम प्रधान दिनेश यादव के सहयोग से एम्बुलेंस से दुद्धी सीएचसी में उपचार के लिए भेज दिया गया।सभी घायलों का दुद्धी सीएचसी में इलाज किया जा रहा है। कई लोगों की हालत गंभीर बताई जा रही है। सीएचसी में केंद्र अधीक्षक डॉ शाह आलम अंसारी, डॉ राजेश कुमार, डॉ अणिमा यादव सहित अन्य स्वास्थ्य कर्मी उपचार में जुटे हुए हैं।

बीडीओ की सुस्ती के कारण ब्लाक कप्तानगंज में दम तोड़ रही स्वच्छता अभियान

➲ ग्राम पंचायतों में कागजो में साफ-सफाई एवं विकास कार्य ➲ ख़बर चलने बाद भी परिसर में पड़ा कूड़ा-कचरा को हटवाने कै नहीं ली गई सुधि

बस्ती। कप्तानगंज खण्ड विकास अधिकारी कप्तानगंज के सुस्ती के कारण ब्लाक परिसर मे कूड़ा - कचरा डायपर की गंदगी से पटा हुआ है। सरकार द्वारा चलायी जा रही स्वच्छता जागरूकता अभियान पर पानी फिर रहा है, जिसका नतीजा यह है स्वच्छता अभियान के साथ ग्राम पंचायतों मे विकास कार्य दम तोड़ती नजर आ रही है। सूत्रो के मुताबिक - ब्लाक कप्तानगंज के अधिकारी कर्मचारी सुविधा शुल्क के बोझ तले इस कदर दबे हुए हैं कि स्वच्छता जागरूकता अभियान एवं विकास कार्यो को अनदेखी कर रहे है। सुविधा शुल्क इकट्ठा करने मस्त अधिकारीयों की गंदगी की तरफ उनका ध्यान नहीं जा रहा है। ध्यान जाए भी तो कैसे जब इन साहब के ध्यान कहीं और है स्वच्छता की दुहाई देने वाले स्वच्छ भारत मिशन को सुचारू रूप से संचालित कराने / करने के बजाय आराम फरमाते नजर आ रहे है। भारत सरकार द्वारा लाखों रुपये खर्च कर स्वच्छ भारत मिशन का जागरुकता अभियान चलाया जा रहा है। परन्तु अधिकारी कर्मचारी सरकार का वेतन लेकर भी अधिकारी कर्मचारी असमर्थ दिख रहे है । और सरकार की छवि धूमिल करने में लगे हुए हैं। ब्लॉक परिसर में पड़े कूड़ा कचरा डायपर की (गंदगी) को किसी भी कार्य दिवस पुष्टि के लिए देखा जा सकता है। वही ग्राम पंचायतों मे स्वच्छता अभियान के साथ विकास कार्यो को उच्चअधिकारियों द्वारा ग्राम पंचायतो का निरक्षण कर स्वच्छता अभियान एवं विकास कार्यो को परखा जा सकता है। ग्राम पंचायतों में बने पंचायत भवनो पर सचिवों की उपस्थिति को ग्रामीणों से सचिवो के नाम या फिर ग्रामीणों द्वारा उन्हे पहचानें की बात उच्चअधिकारियों द्वारा निरीक्षण कर ग्रामीणों से जाना जा सकता है। जहां से चौंकाने वाले नतीजे मिलेंगे अधिकतर ग्राम पंचायतों में सचिवों के उपस्थित पंचायत भवनों पर केवल मुंह दिखाई के लिए ही उपस्थित होते हैं।

बाकी दिन जनता के जनप्रतिनिधियों को सचिवों के कार्यालय का चक्कर लगाते हुए ब्लाक परिसर में लगे सीसी टीवी कैमरे में देखे जा सकते है। कि किस प्रकार जन प्रतिनिधियों को उनके कार्यलाय का चक्कर लगाना पड़ रहा है। ग्राम पंचायत सचिवों को बाखूबी मालूम है कि जांच की उच्चअधिकारीयों के लिए किसी भी एक विकास खण्ड की परिपूर्ण रूप से जांच करना संभव नही है। जिसका फायदा उठाकर सचिवों द्वारा मनमानी तरीके से कार्य करने मे सफ़ल दिखाई दे रहे है। ऐसा नही कि इनकी कमियों को मिलने पर उच्च अधिकारियो द्वारा उनके ऊपर कार्यवाही नही की जाती है। कार्यवाही होने के वावजूद भी बेलगाम भ्रष्ट किस्म के अधिकारी कर्मचारीयों एवं सचिवों के हरकत मे सुधार न होना विकास कार्यों के लिए संकट बना हुआ है। ग्रामिणो को अपना एक छोटा सा कार्य कराने के लिए इन महान सचिवों के कार्यालयों का चक्कर लगाते ऐडी के चप्पल तक घीस जा रहे है। हताश होकर ग्रामिणो द्वारा सुविधा शुल्क देने को मजबूर हो रहें हैं। जिसको लेकर उच्च अधिकारी के कार्यालयों में शिकायतो का भरमार भ्रष्ट सचिवों का सबुत दे रहा है।

विधायक सौरभ श्रीवास्तव ने सुंदरपुर वार्ड में चलाया जनसंपर्क अभियान

समस्याओं के त्वरित समाधान के दिए निर्देश

वाराणसी। कैन्ट विधायक सौरभ श्रीवास्तव ने सोमवार को आपका विधायक - आपके द्वार कार्यक्रम के तहत सुंदरपुर वार्ड में जनसंपर्क किया। सुबह 8:30 बजे से 11:00 बजे तक उन्होंने घर-घर जाकर स्थानीय निवासियों से संवाद किया और उनकी समस्याओं को सुना। विधायक ने मौके पर ही संबंधित अधिकारियों को निर्देशित कर समस्याओं के त्वरित समाधान के आदेश दिए। विधायक सौरभ श्रीवास्तव ने जनसंपर्क के दौरान वार्ड की सफाई व्यवस्था का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने सुपरवाइजर, इंस्पेक्टर एवं नगर स्वास्थ्य अधिकारी को आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए। क्षेत्र में पेयजल पाइपलाइन लीकेज और सीवर जाम की शिकायतें सामने आने पर उन्होंने जलकल विभाग के अभियंताओं को त्वरित कार्रवाई करने का निर्देश दिया। जनसंपर्क अभियान के दौरान विधायक के साथ अरविंद पटेल बब्बल, अरुण सिंह, मंडल अध्यक्ष जितेंद्र पटेल, पार्षद प्रतिनिधि राजकुमार गौड़, अधिवक्ता हरिशंकर मिश्रा मंचल, बसंत यादव, दीपक विश्वकर्मा, हरिओम गौड़, रामलाल मौर्य, संजय पाल, सोनू राव, डब्लू मौर्य, सतीश राजभर, शुभम पटेल आदि उपस्थित रहे।

जय हिन्द मानवाधिकार एसोसिएशन द्वारा नि:शुल्क जांच शिविर का किया गया आयोजन

मिर्जापुर। मिर्जापुर के जसोवर स्थित पंचायत भवन में रविवार को जय हिन्द मानवाधिकार एसोसिएशन के द्वारा तीन वर्ष पूर्ण होने पर मनाया गया स्थापना दिवस। स्थापना दिवस के अवसर पर निःशुल्क जांच शिविर का आयोजन किया गया जिसमें नेत्र से संबंधित समस्याओं का जांच किया गया। गांव के लोगों को आंख के सही ढंग से रखरखाव हेतु परामर्श देने के साथ ही जागरूक भी किया गया। तो वहीं जनपद के ऐनम हास्पीटल से आएं हुए डाक्टरों की टीम के द्वारा भी नि:शुल्क चिकित्सा जांच किया गया जिसमें शूगर जांच, ब्लडप्रेशर व अन्य स्वास्थ्य से संबंधित जांच किए गए व स्वस्थ कैसे रहे के लिए उन सभी को परामर्श भी दिया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जय हिन्द मानवाधिकार एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष फीरोज अहमद के द्वारा इस अवसर पर क्षेत्र के कुछ बच्चों को स्कूल बैग देकर उन सभी का उत्साह वर्धन भी किया। वहीं कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि फिरोज अहमद को महासचिव राजकुमार चतुर्वेदी के द्वारा माल्यार्पण कर व बुकें भेंट कर सम्मानित किया गया वहीं कार्यक्रम में मौजूद राष्ट्रीय महासचिव राजकुमार चतुर्वेदी को मण्डल मिडिया प्रभारी तौसीफ अहमद के द्वारा माल्यार्पण कर वह बुकें भेंट करके सम्मानित किया गया, वहीं कार्यक्रम में मौजूद मण्डल मिडिया प्रभारी तौसीफ अहमद का जिले के कार्यकारिणी सदस्य पंचम बिंद के द्वारा माल्यार्पण कर व बुकें भेंट कर सम्मानित किया गया वहीं कार्यक्रम में मौजूद अन्य कार्यकर्ताओं, वरिष्ठ पदाधिकारियों को माल्यार्पण व बुकें भेंट कर सम्मानित किया गया। इस दौरान लगभग दो सौ लोगों का नेत्र जांच किया गया वह 150 लोगों का नि:शुल्क जांच किया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से मौजूद फिरोज अहमद, राजकुमार चतुर्वेदी, तौसीफ अहमद, एजाज अहमद, मो० जाबीर, शोएब अंसारी , सुरेश यादव, इम्तियाज अहमद, पंचम बिंद, रेखा गुप्ता, सावित्री देवी, खुशी बिंद, शहजाद अली आदि मौजूद रहे।

विभिन्न मामलों में वांछित चल रहे पांच वारंटी पुलिस गिरफ्त में

काशीपुर। विभिन्न मामलों में वांछित चल रहे पांच वारंटियों को न्यायालय से जारी वारंट के आधार पर पुलिस ने गिरफ्तार किया है। सभी आरोपियों को पुलिस ने न्यायालय के समक्ष पेश किया है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक उधमसिहं नगर के द्वारा वांछित अपराधियों एव वारंटियों की गिरफ्तारी हेतु चलाए गये अभियान के क्रम में पुलिस अधीक्षक काशीपुर ,क्षेत्रधिकारी काशीपुर के निर्देशन में कोतवाली पुलिस टीम द्वारा अलग-अलग मामलों में न्यायालयों से जारी गैर जमानती वारण्टों के अनुपालन में आरोपी अनस पुत्र अफसर अली निवासी गडडा कालोनी, प्रकाश पुत्र हेतराम निवासी बनवारी पेपर मिल के पीछे, काला सिंह पुत्र प्रेम सिंह निवासी जगतपुर, आरिफ पुत्र हनीफ निवासी मदर कालोनी बांस फोड़ान, शोएब उर्फ आलम पुत्र अमजद अली मौहल्ला महेशपुरा को गिरफ्तार किया गया है जिन्हे पुलिस ने न्यायालय के समक्ष पेश किया जा रहा है। गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में कोतवाली प्रभारी निरीक्षक अमरचंद शर्मा, उप निरीक्षक संतोष देवरानी, चंदन सिंह, सौरभ भारती, अपर उप निरीक्षक अजीत सिंह, हेड कांस्टेबल पियूष भट्ट कांस्टेबल अनिल कुमार धीरज कुमार कुलदीप सिंह त्रिभुवन सिंह आदि शामिल रहे।

सेन्ट जोसेफ कान्वेन्ट हाईस्कूल के बच्चों को खिलाया गया एल्बेन्डाजोल का टैबलेट

रॉबर्टसगंज, सोनभद्र। जिलाधिकारी बी0एन0 सिंह ने आज सेन्ट जोसेफ कान्वेन्ट हाईस्कूल के स्कूली बच्चों को पेट के कीड़े को मारने की दवा एल्बेन्डाजॉल का टैबलेट खिलाकर राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस का शुभारंभ किया। जिलाधिकारी ने स्कूल के बच्चों को राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस के महत्व को समझाते हुए कहा कि एल्बेन्डाजॉल दवा के खाने से किसी को भी किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं है, किन्तु इस दवा के खाने से पेट में उत्पन्न होने वाले कीड़े को नष्ट करने में काफी कारगर है, जो ये कीड़े हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक होते हैं। उन्होंने कहा कि 19 साल के सभी बच्चों/किशोर/किशोरियों को कृमि नियंत्रण की दवाई एल्बेन्डाजॉल की दवा सभी स्कूल और आंगनबाड़ी केन्द्रों में निःशुल्क खिलाई जायेगी। इसके साथ ही गैर पंजीकृत और स्कूल ना जाने वाले बच्चों को भी यह दवाई नजदीकी आंगनबाड़ी केन्द्र में खिलाये जाने की व्यवस्था की गयी है। जिलाधिकारी ने कहा कि ये कीड़े पेट में रहते हुए अपनी संख्या को बढ़ाकर जहर भी फैलाने का काम करते हैं। हम जो भी भोजन करते हैं, उसका ज्यादा हिस्सा ये कीड़े ले लेते हैं। जिससे पेट में मौजूद रहते हैं, किसके कारण अनेक प्रकार की बीमारी फैलाने के साथ ही शरीर में कमजोरी आती है। इसलिए पेट के कीड़े को नष्ट करने के लिए एल्बेन्डाजॉल दवा खाना अत्यन्त आवश्यक है। उन्होंने कहा कि सरकार का प्रयास है कि सबको एक साथ दवा खिलाया जाये, जिससे एक ही साथ कीड़े नष्ट हो जायें। पेट में रहने वाले इस कीड़े के सफाया के लिए साल में दो बार अभियान चलाकर सभी स्कूलों व आंगनबाड़ी केन्द्रों बच्चों को एल्बेन्डाजॉल दवा टैबलेट को खिलाया जाता है। पेट में पलने वाले इस कीड़े की आयु 6 महीने की होती है, जो दवा खाने से नष्ट हो जाते हैं। इसलिए इस दवा को सबको खाना है, जो भी बच्चे इस दवा को खा रहे हैं, वो अपने घर जाने के बाद आस-पास के लोगों को भी जागरूक करेंगें और उनको बतायेंगें इस दवा को हमने खाया है, दवा खाने के बाद किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं हुई है। इस मौके पर ए0सी0एम0ओ0 द्वारा दवा खाने के तरीके को बताते हुए कहा कि दवा को चूस कर खाया जाता है, इसके खाने से हमारे शरीर में किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं होती है। इसे महीने में दो बार खाने की आवश्यकता होती है। उन्होंने दवा खाने से बच्चों के मन में उठ सकने वाले वाले सवालों को इंगित करते हुए बारी-बारी से समझाया और जानकारी दी की पेट के अन्दर रहने वाले कीड़े कितने खतरा पैदा करता है, जिसका असर हमारे स्वास्थ्य पर पड़ता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से दो स्थानों पर नि:शुल्क होमियोपैथी केंद्र का शुभारंभ

काशीपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से दो स्थानों पर नि:शुल्क होमियोपैथी केंद्र का शुभारंभ किया गया है। जहां प्रत्येक रविवार को 10 से 12 बजे तक नि शुल्क इलाज किया जाएगा। रविवार को आरएसएस की ओर से केशव पुरम और बंसीयोवाला मंदिर के पास नि:शुल्क होमियोपैथी परमर्श केंद्र का शुभारंभ किया गया। केंद्र का शुभारंभ डा- यशपाल रावत व डा- अरविंद शर्मा की अध्यक्षता में किया गया। जहां मुख्य वक्ता इंद्र मोहन विभाग प्रचारक नैनीताल द्वारा होम्योपैथिक चिकित्सा की उपयोगिता व सेवा भारती द्वारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष में प्रत्येक सेवा बस्ती में सेवा कार्य शुरू किए जाने व विभिन्न सेवा कार्य के बारे में बताया गया। इस दौरान डा- गजेंद्र पाल सिंह, विभाग सेवा प्रमुख अरविंद राव, प्रांत सह संपर्क प्रमुख डा- अक्षय चौहान, वार्ड सभासद सीमा सागर, जिला कारवाह राजीव कौशिक, शुशांत विश्नोई, योगेश विश्नोई, सुनील शर्मा, प्रेम सिंह चौहान, प्रशान्त शर्मा, आदर्श चौधरी, अमित मित्तल, गोकुल सिंह, शशिपाल सिंह, आकाश गर्ग, महेश अग्रवाल, जिला प्रचारक अजय पनियाला, सुमित चौधरी, सुरेंद्र कोठारी आदि उपस्थित रहे।

दोपहिया वाहन चालक पीछे बैठी सवारी को भी लगवायें हेलमेट : जिलाधिकारी

बस्ती। संभाग के जनपदों के जिलाधिकारियों द्वारा शहरी क्षेत्र में दोपहिया वाहन चालकों को बिना हेलमेट के पेट्रोल पम्प पर पेट्रोल न देने के आदेश निर्गत किये गये हैं और परिवहन विभाग के द्वारा इस अभियान की सतत् मानिटरिंग की जा रही है। यातायात निदेशालय उ० प्र० के द्वारा उपलब्ध कराये गये आकड़ों से भी स्पष्ट है कि प्रदेश में सर्वाधिक मौतें दोपहिया वाहन चालकों की हेलमेट न लगाने के कारण हो जाती है। जब देश के अन्य भागों जैसे दिल्ली,बंगलौर आदि में उ० प्र० के लोग जाते हैं तो दोपहिया वाहन पर वाहन चालक व पीछे बैठी सवारी के द्वारा हेलमेट का प्रयोग किया जाता है । और यदि 04 वर्ष की उम्र तक के बच्चे को दोपहिया वाहन पर बैठाया जाता है तो उसके लिए भी हेलमेट लगाये जाने का प्राविधान है। परिवहन आयुक्त उ० प्र० के द्वारा उ० प्र० में हो रही सड़क दुर्घटनाओं में मौतों के दृष्टिगत दोपहिया वाहनों पर चालक एवं पीछे बैठी सवारी के बिना हेलमेट होने पर चालान करने के निर्देश दिये गये हैं। अत: संभाग के सभी जनपदों में लोगों से अपील है कि वे बी०आई०एस० मानक हेलमेट को अपने दोपहिया वाहन को चलाते समय प्रयोग करें एवं पीछे बैठी सवारी को भी अनिवार्य रूप से पहनायें। इसके साथ ही संभाग के सभी जनपदों में शीघ्र ही यह व्यवस्था भी सुनिश्चित की जायेगी कि कार्यालय में आने वाले लोग यदि दोपहिया वाहन से आते हैं तो बिना हेलमेट के न आयें और बिना हेलमेट के आने पर उन्हें कार्यालय में प्रवेश नहीं दिया जायेगा। इसी प्रकार का आदेश गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलपति ने विश्वविद्यालय में आने वाले समस्त अध्यापकों, कार्मिकों एवं विद्यार्थियों पर लागू किया है। यदि किसी भी पेट्रोल पम्प पर 'नो हेलमेट नो पेट्रोल' नियम का उल्लंघन किया जा रहा है तो इसकी सूचना संभाग में अपने जिले के सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी कार्यालय में या अधोहस्ताक्षरी को दी जा सकती है ताकि सम्बन्धित पेट्रोल पम्प के विरूद्ध विधिक कार्यवाही सुनिश्चित की जा सके।

क्षेत्रीय लोगों ने की आयुष्मान मित्र नियुक्त करने की मांग

जमालपुर,मिर्जापुर। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जमालपुर पर आयुष्मान योजना को कुशलता पूर्वक संचालित करने के लिए 3 वर्ष पहले सीएमओ मिर्जापुर द्वारा नियुक्त आयुष्मान मित्र विशाल कुमार सिंह का चयन करके सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर सेवा देने हेतु नियुक्त किया गया था। बता दें कि आयुष्मान योजना का कार्य राइटर इनफॉरमेशन एजेंसी के माध्यम से जिले में संचालित है। एजेंसी द्वारा 31 जनवरी को आयुष्मान मित्र विशाल कुमार सिंह को हटा दिया गया। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जमालपुर में आयुष्मान मित्र विशाल कुमार सिंह को हटा देने से क्षेत्रीय लोगों काआयुष्मान कार्ड नहीं बन पा रहा है ।जिससे क्षेत्रीय लोगों में शासन के प्रति आक्रोश व्याप्त है। क्षेत्रीय लोगों ने सीएमओ का ध्यान आकृष्ट कराते हुए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर जल्द से जल्द आयुष्मान मित्र नियुक्त करने की मांग किया।

बाल सुधार गृह में निरुद्ध बच्चों को क्षय विभाग ने किया जागरुक

मिर्जापुर। शासन के मंसानुशार जिले में चल रहे सौ दिवसीय सघन टीबी अभियान के दौरान सोमवार को नगर स्थित मोर्चा घर बाल सुधार गृह में निरुद्ध बालकों के बीच क्षय विभाग की जनपदीय टीम द्वारा जागरूक करने के साथ-साथ उनके बीच से संदिग्ध टीबी रोगीयों की खोज कर उन्हें इलाज पर लाने हेतु कार्यक्रम आयोजित किया गया।कार्यक्रम में क्षय विभाग के डिस्ट्रिक्ट कोऑर्डिनेटर सतीश शंकर यादव द्वारा निरुद्ध बालकों के बीच टीबी के संपूर्ण लक्षणों की जानकारी दी गई साथ-साथ सरकारी स्तर से उपलब्ध सभी निःशुल्क सुविधाओं को भी विस्तार से बताया गया। यादव द्वारा यह भी बताया गया कि अब पाए गए टीबी रोगियों को सरकार द्वारा 1000 रुपए प्रतिमाह खाते में दिया जा रहा है। यह धनराशि मरीज को पूरे इलाज अवधि तक निरंतर दिया जाएगा। अन्त में यादव द्वारा निरुद्ध बालकों से अपील किया गया कि आप सभी यहां से मुक्त होने के पश्चात अपने घर परिवार में जाने के पश्चात किसी भी व्यक्ति को बताए गए लक्षणों से यदि प्रभावित पाते हैं तो उन्हें सरकारी स्वास्थ्य केंद्र तक जांच इलाज हेतु भेजने का कार्य अवश्य करें जिससे कि प्रधानमंत्री के 2025 तक टीबी मुक्त भारत के सपने साकार होते माहौल में हम सभी जीवन यापन कर सकें।जागरूकता कैंप में टीबी लक्षण प्रभावित दो निरुद्ध बालक पाए गए जिनको विभाग द्वारा मास्क एवं बलगम जांच हेतु फाल्कन ट्यूब तत्काल दिया भी गया। इस दौरान क्षय विभाग के पंकज सिंह, अखिलेश पांडे, अवध बिहारी कुशवाहा आदि मौजूद रहे।

नवाचारी शिक्षण विधि द्वारा रुचिकर ढंग से पढाएं शिक्षक : संजय शुक्ल

बस्ती। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के सभागार में नवाचारी शिक्षण विधियों और गणित किट के प्रयोग हेतु एक दिवसीय प्रशिक्षण (फालोअप) सोमवार को दिया गया। जिसमें प्राथमिक स्तर के आठ ब्लाकों के 200 शिक्षक प्रशिक्षित किए गए। प्रशिक्षण का शुभारंभ डायट प्राचार्य संजय कुमार शुक्ल ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्ज्वलित करके किया। प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए डायट प्राचार्य ने कहा कि शिक्षक नवाचारी विधियों द्वारा रुचिकर ढंग से बच्चों को पढ़ाए। कहा कि प्रशिक्षण में शिक्षक मात्र एक माध्यम है । इसका प्रमुख उद्देश्य बच्चों को गणित किट के सही प्रयोग की जानकारी देना है। हमें पूरा भरोसा है कि हमारे बच्चे शिक्षकों के द्वारा गणित किट के बारे में बारीकी से सीख सकेंगे। प्रशिक्षण प्रभारी डायट प्रवक्ता अलाउद्दीन खान ने कहा कि प्रशिक्षण में सीखी गई विधाओं को शिक्षकों द्वारा अपनी कक्षाओं में लागू करना ही प्रशिक्षण की सार्थकता है। उन्होंने बताया कि प्रथम बैच में प्राथमिक स्तर के आठ ब्लाकों के 200 शिक्षक प्रशिक्षित किए गए हैं । मंगलवार को शेष ब्लॉकों के शिक्षकों का प्रशिक्षण होगा। प्रशिक्षण के सन्दर्भदाता हरेंद्र यादव,अनूप सिंह,बाल मुकुंद,अमरेंद्र चौधरी ने प्रतिभागियों को नवाचारी शिक्षण विधियों के साथ संख्या मापन,संख्या, संक्रियाएँ,आकृति पैटर्न एवं आकड़ा प्रबंधन से संबंधित अवधारणा आदि के बारे में विस्तार से बताया गया। इस अवसर डॉ गोविंद प्रसाद, डॉ रविनाथ त्रिपाठी, कुलदीप चौधरी, शशिदर्शन त्रिपाठी,कल्याण पाण्डेय, सरिता चौधरी,वर्षा पटेल,वंदना चौधरी,विवेक कान्त पाण्डेय,अजीत सिंह,मो. सलाम,रजनीश शर्मा,धनंजय, संजय कुमार, दिनेश मौर्य आदि उपस्थित रहे।

कृमि मुक्ति दिवस पर बच्चों को खिलाया गया एल्बेंडाजोल

जमालपुर, मिर्जापुर। विकास खंड जमालपुर के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के कर्मचारियों के द्वारा कंपोजिट विद्यालय जमालपुर के बच्चों को राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस के अवसर पर अल्वेंडाजोल की गोली खिलाई गई। विद्यालय में नामांकित 289 बच्चों में से उपस्थित 233 बच्चों को दवा खिलाया गया।बच्चों को संबोधित करते हुए सीएचसी प्रभारी जमालपुर डॉक्टर राजन सिंह ने कहा कि कृमि के कारण बच्चों को भूख नहीं लगना , पेट में दर्द होना और खून की कमी हो जाती है ।इसलिए शासन के द्वारा आज के दिन को 卐कृमि मुक्ति दिवस卐 के रूप में मनाया जाता है और बच्चों को मुफ्त दवा दिया जाता है। जिससे बच्चे स्वस्थ और प्रसन्न रहे। इस अवसर पर स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी अनुज कुमार वर्मा, सच्चिदानंद सिंह, प्रधानाध्यापक संतोष सिंह, काशी, संदीप सिंह, आंगनबाड़ी कर्मचारी, अध्यापक एवं बच्चे उपस्थित थे।

लक्ष्मी नारायण, भोलेनाथ व शक्ति स्वरूपा मां दुर्गा के मूर्ति की निकाली गई शोभायात्रा

दुद्धी, सोनभद्र। नगर पंचायत अंतर्गत कुशहवाछापर टोला ग्राम मलदेवा में नव निर्मित लक्ष्मी नारायण शिव शक्ति परिवार मन्दिर में स्थापित होने जा रहे भव्य मूर्ति स्थापना से पूर्व नगर भ्रमण हुआ। देवाधिदेव महादेव भोलेनाथ शंकर, पार्वती, विघ्न हरण भगवान गणेश, शिवलिंग,आदिशक्ति मां दुर्गा के मूर्ति की भव्य कलश शोभा यात्रा निकाली गई। जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं के बीच देवताओं की स्तुति वन्दन, वैदिक मंत्र उच्चारण के बीच धर्म ध्वज संवाहक पूज्य पुरोहित अपने मुख्य यजमान सहित अन्य यजमानों के साथ भक्तगणों की उपस्थिति में भगवान के जयकारा के साथ मूर्ति में आस्था का प्रदुर्भाव हुआ। इस पावन पुनीत पल के साक्षी गणेश लाल सोनी व अर्धांगिनी नंदनी देवी सोनी, यजमान संतोष कुमार जायसवाल व अर्धांगिनी संध्या जायसवाल, अशोक जायसवाल व अर्धांगिनी हेमा जायसवाल,अनिल जायसवाल की अर्धांगिनी अंजू जायसवाल ,अमरनाथ जायसवाल व अर्धांगिनी रिता जायसवाल सहित नगर पंचायत अध्यक्ष कमलेश मोहन,भोला आढ़ती, चंद्रिका आढ़ती पूर्व अध्यक्ष राजकुमार अग्रहरी,अरुण कुमार जायसवाल, दयाशंकर तिवारी, जितेन्द्र कुमार चन्द्रवंशी, गुलाब जायसवाल, शिव शंकर जायसवाल उर्फ मुन्नीलाल, राजेश जायसवाल,प्रधान प्रतिनिधि निरंजन जायसवाल,कन्हैया लाल अग्रहरी, पवन सिंह,, अमरनाथ जायसवाल उद्योग व्यापार मंडल अध्यक्ष, संदीप गुप्ता,दीपक जायसवाल सहित सैकड़ों मातृशक्ति इस पावन पल की साक्षी रहीं।

कृषि औद्योगिकीकरण के लिए 45 दिवसीय कृषि उद्यमिता प्रशिक्षण का हुआ प्रारम्भ

कमरौली अमेठी। कृषि औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देने के लिए सेन्टर आफ टेक्नोलाजी एण्ड इण्टरप्रिन्योरशिप डेवलपमेंट में प्रशिक्षण का आयोजन किया जा रहा है यह जानकारी देते हुए नोडल अधिकारी राकेश शुक्ला ने बताया कि यह प्रशिक्षण कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के प्रायोजन से तथा नेशनल इंस्टीयूट आफ एग्रीकल्चर एक्स्टेंशन मैनेजमेंट हैदराबाद के सक्रिय सहयोग से जगदीशपुर औद्योगिक क्षेत्र में स्थित सीटेड कार्यालय में 35 युवाओं हेतु प्रशिक्षण का शुभारम्भ सोमवार को डॉ नवनीत मिश्रा हेड कृषि विज्ञान केंद्र कठौरा जगदीशपुर व इंजी०संजय सिंह डायरेक्टर सीटेड द्वारा किया गया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि अशोक उपाध्याय शाखा प्रबंधक बड़ौदा उ-प ग्रामीण बैंक इन्हौना, संजय सिंह, मैनेजर बैंक ऑफ़ बड़ौदा इंडस्ट्रियल एरिया, डी०एन०मिश्रा, राकेश शुक्ला, ए०के०श्रीवास्तव, प्रज्वल सिंह, उपस्थित थे। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम 1० फरवरी से 29 मार्च तक आयोजित किया जाएगा।कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ नवनीत मिश्रा ने युवाओं से कहा कि एग्रीक्लिनिक का तकनीकी प्रशिक्षण सीखिए और एग्रीक्लिनिक की शाप खोलिए और किसानों को हर संभव मदद करिए, तभी विकास को गति मिल सकेगी। लाइसेंस बनवाने में सीटेड आपकी मदद करेगा।सस्थान के निदेशक इंजी संजय सिंह ने युवाओं का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि मैनेज संस्था द्वारा प्रदान किया जा रहा प्रशिक्षण बहुत ही उपयोगी हैं इसके माध्यम से आप कहीं भी अपनी इकाई की स्थापना कर सकते हैं। यह प्रशिक्षण नि:शुल्क हैं एवं आपको दिशा देने के लिए हैं इससे आप में आत्मविश्वास आएगा और अपने उद्योग को प्रारम्भ करने में सहूलियत मिल सकेगी।कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि अशोक उपाध्याय शाखा प्रबंधक ने कहा कि कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता बस आप पूरी शिद्दत के साथ कार्य करते हुए आगे बढ़े सफलता आपके कदम चूमेगी।बैंक ऑफ़ बड़ौदा से आए संजय कुमार सिंह ने कहा कि आप नपा तुला जोखिम लेते हुए अपनी परियोजना प्रपत्र के साथ अपडेट होकर बैंक जाए और बैंक को बताएं बैंक आपकी हर संभव मदद करेगी, बशर्ते आप पूरी दृढता व ईमानदारी के साथ कार्य करें।संस्था के संकाय सदस्य डी०एन०मिश्रा ने कहा कि निश्चित रूप से आप लोग स्नातक एवं योग्य हैं आप निश्चित योजना के साथ आगे बढे ये प्रशिक्षण आपको आगे बढने में मददगार होगा।इस अवसर पर नोडल अधिकारी राकेश शुक्ला ने बताया कि ये सभी प्रतिभागी कृषि संकाय से हैं और इनका चयन साक्षात्कार व वीडियो कांफ्रेसिंग के माध्यम से किया गया हैं, जो कि प्रशिक्षित होकर अपनी इकाई की स्थापना करेंगें। उन्होने शासकीय योजनाओं के बारे में जानकारी भी प्रदान की ।संस्था के संकाय सदस्य उदयनाथ मिश्रा ने कहा कि इस प्रशिक्षण का मुख्य उददेष्य आपके अन्दर उद्यमिता का विकास करना है जिससे कि प्रशिक्षित होकर आप अपनी इकाई की स्थापना कर सकते हैं।कार्यक्रम के समन्वयक प्रज्वल सिंह ने आए हुए सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालक अरविंद कुमार ने किया। इस मौके पर राजकमल, अर्जुन कुमार, विमल कुमार, दीपक कुमार, प्रशांत दीक्षित, नीरज पटेल, अमरेश साहू, मोहित, तबरेज आलम, रवि, सौरभ, ? प्रकाश, सुंदरम, वैभव आदि मौजूद रहे।

पुराने पैथोलॉजी कक्ष में इमरजेंसी भर्ती वार्ड बनने से मरीजों को सुविधा

काशीपुर। पुराने पैथोलॉजी कक्ष में इमरजेंसी भर्ती वार्ड बनने से मरीजों के कुछ देर रुकने की सुविधा हो सकेगी। इसके लिए अस्पताल प्रशासन प्रयास करने में लगा है। एलडी भट्ट राजकीय उपजिला चिकित्सालय में ब्लॉक पब्लिक हेल्थ यूनिट (बीपीएचयू) का नवनिर्मित भवन बनकर तैयार हो चुका है। चार फरवरी को अस्पताल की पैथोलॉजी लैब नए भवन में शिफ्ट कर दी गई है। यहां नमूना लेकर जांचें भी होने लगी हैं। अधिक जगह होने से कर्मियों को कार्य करने में आसानी हो रही है। इमरजेंसी चिकित्सक कक्ष के बराबर में खाली हुए पैथोलॉजी कक्ष को इमरजेंसी वार्ड बनाया जाएगा। इसके लिए अस्पताल प्रशासन की ओर से तैयारी की जा रही है। यह व्यवस्था होने से इमरजेंसी में दिखाने वाले मरीज को इस वार्ड में भर्ती किया जाएगा। आराम होने पर वह घर जा सकेगा या परेशानी लगने पर अंदर वार्ड में भी भर्ती किया जा सकेगा। अभी इमरजेंसी कक्ष में तीन स्ट्रेचर लगाए गए हैं।

नौकरी का झांसा देकर युवती से किया दुष्कर्म, आरोपी गिरफ्तार

तीसरा विकल्प न्यूज़ संवाददाता हरदोई

हरदोई। बेहटा गोकुल थाना पुलिस ने नौकरी का झांसा देकर युवती से दुष्कर्म करने वाले आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। प्रभारी निरीक्षक रमेश कुमार द्विवेदी के अनुसार सोमवार को एक युवती ने थानें पर तहरीर देकर रिपोर्ट दर्ज कराई। जिसमें कहा कि सीतापुर जिले के पिसावां थाना क्षेत्र के महमदापुर गांव निवासी रामजीवन ने उसे नौकरी का झांसा देकर उसके साथ गलत कार्य किया। इस तहरीर के आधार पर पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर आरोपी रामजीवन को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। गिरफ्तार करने वाली टीम में प्रभारी निरीक्षक रमेश कुमार द्विवेदी, उपनिरीक्षक बृजेश कुमार व कांस्टेबल राजीव कुमार आदि शामिल रहे।

प्रभारी मंत्री सतीश चंद्र शर्मा ने सीएचसी,गौशाला, कस्तूरबा विद्यालय और अमृत सरोवर का किया निरीक्षण

अमेठी। जिले के प्रभारी मंत्री और प्रदेश के खाद्य एवं रसद राज्यमंत्री सतीश चंद्र शर्मा सोमवार को एक दिवसीय दौरे पर अमेठी पहुँचे जहां उन्होंने बाजार शुकुल कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय, गौशाला, अमृत सरोवर और सीएचसी का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान मिली खामियों को दूर करने के लिए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।इस दौरान भाजपा जिला अध्यक्ष के अलावा भाजपा नेता और प्रसाशनिक अधिकारी मौके पर मौजूद रहे। जिले के प्रभारी मंत्री और प्रदेश के खाद्य एवं रसद राज्यमंत्री सतीश चंद्र शर्मा सोमवार को एक दिवसीय दौरे पर अमेठी पहुँचे।प्रभारी मंत्री ने सबसे पहले बाजार शुकुल सीएचसी का निरीक्षण किया उसके बाद कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय,गौशाला,अमृत सरोवर का निरीक्षण किया।निरीक्षण के दौरान मिली खामियों को दूर करने के लिए उन्होंने तत्काल सम्बंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।निरीक्षण के दौरान भाजपा जिलाध्यक्ष राम प्रसाद मिश्र,उपाध्यक्ष भवानी दत्त दीक्षित समेत बड़ी संख्या में भाजपा नेता और सीडीओ मौके पर मौजूद रहेइस दौरान उन्होंने कहा कि सरकार की मंशा है कि हर जरूरतमंद तक सरकार की योजनाएं पहुँचे और सरकार की मंशा के अनुरूप सभी जरूरतमंदों तक बिना भेदभाव के सरकार की योजनाएं पहुँच रहीं है।निरीक्षण के दौरान जो कमियां मिली है उसे भी दूर करने के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया गया है।

जनता दरबार मजार पर दबंगों द्वारा कब्जा करने की शिकायत

तीसरा विकल्प न्यूज़ ब्यूरो

धनबाद। उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी सुश्री माधवी मिश्रा ने मंगलवार को अपने कार्यालय कक्ष में जनता दरबार का आयोजन कर जिले के विभिन्न क्षेत्र से आए लोगों की शिकायतें सुनी। इसमें धनबाद रेलवे स्टेशन रोड, हिल कॉलोनी स्थित मजार की देखरेख करने वाली कमेटी के सचिव ने मजार पर दबंगों द्वारा जबरन कब्जा करने की शिकायत की। उन्होंने उपायुक्त को बताया कि उपरोक्त संपत्ति वक्फ बोर्ड की है। वक्फ बोर्ड ने इसकी देखरेख के लिए वर्ष 2017 में एक कमेटी गठित की है। कमेटी द्वारा देखभाल कर वहां विकास कार्य भी किया जा रहा है। परंतु कुछ दबंगों द्वारा कमिटी को दरकिनार कर वहां जबरन कब्जा कर मनमानी की जाती है। वहीं चरक कला से आई शहीद बी.एस.एफ. जवान की धर्मपत्नी ने अनुकंपा के आधार पर नियोजन देने का आवेदन दिया। निरसा के ग्राम पंचायत उरमा से आए व्यक्ति ने बीमारी का इलाज कराने के लिए सहायता राशि देने, मधुबनी -2 से आई महिला ने अबुआ आवास की पहली किस्त नहीं मिलने, परघाबाद सुदामडीह से आए व्यक्ति ने दबंगों द्वारा सरकारी भूमि पर जबरन कब्जा करने, बस्ताकोला से आई महिला ने पेंशन की रुकी हुई राशि जारी करने, बरवाअड्डा, लोहार बरवा से आए व्यक्तियों ने नाली निर्माण करने का आवेदन दिया। उपायुक्त ने सभी आवेदनों का निष्पादन करने के लिए संबंधित पदाधिकारी को निर्देश दिया। जनता दरबार में सहायक निदेशक सामाजिक सुरक्षा नियाज अहमद भी मौजूद थे।

प्रभारी मंत्री के अमेठी में प्रथम आगमन पर कार्यकर्ताओं ने गर्मजोशी के साथ किया स्वागत

अमेठी। राज्य मंत्री खाद्य एवं रसद तथा नागरिक आपूर्ति विभाग उत्तर प्रदेश सरकार सतीशचंद्र शर्मा सोमवार को एकदिवसीय दौरे पर अमेठी पहुंचे और विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल हुए जहां गौरीगंज स्थित जिला भाजपा कार्यालय पर प्रभारी मंत्री सतीश चंद्र शर्मा के पहुंचने पर कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों ने भाजपा जिलाध्यक्ष रामप्रासाद मिश्रा के नेतृत्व में गर्मजोशी के साथ उनका स्वागत किया। प्रभारी मंत्री ने भाजपा कार्यालय पर कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि आज मोदी जी एवं योगी जी के कार्यों की वजह से भाजपा दिन प्रतिदिन आगे बढ़ रही है मिल्कीपुर एवं दिल्ली विधानसभा में प्रचंड जीत लिए सभी कार्यकर्ताओं को शुभकामनाएं प्रेषित किया। एवं नव नियुक्त सभी उपस्थित मण्डल अध्यक्ष को बधाई दी और कहा कि हम सभी लोग बूथ स्तर पर भाजपा के सभी पुराने वरिष्ठ व नौजवान कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर संगठन को मज़बूत करेंगे और अमेठी की सभी चारों विधानसभा सीटों पर कमल खिलाने का संकल्प दिलाया। उन्होंने आगे कहा कार्यकर्ता संगठन की रीड की हड्डी है, कार्यकर्ताओं के बल पर आज भारतीय जनता पार्टी देश ही नहीं अपितु दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बन चुकी है। उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारी को अश्वस्त करते हुए कहा कि प्रभारी मंत्री के नाते मैं 24 घंटे अमेठी के कार्यकर्ताओं के सुख-दुख में खड़ा रहूंगा, कार्यकर्ताओं का किसी प्रकार का शोषण और उत्पीड़न नहीं होने पायेगा, उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा संचालित सभी योजनाओं का लाभ शत् प्रतिशत आम नागरिक तक पहुंचे इसको लेकर सभी अधिकारियों, कर्मचारियों के साथ बैठक करते हुए विकास कार्यों की समीक्षा की जाएगी। साथ ही साथ कार्यकर्ताओं से भी वार्ता करते हुए उनकी समस्त समस्याओं का समाधान किया जाएगा।प्रवक्ता चन्द्रमौलि सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि उपस्थित सभी पदाधिकारी एवं मण्डल अध्यक्षों ने प्रभारी मन्त्री का माल्यार्पण कर स्वागत किया।इस अवसर पर सभी पार्टी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

ट्रांजिट शाखा के प्रधान लिपिक के निधन पर शोक सभा का आयोजन

तीसरा विकल्प न्यूज़ ब्यूरो

धनबाद। समाहरणालय के पारनयन (ट्रांजिट) शाखा के प्रधान लिपिक स्वर्गीय कृष्णेंदु चौधरी के निधन पर मंगलवार को उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी सुश्री माधवी मिश्रा की अध्यक्षता में शोक सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर दिवंगत की आत्मा की शांति के लिए 2 मिनट का मौन रखा गया। साथ ही ईश्वर से शोक संतप्त परिवार को इस अपूर्णीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई। स्वर्गीय कृष्णेंदु चौधरी पिछले कुछ दिनों से बीमार थे। ईलाज के दौरान 9 फरवरी 2025 को सीएमसी वेल्लोर में उनका आकस्मिक निधन हो गया। स्वर्गीय कृष्णेंदु चौधरी को श्रद्धांजलि देते हुए उपायुक्त ने कहा कि वह एक कर्मठ, अनुशासन प्रिय एवं व्यवहार कुशल प्रधान लिपिक थे। सभी पदाधिकारी एवं सहकर्मियों के साथ उनका संबंध बहुत ही अच्छा था। शोक सभा में एडीएम लॉ एंड ऑर्डर पीयूष सिन्हा, एडीएम सप्लाई जियाउल अंसारी, निदेशक डीआरडीए राजीव रंजन, सहायक निदेशक सामाजिक सुरक्षा नियाज अहमद, एनडीसी दीपक कुमार दुबे, कार्यपालक दंडाधिकारी नारायण राम, रविन्द्र कुमार ठाकुर, सहायक नगर आयुक्त प्रसून कौशिक के अलावा सभी कार्यालय के प्रधान लिपिक व कर्मचारी उपस्थित थे।

आलोक सीतापुरी की सातवीं कृति हंसी और मुस्कान का भव्य लोकार्पण

सीतापुर। आलोक लोक सेवा संस्थान के तत्वावधान में सिविल लाइंस स्थित भगवान चित्रगुप्त मंदिर के सभागार में एक भव्य लोकार्पण समारोह का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता करते हुए प्रसिद्ध व्यंग्यकार अरुणेश मिश्र ने कहा, आपाधापी के आज के इस कठिन दौर में किसी के चेहरे पर दो पल की मुस्कान लाना अत्यंत दुष्कर कार्य है जिसे अपनी इस पुस्तिका के माध्यम से आलोक जी ने अत्यंत ही कुशलता से निभाया है अतः वास्तव में ये साधुवाद के पात्र हैं। मुख्य अतिथि महेंद्र यादव, पूर्व विधायक ने कहा, अभी सरसरी तौर पर इसका अध्ययन करने के उपरांत मुझे यह अनुभूति हुई है कि हास्य-व्यंग्य पर आधारित इस पुस्तिका के माध्यम से कवि अपने उद्देश्य में पूर्णतया सफल हुआ है। मैं उसके दीर्घायु एवं स्वस्थ जीवन की कामना करता हूं। इंजी. अम्बरीष श्रीवास्तव अम्बर ने कहा, आलोकित कर हास्य से, दिया वही उपहार। हीमोग्लोबिन जो यहां, बढ़ा रहा सौ बार। बढ़ा रहा सौ बार, गुदगुदा देता पल पल। छाए स्मित मुस्कान, दूर रह जाता छल-बल। अम्बर करता स्वस्थ, खोलता दृग उन्मीलित। हँसी और मुस्कान, जगत इससे आलोकित।। के. बी. श्रीवास्तव ने कहा, आलोक जी की रचनाओं में हास्य के साथ-साथ चुटीले व्यंग्य भी हैं जो कि गुदगुदाकर धीमे से बगल से निकल जाते हैं। इन पर मां सरस्वती की बहुत कृपा है वास्तव में अच्छी किताबें और अच्छे लोग तुरंत समझ में नहीं आते इन्हें पढ़ना पड़ता है। कुंवर योगेंद्र बहादुर सिंह उर्फ आलोक सीतापुरी ने कहा, इस पुस्तक के माध्यम से आमजन की रोजमर्रा की जिंदगी में घटित होते हुए हास्य बिंदुओं को एक काव्यात्मक माला में पिरोकर मैंने आपके सम्मुख रखने का प्रयास किया है। यह पुस्तक आपके उदास हृदय को प्रफुल्लित अवश्य करेगी ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। विशिष्ट अतिथि के रूप में अवनीश त्रिवेदी अभय ने कहा, जल रहे घर का तमाशा नहीं देखा हमने, साथ चलने में मुनाफा नहीं देखा हमने। उपरोक्त के साथ-साथ डॉ. सतीश चंद्र वर्मा, शिव प्रताप सिंह चौहान शौर्य, अंबिका तिवारी अंबुज, नीरज शुक्ला, राजेश कुमार श्रीवास्तव, राम किशोर श्रीवास्तव, अरुण शर्मा, शिवांश सिंह सुंदरम, बिंदु प्रभा, सुनीता यादव, सुमन मनीष मिश्रा, अरुण अवध, अयोध्या प्रसाद गौतम एवं गीता किशोर, संजीव द्विवेदी आदि ने उपरोक्त पुस्तक पर काव्य के माध्यम से अपने-अपने श्रेष्ठतम विचार व्यक्त किए।

आजाद चश्मा घर का किया गया उद्घाटन

20 मरीजों का किया गया नि:शुल्क जांच

नरायनपुर, मिर्जापुर। रसूलागांज स्थिति आजाद चश्मा घर का उद्घाटन फीता काटकर मुख्य अतिथि कमलेश्वर नाथ शर्मा पूर्व नगर अध्यक्ष के द्वारा किया गया।डी ए ए सिद्दिकी ने बताया आजाद चश्मा घर में क्षेत्र के मरीजों का कम खर्च में बेहतर इलाज उपलब्ध होगा ।इस दौरान नुरुल शेख , डा. ए. ए. सिद्दीकी, रईस अहमद, डा. वकार वारसी, डा. मुनीर नज़्म सिद्दीकी, पत्रकार रज्जब खान, सरवरी बानो, शेर बहादुर आदि उपस्थित रहे।

धनबाद में बाबा तिलका मांझी चौक बना संथाल विद्रोह के प्रणेता भारत के प्रथम स्वतंत्रता सेनानी बाबा तिलका मांझी जी के प्रतिमा अनावरण

तीसरा विकल्प न्यूज़ ब्यूरो

धनबाद । तिसरा, मंगलवार को प्रथम स्वतंत्रता सेनानी का धनबाद में बाबा तिलका मांझी चौक गोल बिल्डिंग के पास संथाल विद्रोह के प्रणेता भारत के प्रथम स्वतंत्रता सेनानी बाबा तिलका मांझी जी के प्रतिमा अनावरण में झारखंड के प्रथम मुख्यमंत्री व भजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी, धनबाद के विधायक राज सिंहा झरिया विधायक श्रीमति रागनी सिंह , भजपा के प्रदेश मंत्री गणेश मिश्र सिंदरी के पूर्व विधायक इंद्रजीत महतो की धर्मपत्नी सह भाजपा नेत्री श्रीमती तारा देवी जी निरसा के पूर्व विधायक अपरणा शेन गुप्ता वरिष्ठ भजपा नेता विकाश कुमार महतो राजकुमार अग्रवाल ग्रामीण जिला अध्यक्ष घनश्याम ग्रोवर के अलावे अन्य गणमान्य नेताओ द्वारा उपस्थित हो कर माल्यार्पण व श्रद्धासुमन अर्पित की गई।

भाजयुमो नेता ने डीएम को ज्ञापन सौंपकर किया डाक्टर के खिलाफ कार्यवाही की मांग

बस्ती। जिले में भानपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पर तैनात चिकित्साधिकारी सचिन चौधरी की गतिविधियों से सरकार की छबि खराब हो रही है और नि:शुल्क स्वास्थ्य सेवाओं के दावे पर सवाल उठ रहे हैं। भारतीय जनता युवा मोर्चा के जिलाध्यक्ष अमित गुप्ता ने लगातार मिल रही शिकायतों का सज्ञान लेते हुये जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपकर समस्याओं के समाधान व चिकित्सक की कार्यशैली सुधारने हेतु निर्देश देने का आग्रह किया है।अमित गुप्ता ने ज्ञापन के माध्यम से जिला प्रशासन को अवगत कराया कि सीएचसी भानपुर में मेडिकल अफसर के द्वारा बाहरी दवाइयां धड़ल्ले से लिखी जा रही हैं। जानकारी मिली है कि गांव देहात की गरीब असहाय जनता इलाज का खर्च उठाने में सक्षम नही है। इससे सरकार की छबि खराब हो रही है और गरीब असहाय लोग कर्जदार हो रहे हैं। इतना ही नही यहां तैनात मेडिकल अफसर डा. सचिन कुमार के रात्रि निवास न करने से आकस्मिक सेवायें बाधित रहती हैं। लेकिन डाक्टर के खिलाफ कोई कार्यवाही न होने से वह निडर होकर स्वास्थ्य सेवाओं का मजाक उड़ा रहे हैं। पता चला है डाक्टर दिन में अनाधिकृत तरीके से धन उगाही करते हैं और रात्रि में अस्पताल में निवास करने की बजाय जिला मुख्यालय चले आते हैं। उनका सारा ध्यान निजी अस्पताल खड़ा करने में लगा है। इससे पहले की जनाक्रोश सामने आये डाक्टर के विरूद्ध कार्यवाही बेहद जरूरी है। भाजयुमो अध्यक्ष ने कहा डाक्टर सचिन चौधरी का दवा की दुकानों से सांठ-गांठ का प्रकाश में आ रहा है। उन्हे अनैतिक लाभ पहुचाने के इरादे से वे बाहर की दवाइयों परचों पर धड़ल्ले से लिख रहे हैं। इस रोक लगाया जाना जरूरी है। उन्होने यह भी कहा कि कार्यवाही न होने पर प्रकरण को उच्च स्तर पर ले जायेंगे।

उत्तरांचल स्वच्छकार कर्मचारियों ने महापौर को सौंपा 6 सूत्रीय मांगों का ज्ञापन

काशीपुर। उत्तरांचल स्वच्छकार कर्मचारी संघ काशीपुर के बैनर तले आज दर्जनों कर्मचारियों ने नगर निगम पहुंचकर नवनियुक्त महापौर दीपक बाली को नगर आयुक्त के नाम संबोधित 6 सूत्रीय मांगों एक ज्ञापन सोपा। ज्ञापन के माध्यम से महापौर को अवगत कराया की मृतक आश्रितों की नियुक्ति नियमानुसार कराई जाए, निगम का पिछले कई वर्षों से रुका हुआ एसीपी का लाभ नहीं मिला है उसको शीघ्र वेतन में लगाते हुए नगद एरियर का भुगतान किया जाए, पिछले 1० वर्षों से अधिक रुकी हुई गर्भ में ठंडी वर्दीया शीघ्र दी जाए, शैक्षिक पर्यावरण मित्रों को वरीयता देते हुए उनकी सीनियरिटी के आधार पर लिपिक सहायक लिपिक एवं पर्यावरण पर्यवेक्षक के पदों पर कार्य देना सुनिश्चित किया जाए, नगर निगम में कार्यरत समस्त पर्यावरण मित्रों के गोल्डन कार्ड शीघ्र बनवाए जाएं और नगर निगम क्षेत्र के बड़े हुए विस्तार को देखते हुए सफाई कर्मचारियों की अस्थाई नियुक्ति की जाए इन सभी मांगों का एक ज्ञापन सोपा गया। महापौर दीपक बाली ने सभी कर्मचारियों को आश्वस्त किया कि वह जल्द ही इस पर संज्ञान लेंगे।

हमीरपुर में घरेलू कलह से क्षुब्ध दंपति झूले फांसी पर

हमीरपुर। सदर कोतवाली के मेरापुर मोहल्ले में घरेलू कलह की वजह से दंपति ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सुबह पत्नी को फंदे में लटका देख पति ने दूसरे कमरे में स्टॉल से फांसी लगा ली। दंपति के फांसी लगाकर आत्महत्या करने की घटना से मोहल्ले में सनसनी मच गई। पुलिस ने दोनों के शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया है।मेरापुर मोहल्ला निवासी 35 वर्षीय रामू वर्मा का रविवार की रात किसी बात को लेकर 27 वर्षीय पत्नी रूबी से विवाद हो गया था। रामू अपने कमरे में जाकर सो गया और रूबी ने तैश में आकर दूसरे कमरे में फांसी लगा ली। सुबह छह बजे के आसपास सोकर उठे रामू ने जब पत्नी को फांसी के फंदे में लटका देखा तो उसने भी दूसरे कमरे में जाकर स्टॉल से फांसी लगा ली। दंपति के फांसी लगाकर आत्महत्या करने की खबर से क्षेत्र में सनसनी मच गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने दोनों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया है। मृतक दंपति अपने पीछे दो मासूम बच्चों चार वर्षीय प्रांशु और तीन वर्षीय अरव को बिलखता छोड़ गए हैं। इस संबंध में सीओ सदर राजेश कमल कहना है कि शुरुआती जांच में घरेलू कलह की वजह से दंपति ने फांसी लगाकर आत्महत्या की है। शादी समारोह में गए थे घर के सदस्य रूबी और रामू के अलग-अलग समय में आत्महत्या करने की घटना के दौरान घर पर मृतक का भाई और उसकी पत्नी अपने कमरे में थे, जबकि उसकी मां रामरती और दो अन्य भाई सोनू, सुनील किसी शादी समारोह में शामिल होने के लिए पांच फरवरी से बाहर थे। अचानक हुई इस घटना से परिवार में कोहराम मच गया। रामू दिहाड़ी मजदूरी करके अपने परिवार का भरण-पोषण करता था।

गुल पनाग

मुझे कभी भी अपनी बात रखने का नुकसान नहीं उठाना पड़ा

गुल पनाग ने लगभग दो दशक पहले मिस इंडिया बनने के बाद फिल्मी करियर की शुरुआत की थी। उन्होंने चुनिंदा काम किया है, जिसमें महिला सशक्तिकरण को महत्व दिया। वे महिलाओं के अधिकारों के लिए मानसिकता बदलने की आवश्यकता पर जोर देती हैं। गुल पनाग ने ओटीटी पर अपने किरदारों से नया रूप पाया गुल पनाग महिलाओं को खुद को सीमाओं में नहीं बंधने के लिए प्रेरित करती हैं गुल पनाग का मानना है कि बेबाकी से राय रखने में डरने की जरूरत नहीं आज से तकरीबन दो दशक पहले गुल पनाग ने मिस इंडिया बनने के बाद फिल्म शधूपश् से अपने फिल्मी जीवन का आगाज किया था। मगर बीते सालों में उन्होंने काफी चुनिंदा काम किया। चुनिंदा काम करने का कारण वे बताती हैं, शमुझे लगता है कि जो भूमिकाएं आपको आकर्षित करें, आपको उन भूमिकाओं से जुड़ना चाहिए। मुझे खुशी है कि मैंने जितना भी काम किया है, वह पसंद किया गया और उस काम ने मुझे खुशी दी। मेरी ग्लैमरस इमेज भी काफी हावी रही मगर ओटीटी में मेरे चरित्रों ने उस अवधारणा को भी तोड़ा और मैंने ही नहीं, बल्कि दर्शकों ने भी मुझे नए तरीके से खोजा।श श्लड़कियों की अपनी सोच रुकावट पैदा करती हैश फिल्में हों या वेब सीरीज, गुल पनाग ने हमेशा से महिलावादी किरदारों को जीवंत किया है। वे निजी जिंदगी में एक एनजीओ भी चलाती हैं जो जेंडर इक्वैलिटी, शिक्षा, समानता जैसे मुद्दों पर काम करता है। महिला मुद्दे पर वे अपनी राय कहती हैं, श्लड़कियों को लेकर मुझे जो बात सबसे ज्यादा परेशान करती है, वह ये कि वे स्वयं को सीमाओं के अंदर बांधकर खुद के दायरे बना लेती हैं। देखिए महिलाओं के लिए सामाजिक दायरे तो होते ही हैं, फिर उसके भीतर वे अपनी तरक्की और सोच का दायरा संकुचित क्यों कर लेती हैं? उनकी यही सोच उनकी उन्नति में रुकावट बन जाती है। सदियों से हम लड़कियों की एक खास तरह से कंडीशनिंग की गई हैं कि ऐसे रहो, ये मत करो, वह मत करो और इन हदों में हम खुद के लिए और हद बनाकर बंध जाते हैं। हम लड़कियों को अपने दायरे कभी सेट नहीं करने चाहिए। उल्टा समाज के दायरों को तोड़ कर आगे बढ़ना होगा।श श्मुझे स्टैंड लेने का खामियाजा कभी नहीं भुगतना पड़ाश गुल पनाग अपनी बेबाकी के लिए भी खूब जानी जाती हैं। वे सामाजिक या राजनैतिक मुद्दों पर अपनी राय रखने से हिचकिचाती नहीं हैं। क्या उन्हें इसका कभी खामियाजा भुगतना पड़ा है? इस सवाल पर वे कहती हैं, श्मुझे लगता है कि ये संभव है कि आप अपने विचार रखें और लोगों को आहत करने की कोशिश न करें। मैं राजनीति की बात नहीं कर रही। मैं सामाजिक ध्रुवीकरण की बात कर रही हूं। कई बार लोग हटकर दिखने या बनने के लिए अपना पक्ष रखते हैं। बुनियादी तौर पर मेरा मानना है कि आप बिना आक्रामक और कठोर बने अपनी बात कह सकते हैं। मैंने जब भी अपना पक्ष रखा है, उन सामने वाले के नजरिए को समझते हुए रखा है। मुझे कभी भी नैतिक या सिद्धांतवादी मुद्दों पर अपना पक्ष रखने का खामियाजा नहीं भुगतना पड़ा। मैंने कई लोगों से सुना है कि अपनी बात रखने पर उनके साथ उत्पीड़न हुआ, मगर मुझे कभी भी अपनी बात रखने का नुकसान नहीं उठाना पड़ा। सभी जानते हैं कि मैं किस बारे में बात कर रही हूं। मैं इस वक्त उस मुद्दे पर बात नहीं करना चाहती, मगर इतना जरूर कहूंगी कि जब भी अपना मत रखती हूं, पब्लिसिटी या लोगों को तंग करने के लिए नहीं रखती।श वर्तमान में जीने में यकीन करती हूं मिस इंडिया का खिताब जीत चुकी गुल ऐक्ट्रेस होने के साथ-साथ कमर्शल पायलट, बाइक राइडर भी हैं, राजनीति में रुचि रखती हैं और महिला मुद्दों को लेकर एनजीओ भी चलाती हैं। असल जिंदगी में वे मां भी हैं। उन्हें सबसे ज्यादा मजा किस काम में आता है? इस सवाल के जवाब में वे कहती हैं, श्मैं भले कई चीजों में माहिर हूं, मगर हमेशा उस पल में जीना पसंद करती हूं, जो उस वक्त चल रहा होता है। आपको भले ये फलसफा लगेगा, मगर ये सच है कि इससे पहले जो हुआ, वह बीत चुका है और जो होने वाला है, वह हमें पता नहीं, मगर ये जो चल रहा है, ये मेरी जिंदगी का अहम मोमेंट है। जब मैं बाइक राइड करती हूं, तो उसके मजे लेती हूं। जब घर पर होती हूं, तो वह पल मेरे लिए बहुत जरूरी होता है। मैं जब, जिस पल लोगों के साथ रहती हूं, उन्हें वक्त देती हूं, उन्हें प्रोत्साहित करती हूं और उस वक्त को अपने साथ-साथ दूसरों के लिए भी यादगार बनाती हूं।श मेरा किरदार श्मनोरमा सिक्स फीट अंडरश् से प्रभावित है गुल पनाग ने ओटीटी पर द फैमिली मैन, रंगबाज फिर से, गुड बैड गर्ल, पाताल लोक सीजन वन और टू में काम किया है। अपनी नई वेब सीरीज में भूमिका के बारे में वह कहती हैं, श्सीजन वन में मेरी भूमिका अगर लोगो को पसंद आई, तो इसका श्रेय इसके क्रिएटर सुदीप शर्मा और अविनाश को जाता है। इस किरदार को लिखा काफी खूबसूरती से है। छोटा किरदार होने के बावजूद यह अपनी छाप छोड़ने में कामयाब रहा। एक अभिनेत्री के रूप में मेरी खोज यही रहती है कि मैं ऐसे चरित्र निभाऊं, जो या तो मैंने पहले अनुभव नहीं किए हैं या फिर जो मैंने अपने आस-पास देखे नहीं हैं। रेनू जैसा किरदार मैंने कभी अदा नहीं किया था। गुल पनाग के रूप में मेरी जो छवि है, मेरा चरित्र उससे काफी अलग है। इस सीरीज को देखने वाले कई लोगों ने मेरी भूमिका देखा कर कहा, श्ओह, वह तुम थी!श् तो मेरी भूमिका ने उन्हें इस कदर चौंकाया। इससे थोड़ा मिलता-जुलता किरदार मैंने निभाया था, मनोरमा सिक्स फीट अंडर में। सुदीप उसी चरित्र से प्रभावित थे। मेरे लिए पाताल लोक मेरी जिंदगी और माइंड की वह जगह है, जहां आप दोबारा नहीं जाना चाहते। भगवान और शैतान दोनों ही हमारे भीतर होता है, मगर हम शैतान को नहीं देखना चाहते।श

रश्मिका मंदाना ने विजय देवरकोंडा का किया बचाव!

रश्मिका मंदाना ने हाल ही में सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर किया, जिसमें उन्होंने सभी से दयालु बनने की अपील की। एक्ट्रेस की इस पोस्ट से फैंस अंदाजा लगा रहे हैं कि उन्होंने यह पोस्ट अपने रूमर्ड बॉयफ्रेंड विजय देवरकोंडा के बचाव में की है। दरअसल, रश्मिका और विजय का एक वीडियो वायरल हुआ था, जिसमें उनकी मदद न करने के कारण एक्टर को ट्रोल किया गया था। अपने इंस्टाग्राम पर रश्मिका मंदाना ने बुधवार को दो तस्वीरें शेयर कीं। इनमें एक्ट्रेस ने एक सफेद रंग की टी-शर्ट पहनी है, जिस पर श्काइंडफुलश् लिखा हुआ है। इसके कैप्शन में उन्होंने लिखा, 'आजकल दयालुता को कम समझा जाता है। मैं दयालुता और इससे जुड़ी हर चीज को अपनाती हूं। आइए हम सब एक-दूसरे के प्रति दयालु बनें।' एक्ट्रेस की मदद ना करने पर हुए थे ट्रोल विजय और रश्मिका का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था, जिसमें वे दोनों कहीं से बाहर निकलते हुए दिखाई दे रहे थे। इस दौरान रश्मिका वॉकर के सहारे चल रही थीं, जबकि विजय बिना उनकी मदद किए सीधे आगे बढ़े और अपनी कार में जाकर बैठ गए। इसके बाद ही फैंस ने विजय को उनकी रूमर्ड गर्लफ्रेंड की मदद ना किए जाने पर ट्रोल कर दिया था। इन फिल्मों में नजर आएंगी रश्मिका रश्मिका मंदाना की आखिरी रिलीज हुई फिल्म 224 की ब्लॉकबस्टर हिट श्पुष्पा 2श थी। जल्द ही एक्ट्रेस फिल्म श्सिकंदरश् और श्छावाश् में नजर आएंगी। ए. आर. मुरुगदोस के निर्देशन में बन रही फिल्म श्सिकंदरश् में रश्मिका, सलमान खान के साथ लीड रोल में दिखेंगी, जबकि श्छावाश् में वह विक्की कौशल के अपोजिट नजर आएंगी।

करोड़ों की मालकिन हैं नोरा फतेही

अपने डांस मूव्स से सभी को दीवाना बनाने वाली नोरा फतेही आज किसी पहचान की मोहताज नहीं हैं. इस रिपोर्ट में हम आपको उनकी लैविश लाइफ से रूबरू करवा रहे हैं. अपने डांस मूव्स से सभी को दीवाना बनाने वाली नोरा फतेही आज किसी पहचान की मोहताज नहीं हैं. इस रिपोर्ट में हम आपको उनकी लैविश लाइफ से रूबरू करवा रहे हैं. बॉलीवुड में नाम कमाना हर किसी के बस की बात नहीं हैं. यहां हर दिन हजारों लोग एक्टर बनने आते हैं. आज हम जिसकी बात कर रहे हैं. वो विदेश से सिर्फ पांच हजार रुपए लेकर मुंबई अपना सपना पूरा करने आई थी. फिर काफी स्ट्रगल के बाद एक्ट्रेस को इंडस्ट्री में काम करने का मौका मिला और फिर उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा. हम बात कर रहे हैं खूबसूरत एक्ट्रेस और बेहतरीन डांसर नोरा फतेही की. जो अपने लटके-झटकों से सिर्फ फैंस ही नहीं कई बड़े बॉलीवुड सेलेब्स को भी दीवाना बना चुकी हैं. लेकिन एक्ट्रेस के लिए यहां तक का सफर काफी संघर्षों से भरा रहा था. इसका खुलासा कई बार नोरा अपने इंटरव्यूज में कर चुकी हैं. वहीं एक बार मैशबल इंडियन से बात करते हुए नोरा ने बताया था कि जब वो इंडिया आई थी तो उनकी जेब में सिर्फ 5 हजार रुपये थे. एक्ट्रेस ने खुलासा किया था कि इंडिया आने के बाद उन्होंने काफी स्ट्रगल किया. शुरुआत में वो 9 लड़कियों के साथ एक 3 बीएचके अपार्टमेंट में रहा करती थीं. लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और लगातार ऑडिशन देती रही. बता दें कि काफी स्ट्रगल के बाद नोरा ने साल 2014 में फिल्म श्रोर रू टाइगर्स ऑफ द सुंदरबंसश् से बॉलीवुड में डेब्यू किया था. इसी बीच वो श्बाहुबली रू द बिगनिंगश् के डांस नंबर श्मनोहारीश् में नजर आई थी. वहीं इसके बाद नोरा ने सलमान खान के रिएलिटी शो श्बिग बॉस 9श् में बतौर कंटेस्टेंट हिस्सा लिया. इस शो से नोरा को खूब स्टारडम मिला. श्बिग बॉस 9श् से बाहर आने के बाद नोरा फतेही ने कई म्यूजिक एल्बम और डांस नंबर में अपनी डांसिंग स्किल दिखाई. जिसमें दिलबर दिलबर, हाय गर्मी जैसे गाने शामिल है. ये सभी सुपरहिट रहे थे. कभी पांच हजार के साथ मुंबई आने वाली नोरा फतेही आज एक गाने के लिए 15 से 20 लाख की फीस चार्ज करती हैं. इसके अलावा ब्रांड एंडोर्समेंट से भी उनकी मोटी कमाई होती है. इसके साथ ही नोरा कई डांस रिएलिटी शोज को जज भी कर चुकी हैं. इसके लिए भी वो मोटी फीस चार्ज करती हैं. रिपोर्ट्स की मानें तो नोरा आज करीब 40 करोड़ की संपत्ति की मालकिन हैं.

मुझे लगता है रणजी ट्रॉफी... इंग्लैंड के खिलाफ2 मैच में 6 विकेट लेने के बाद बोले रविंद्र जडेजा

ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा ने रविवार 9 फरवरी 2025 को इंग्लैंड के खिलाफ चल रही वनडे सीरीज से पहले लय में आने का श्रेय घरेलू टूर्नामेंट को दिया। इंग्लैंड के खिलाफदो मैच में जडेजा ने न केवल बल्लेबाजी करते हुए मैच को खत्म किया, बल्कि 6 विकेट भी चटकाए और बीच के ओवरों में विपक्षी टीम की रन गति पर भी लगाम लगाई। रविंद्र जडेजा ने भारत की 4 विकेट की जीत के बाद कटक में संवाददाताओं से कहा, मैं विश्व कप फाइनल के बाद लगभग दो सालमें पहली बार खेल रहा हूं। मुझे इस प्रारूप की आदत डालनी होगी। मुझे लगता है कि घरेलू टूर्नामेंट ने मेरी काफी मदद की है। इस मैच से पहले रविंद्र जडेजा ने रणजी ट्रॉफी के दो मैच खेले थे। रविंद्र जडेजा ने रणजी ट्रॉफी में दिल्ली के खिलाड़ी 30 ओवर गेंदबाजी की और 10 विकेट लिए, जबकि असम के खिलाफ उन्होंने गेंदबाज नहीं की थी। रविंद्र जडेजा ने कहा कि, मैंने रणजी ट्रॉफी में 30 से ज्यादा ओवर गेंदबाजी की इसलिए लय में निरंतरता थी। चाहे टेस्ट मैच हो या वनडे, मैं एक ही लाइन और लेंथ पर गेंदबाजी करने की कोशिश करता हूं। लय में निरंतरता थी क्योंकि ब्रेक बहुत लंबा नहीं था। मुझे लगता है कि घरेलू खेल ने मेरी बहुत मदद की। रविंद्र जडेजा ने उन पांच स्पिनर्स में से एक हैं, जिन्हें भारत ने चौंपियंस ट्रॉफी के लिए 15 सदस्यीय टीम में चुना है। उन्होंने कहा कि, ये अच्छी बात है कि हम खेलने जा रहे हैं। जब हम वहां जाएंगे तो पता चलेगा कि विकेट कैसा होगा। लेकिन अगर स्पिन विभाग अच्छा प्रदर्शन कर रहा है तो मुझे लगता है कि ये टीम के लिए अच्छा है। रविंद्र जडेजा ने बताया कि, बीच के ओवर्स में 5 फील्डर के साथ अगर आप विकेट ले रहे हैं, रन फ्लो को रोक हे हैं और आसान बाउंड्री नहीं दे रहे हैं तो ये अच्छा है।

नीलामी के बाद अब ऐसी दिखती हैं सभी 12 टीमें, ग्राफिक्स में सभी स्क्वॉड, आइकन प्लेयर्स पर रहेगी नजर

नई दिल्ली। 25 हजार की बेस प्राइज वाले तीन खिलाड़ियों की बोली 1 लाख और उसके ऊपर तक चली गई। 12 टीमों ने कुल 196 खिलाड़ियों और सहयोगी स्टाफ पर 1.2 करोड़ रुपए खर्च किए। और लीजेंड्स लीग क्रिकेट द्वारा आयोजित की जा रही एलएलसीटेन 10 लीग के सभी 12 स्क्वॉड तय हो चुके हैं। हर टीम ने 16 खिलाड़ियों का स्क्वॉड बनाया है। इनमें तीन आइकन प्लेयर, तीन यूपी से बाहर के प्लेयर और 10 खिलाड़ी उत्तर प्रदेश के रखे गए हैं। इन खिलाड़ियों का चयन 29 जनवरी को दिल्ली में हुई नीलामी में किया गया। नीलामी में 12 टीमों के मालिकों ने जमकर पैसा लगाया था।

25 हजार की बेस प्राइज वाले तीन खिलाड़ियों की बोली 1 लाख और उसके ऊपर तक चली गई। 12 टीमों ने कुल 196 खिलाड़ियों और सहयोगी स्टाफपर 1.2 करोड़ रुपए खर्च किए। बोली में लोकेश मीना रहे सबसे महंगे 25 हजार बेस प्राइज वाले बशरत हुसैन वानी को ब्रज वॉरियर्स ने एक लाख रुपये में खरीदा। इतने ही बेस प्राइज के लोकेश मीना को इनवर्टिस सुपर किंग्स द्वारा 1 लाख 12 हजार 500 रुपये में खरीदा गया। इसके अलावा 25 हजार बेस प्राइज वाले धर्मेंद्र कुमार को वेंकटेश्वर लायंस ने 1 लाख 7 हजार रुपये में खरीदा। बोली में लीग कमिश्नर द. अफ्रीका के पूर्व दिग्गज क्रिकेटर जोंटी रोड्स, बीसीसीआई के पूर्व मुख्य चयनकर्ता और तेज गेंदबाज रहे चेतन शर्मा भी मौजूद रहे। सबसे पहले आइकन खिलाड़ियों की लगी थी बोली नीलामी में सबसे पहले आइकन खिलाड़ियों की बोली लगी। सभी आइकन खिलाड़ियों का एक समान 1 लाख 25 हजार रुपये प्राइज था। आइकन खिलाड़ियों को फ्रेंचाइजी के मालिकों ने एक-एक कर स्टेज पर आकर चुना। तीन अलग अलग बॉक्स में आइकन खिलाड़ियों को गेंदबाज, बल्लेबाज और ऑलराउंडर के हिसाब से बांटा गया था। हर फ्रेंचाइजी के मालिक को तीनों बॉक्स से एक-एक आइकन प्लेयर की पर्ची उठानी थी। जिसका नाम आया, वह खिलाड़ी उस टीम में गया। आइकन खिलाड़ी किस टीम में गएकरण अंबाला, सिकंदर भाटी और आशिक अली डे-स्प्रिंग ईगल्स लखनऊ की टीम में गए, जबकि राकेश कहर, रवि बनारस और राजू मुखिया कानपुर चीफ्स टीम में शामिल हुए। बंटी पटेल, संजय कनौजिया और विजय गढ़वाली केरासा लखनऊ पैंथर्स टीम में शामिल हुए। जडेजा हीतेंद्रसिंह, रोहन खराट और योगेश पेनकर बुंदेलखंड ब्लास्टर्स झांसी की टीम में शामिल हो गए। फरमान खान, सरोज प्रमाणिक और प्रदीप पाटिल जीएल बजाज सुपर चौलेंजर्स आगरा टीम में शामिल हुए। दिलीप बिंजवा, एजाज खोखर और राजू पाल्दी को मेरठ इन्वेडर्स टीम ने लिया। विरुभा वाघेला, कृष्णा सातपुते और विवेक शेलार जीएल बजाज सुपरस्ट्राइकर्स नोएडा की टीम में शामिल हुए। लोकेश चीना, जगत सरकार और विकी भोएर इनवर्टिस सुपरकिंग्स बरेली टीम में शामिल हुए, जबकि नदीम धनुरी, जिमी दरबार और अंकित सिंह कल्की को काशी नाइट्स ने अपने साथ जोड़ा। अंकुर सिंह, थॉमस डियास और रोहित शर्मा को वेंकटेश्वर लायंस मुरादाबाद की टीम में शामिल हुए। वहीं, नेक्सट जेन गाजियाबाद टाइगर्स ने मंसूर केएल, निशार मंशुरी और अविनाश राणा को टीम में शामिल किया। धीरज सिंह, कृष्णा गावली और अनुराग एस स्वीटी बृज वॉरियर्स टीम में शामिल हुए।

शीर्ष-3 से तय होगा एलएलसी टेन10 के लिए फाइनल का सफर, इस तरह मिलेगा खिताबी मैच का टिकट

क्वालिफायर, एलिमिनेटर और फाइनल

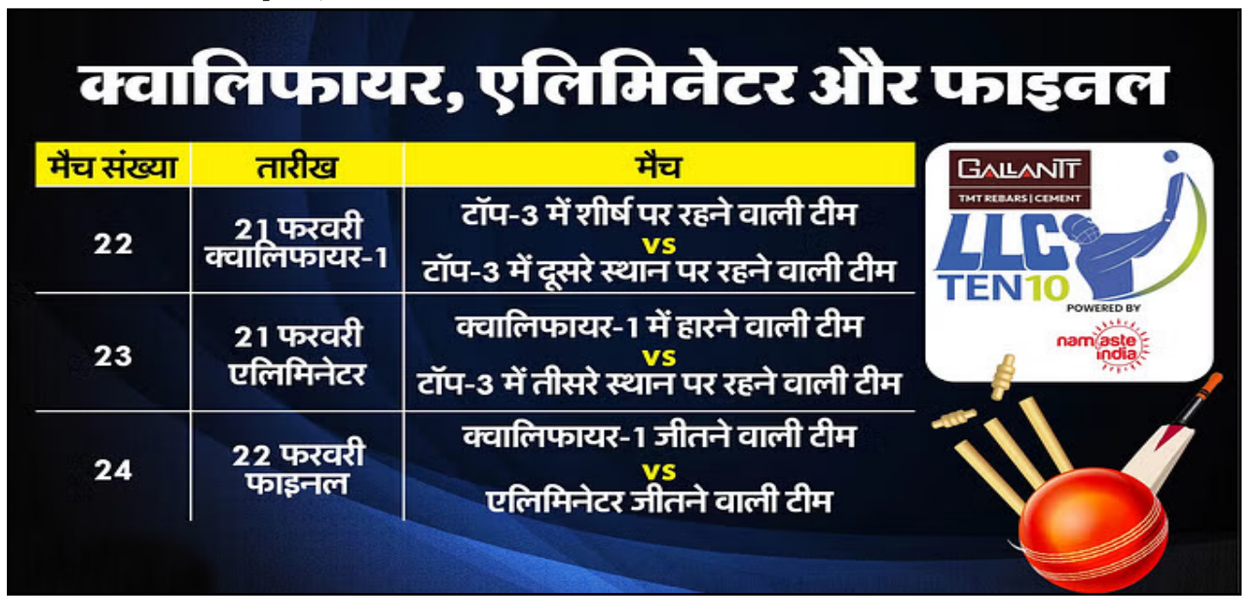

मैच संख्या	तारीख	मैच
22	21 फरवरी क्वालिफायर-1	टॉप-3 में शीर्ष पर रहने वाली टीम vs टॉप-3 में दूसरे स्थान पर रहने वाली टीम
23	21 फरवरी एलिमिनेटर	क्वालिफायर-1 में हारने वाली टीम vs टॉप-3 में तीसरे स्थान पर रहने वाली टीम
24	22 फरवरी फाइनल	क्वालिफायर-1 जीतने वाली टीम vs एलिमिनेटर जीतने वाली टीम

GALLANTT TMT REBARS | CEMENT — LLC TEN10 — POWERED BY namaste india

नई दिल्ली। इस टूर्नामेंट की शुरुआत 13 फरवरी को होगी, जबकि फाइनल मैच 22 फरवरी को खेला जाएगा। एलएलसी टेन10 में कुल मिलाकर 24 मैच खेले जाएंगे। और लीजेंड्स लीग क्रिकेट द्वारा आयोजित की जा रही उत्तर प्रदेश की सबसे बड़ी टेनिस बॉल क्रिकेट लीग एलएलसीटेन 10 लीग का रोमांच चरम पर पहुंच गया है। इस टूर्नामेंट का कार्यक्रम जारी हो चुका है। इस टूर्नामेंट की शुरुआत 13 फरवरी को होगी, जबकि फाइनल मैच 22 फरवरी को खेला जाएगा। एलएलसी टेन10 में कुल मिलाकर 24 मैच खेले जाएंगे। हालांकि, टीमों के लिए खिताबी मैच का टिकट पाना आसान नहीं होगा क्योंकि फाइनल का सफर शीर्ष-3 से तय होगा। इस तरह तय होगा फाइनल का सफर इस लीग चरण में पहले तीन स्थान पर रहने वाली टीमें क्वालिफायर और एलिमिनेटर में खेलेंगी। क्वालिफायर-1 में लीग चरण में पहले और दूसरे स्थान पर रहने वाली टीमें टकराएंगी। यहां जीतने वाली टीम फाइनल में पहुंचेगी। एलिमिनेटर में लीग चरण में तीसरे स्थान पर रहने वाली टीम और क्वालिफायर-1 में हारने वाली टीम फाइनल में पहुंचने के लिए भिड़ेंगी। फाइनल 22 फरवरी को खेला जाएगा। तीन ग्रुप में बांटी गई हैं 12 टीमें इस टूर्नामेंट के लिए 12 टीमों को तीन ग्रुप में बांटा गया है। ग्रुप-1 में झांसी, नोएडा, गाजियाबाद और वाराणसी की टीमें हैं। वहीं, ग्रुप-2 में मेरठ, मोरादाबाद, केरासा लखनऊ और डे स्प्रिंग ईगल्स लखनऊ की टीमें हैं। ग्रुप-3 में मथुरा, कानपुर, आगरा और बरेली की टीमें हैं। ग्रुप स्टेज में कुल 18 मैच खेले जाएंगे। ग्रुप स्टेज से छह टीमें बाहर हो जाएंगी, यानी हर ग्रुप में नीचे रहने वाली दो टीम बाहर हो जाएगी। वहीं, हर ग्रुप से शीर्ष-दो में स्थान बनाने वाली टीमें फिर टॉप-3 के लिए मुकाबला करेंगी। यहां से नॉकआउट राउंड की शुरुआत हो जाएगी। टॉप-3 के लिए तीन मुकाबले खेले जाएंगे और इसमें हारने वाली टीमें टूर्नामेंट से बाहर हो जाएंगी। चार शिफ्ट्स में होंगे मुकाबले मैचों के लिए चार शिफ्ट बनाए गए हैं। कुछ मैच सुबह, तो कुछ मैच दोपहर और शाम या फिर रात में खेले जाएंगे। 13 से 22 फरवरी 2025 तक लखनऊ के के.डी. सिंह बाबू स्टेडियम में खेले जाने वाले इस टूर्नामेंट की तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। सभी टीमें अपने मेंटर्स और खिलाड़ियों के साथ अंतिम चरण की तैयारियों में जुटी हैं। मैदान से लेकर डिजिटल प्लेटफॉर्म तक इस लीग की चर्चा जोरों पर है। क्रिकेट प्रेमी इस शानदार टूर्नामेंट का रोमांच प्रसार भारती स्पोर्ट्स चौनल वेव्स लाइव पर देख सकेंगे। इतना ही नहीं, इस लीग में सितारों का भी जमावड़ा लगेगा।

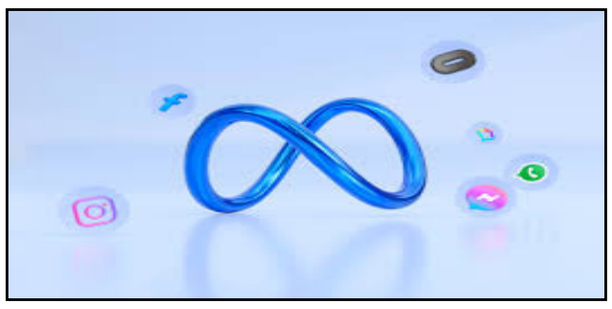

मेटा में जाने वाली है कई लोगों की नौकरी, 10 फरवरी से हो सकती हैं छंटनी

फेसबुक के कर्मचारियों के लिए परेशान करने वाली खबर है। फेसबुक जल्द ही अपने कर्मचारियों की छुट्टी करने वाली है। फेसबुक के मालिक मेटा प्लेटफॉर्म्स ने शुक्रवार को आंतरिक तौर पर अपने कर्मचारियों को जानकारी दी है कि कंपनी में वह अगले सप्ताह छंटनी करने की योजना बना रहा है, जबकि मशीन लर्निंग इंजीनियरों की शीघ्र भर्ती के साथ आगे बढ़ रहा है।मेटा के हेड ऑफ पीपल जैनेल गेल ने इस संबंध में एक पोस्ट लिखा है। इस पोस्ट में लिखा गया कि अमेरिका समेत अधिकतर देशों में स्थानीय समयानुसार सोमवार सुबह 5 बजे से उन कर्मचारियों को नोटिस भेजा जाएगा जिन्हें नौकरी से निकाला जा रहा है। मेटा ने बताया कि जर्मनी, फ्रांस, इटली और नीदरलैंड के कर्मचारियों को ष्स्थानीय नियमों के कारणष् कटौती से छूट मिलेगी। यूरोप, एशिया और अफ्रीका के एक दर्जन से अधिक देशों के कर्मचारियों को 11 फरवरी से 18 फरवरी के बीच नोटिस मिलेगा। इस मामले पर मेटा ने कोई टिप्पणी करने से इनकार कर दिया है। मेटा कंपनी ने बीते महीने पुष्टि की थी कि वो अपने सबसे कम प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों में से पांच फीसदी कर्मचारियों की छंटनी करेगी। हालांकि कंपनी ने ये भी कहा है कि कुछ पदों को भरने की योजना भी है। वहीं मेटा हेड गेल ने अपने पोस्ट में कहा कि पिछली कंपनी-व्यापी छंटनी के विपरीत, मेटा सोमवार को अपने कार्यालय खुले रखने की योजना बना रही थी और निर्णयों पर आगे कोई विवरण प्रदान करने वाला कोई अपडेट जारी नहीं करेगी। शुक्रवार को इंजीनियरिंग के उपाध्यक्ष (विमुद्रीकरण) पेंग फैन द्वारा पोस्ट किए गए एक अलग ज्ञापन में कर्मचारियों से मशीन लर्निंग इंजीनियरों और अन्य ष्व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्णष् इंजीनियरिंग भूमिकाओं के लिए शीघ्र भर्ती प्रक्रिया में सहायता करने के लिए कहा गया। फैन ने उस पोस्ट में कहा कि यह प्रक्रिया 11 फरवरी से 13 मार्च के बीच होगी। ष्हमारे त्वरित नियुक्ति लक्ष्यों को प्राप्त करने तथा 2025 के लिए हमारी कंपनी की प्राथमिकताओं के साथ बेहतर तालमेल बिठाने में आपकी निरंतर सहायता के लिए धन्यवाद।ष

जानें कौन है माया राजेश्वरन ? जिन्होंने 15 साल की उम्र में रच दिया इतिहास, सानिया मिर्जा को मानती हैं रोल मॉडल

माया रामेश्वरन भारतीय टेनिस में बीते कुछ दिनों से एक नाम लगातार सुर्खियों में है। महज 15 साल की उम्र में इस खिलाड़ी ने अपने खेल से सनसनी मचा दी है। अपनी आदर्श सानिया मिर्जा की तरह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना नाम बनाने का सपना देखने वाली माया के सफर की शुरुआत शानदार रही। माया ने मुंबई ओपन 125 के सेमीफाइनल में जगह बनाई। माया राजेश्वरन का स्वप्निल सफर शनिवार को जिल टीचमैन के खिलाफ सीधे सेटों में हार के साथ खत्म हो गया। राजेश्वरन का टूर्नामेंट में सफर प्रेरणादायक रहा है। उन्होंने इटनी की वर्ल्ड नंबर 264 निकोल फोसा ह्यूर्गो को तीन सेट के चुनौतीपूर्ण मैच (6-3, 3-6,6-0) में हराया। इसके बाद उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका की वर्ल्ड नंबर 434 जेसिका फेला को 7-6, 1-6, 6-4 के स्कोर से हराया। इस टूर्नामेंट में वाइल्ड कार्ड एंट्री मिली थी। इस टूर्नामेंट में उन्होंने इस प्रदर्शन के साथ ही उन्होंने डब्ल्यटीए पॉइंट हासिल किया है। वह ऐसा करने वाली भारत की सबसे युवा महिला खिलाड़ी हैं। ये उनके करियर का महज पांचवां ही टूर्नामेंट है। माया का जन्म 12 जून 2009 को तमिलनाडु के कॉयम्बटूर में हुआ। स्कूल से ही आठ साल की उम्र में ही उन्हें पहली बार टेनिस को जानने का मौका मिला। वह स्कूल के बाद एक्टीविटी के तौर पर टेनिस खेलने लगी। इसके बाद उन्होंने भारत के पूर्व नंबर वन खिलाड़ी केजी रमेश के साथ टेनिस ट्रेनिंग शुरू की और फिर प्रो सर्व टेनिस अकेडमी में मनोज कुमार के साथ टेनिस सीखा। माया भारत की दिग्गज खिलाड़ी सानिया मिर्जा और बेलारुस की आर्यना सबलेंका को अपना आदर्श मानती है। उनका खेलने का स्टाइल भी वैसा ही है। वह बेसलाइन पर दबदबा दिखाती हैं और साथ ही नेट पर ही बड़े आत्मविश्वास के साथ खेलती हैं।

ओडिशा सरकार क्रिकेट मैच के दौरान 'फ्लडलाइट' में गड़बड़ी को लेकर ओसीए से स्पष्टीकरण मांगेगीरू मंत्री

कटक । ऐतिहासिक बाराबती स्टेडियम में इंग्लैंड और भारत के बीच दूसरा एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच 'फ्लडलाइट' में खराबी के कारण करीब 30 मिनट तक बाधित रहने को लेकर खेल मंत्री सूर्यवंशी सूरज ने रविवार को कहा कि सरकार ओडिशा क्रिकेट संघ (ओसीए) से स्पष्टीकरण मांगेगी। सूरज इस दौरान मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी और अन्य वरिष्ठ मंत्रियों के साथ स्टेडियम में मौजूद थे। उन्होंने कहा, ''फ्लडलाइट में गड़बड़ी के बारे में ओसीए से स्पष्टीकरण मांगा जाएगा। ओसीए द्वारा सभी सावधानियां बरतने और व्यापक पूर्व व्यवस्था करने के बावजूद यह घटना हुई।'' हालांकि, ओसीए सचिव संजय बेहरा ने कहा कि प्रत्येक फ्लडलाइट टावर को दो जनरेटर से जोड़ा गया था। बेहरा ने संवाददाताओं से कहा, ''जब एक जनरेटर खराब हो गया, तो हमने दूसरा जनरेटर चालू कर दिया लेकिन जनरेटर को हटाने में कुछ समय लगा, क्योंकि खिलाड़ियों का वाहन टावर और दूसरे जनरेटर के बीच में खड़ा था।'' इस बीच, स्टेडियम में मौजूद बाराबती-कटक से कांग्रेस विधायक सोफिया फिरदौस ने फ्लडलाइट में आई गड़बड़ी की निंदा की। उन्होंने कहा, ''आज बाराबती स्टेडियम में जो कुछ हुआ, वह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। इसकी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए।

सरकार ने गठित की खेल विशेषज्ञ सलाहकार समितिय मैरी कॉम, साइना, लिएंडर के नाम शामिल

नयी दिल्ली । सरकार ने खेल मंत्री मनसुख मांडविया की अध्यक्षता में एक समिति गठित की है, जिसके तीन सदस्य ओलंपिक पदक विजेता खिलाड़ी होंगे। यह समिति प्रतिभाओं की पहचान करने और उन्हें निखारने, निष्पक्ष और पारदर्शी चयन सुनिश्चित करने, अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले एथलीटों के प्रदर्शन की निगरानी और कोच का मूल्यांकन करने के बारे में सलाह देगी। सत्रह सदस्यीय खेल विशेषज्ञ सलाहकार समिति की सदस्य प्रसिद्ध मुक्केबाज मैरी कॉम, टेनिस खिलाड़ी लिएंडर पेस और बैडमिंटन खिलाड़ी साइना नेहवाल होंगी, जिन्होंने ओलंपिक पदक जीते हैं। केंद्रीय खेल राज्य मंत्री रक्षा खडसे समिति की उपाध्यक्ष होंगी और खेल सचिवध्संयुक्त सचिव संयोजक होंगे। शनिवार को जारी खेल मंत्रालय के परिपत्र के अनुसार, समिति में सरकारी प्रतिनिधि और विभिन्न खेलों के सेवानिवृत्त प्रतिष्ठित एथलीट शामिल हैं। समिति के उद्देश्यों में प्रतिभाओं की पहचान करना और सब-जूनियर एवं जूनियर स्तर के एथलीटों के विकास के लिए प्रशिक्षण संबंधी सलाह देना, निष्पक्ष और पारदर्शी चयन सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय एथलीटोंध्टीमों के चयन पर नजर रखना शामिल है।

टेनिस स्टार सानिया ने दुबई में खरीदा नया घर

भारत की टेनिस स्टार सानिया मिर्जा कई सालों से दुबई में रह रही हैं। हालांकि, वे भारत भी आती जाती रहती हैं। सानिया का दुबई में पहले से ही एक घर है वहीं उन्होंने दोबारा दुबई में करोड़ों का घर खरीदा है। सानिया ने कर्ली यूट्यूब चौनल पर बताया कि वे कई सालों से टेनिस खेल रही हैं। इस कारण से वे सहूलियत के लिए दुबई में ही रहती हैं। हालांकि, सानिया बीच-बीच में भारत भी आती रहती हैं। सानिया ने अपने दुबई वाले घर का इंटीरियर खुद ही डिजाइन किया है। सानिया के घर का बाहरी हिस्सा सफेद रंक का है। वहीं घर की अंदर की दीवार पर हाथी का प्रोप लगवा रखा है। ये गोल्डन रंक का है। साथ ही इसमें और भी महंगी चीजें लगाई गई हैं। सानिया के लिविंग रूम में बड़ा डायनिंग टेबल है।

वनडे में सर्वाधिक रन बनाने वाले चौथे भारतीय बल्लेबाज बने रोहित शर्मा, राहुल द्रविड़ को पीछे छोड़ा

कटक। इस मैच से पहले रोहित को द्रविड़ को पीछे छोड़ने के लिए 22 रनों की जरूरत थी और वह पांचवें ओवर में साकिब महमूद की गेंद पर छक्का लगाकर इस उपलब्धि पर पहुंचे। रोहित अब इस सूची में चौथे स्थान पर हैं और उनसे आगे सचिन तेंदुलकर, विराट कोहली और सौरव गांगुली हैं।

आर अश्विन का बयान, कहा- भारत के बाद चौंपियंस ट्रॉफी में न्यूजीलैंड सबसे मजबूत टीमों में से एक

महान स्पिनर आर अश्विन ने भारत और न्यूजीलैंड को चौंपियंस ट्रॉफी के लिए सबसे मजबूत टीमें करार देते हुए कहा कि मुख्य खिलाड़ियों के चोटिल होने के बावजूद ऑस्ट्रेलिया को हल्के में नहीं लिया जा सकता है क्योंकि बड़ी प्रतियोगिताओं में यह टीम अपने खेल के शीर्ष पर होती है। आईसीसी का यह प्रमुख टूर्नामेंट 19 फरवरी को पाकिस्तान में शुरू होगा लेकिन भारत अपने सभी मैच हाइब्रिड मॉडल के तहत दुबई में खेलेगा। अश्विन ने अपने 'यूट्यूब चौनल' पर कहा, ''भारत को दुबई में घरेलू माहौल जैसे मैदान पर खेलने का फायदा मिलेगा। भारत का सामना करने वाली टीमों को लगेगा कि वे भारतीय परिस्थितियों में ही खेल रहे हैं। यह निश्चित रूप से अन्य टीमों के लिए एक समस्या है।'' अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में कई वर्षों के अंतराल के बाद त्रिकोणीय श्रृंखला की वापसी हुई और अश्विन का मानना है कि भारतीय टीम को भी चौंपियंस ट्रॉफी की बेहतर तैयारी के लिए इंग्लैंड के खिलाफ द्विपक्षीय श्रृंखला के बजाय त्रिकोणीय टूर्नामेंट में खेलना चाहिए था। भारत के इस पूर्व स्पिनर ने कहा, ''इंग्लैंड के खिलाफ खेलकर क्या चौंपियंस ट्रॉफी के लिए भारत की तैयारी पर्याप्त होगी? क्या हमें त्रिकोणीय श्रृंखला भी खेलनी चाहिए थी? पाकिस्तान, न्यूजीलैंड और दक्षिण अफ्रीका पाकिस्तान की परिस्थितियों में खेल रहे हैं, जिससे उन्हें चौंपियंस ट्रॉफी में मदद मिलेगी।'' उन्होंने कहा, ''भारत ने इस बड़े टूर्नामेंट से पहले सिर्फ इंग्लैंड के खिलाफ खेला है। दुबई में पिछली बार टी20 विश्व कप को लेकर हमारे पास सुखद यादें नहीं है। दुबई में टॉस वास्तव में महत्वपूर्ण हो जाता है। मुझे लगता है कि टॉस जीतना महत्वपूर्ण होगा।'' अश्विन ने कहा कि ट्रेंट बोल्ट और टिम साउदी की गैरमौजूदगी में भी न्यूजीलैंड भारत के लिए मुश्किल चुनौती पेश करेगा। उन्होंने कहा, ''भारत के बाद, न्यूजीलैंड चौंपियंस ट्रॉफी में सबसे मजबूत टीमों में से एक है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक, श्रीमती विजय लक्ष्मी शर्मा द्वारा त्रिपाठी प्रिंटिंग प्रेस 12/29, पुराना किला, कैण्ट रोड, लखनऊ 2261 (उ.प्र.) से मुद्रित कराकर 1372/12 न्यू गुडौरा बेहसा श्हीदपथ लखनऊ 2268 (उ.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक-अनूप सिंह
आरएनआई न० UPHIN/2023/87118 मोबाइल नं. 795289865,983917772 Email- tvnews1979@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा।